नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 312, नई दिल्ली, रविवार 11 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है.. पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है..!!

02 विद्यार्थियों में नशे या किसी लत (Student Addiction) की समस्या शारीरिक...

06 विज्ञापन (Advertisements) क्या है और यह कैसे काम करता है?

08 हिंदी:भारत की आत्मा से विश्व मंच तक- भाषा, संस्कृति,पहचान और वैचारिक स्वतंत्रता

दिल्ली में बेहतर होगी लास्ट माइल कनेक्टिविटी, सरकार 3330 इलेक्ट्रिक बसें खरीदने की कर रही तैयारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मज़बूत करने के लिए ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने 3,330 और इलेक्ट्रिक बसें खरीदने का फैसला किया है। इसमें 12-मीटर लंबी ई-बसें, 9-मीटर लंबी मिडी बसें और 7-मीटर लंबी मिनी-बसें शामिल हैं। इससे संकरी गलियों में भी बस सर्विस मिल पाएगी। लक्ष्य है कि इस साल के आखिर तक दिल्ली में सात हज़ार से ज्यादा इलेक्ट्रिक बसें चलें।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली में प्रदूषण रोकने और पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को मजबूत करने के लिए काम किया जा रहा है। इसके लिए, केंद्र सरकार की एजेंसी कन्वर्जेंस एनर्जी सर्विसेज़ लिमिटेड (CESL) के साथ हाल ही में हुई एक मीटिंग में, PM ई-ड्राइव स्कीम (फेज-2) के तहत दिल्ली के लिए बसों का कोटा बढ़ाने का फैसला किया गया।

ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने CESL को 500 सात-मीटर लंबी बसें, 2,330 नौ-मीटर लंबी बसें और 500 बारह-मीटर लंबी बसें खरीदने का प्रस्ताव भेजा है। ये सभी लो-फ्लोर AC बसें होंगी। मिनी-बसें संकरी सड़कों पर लास्ट-माइल कनेक्टिविटी देंगी। मिडी बसें छोटी सड़कों पर और फीडर सर्विस के तौर पर चलेंगी, और 12-मीटर बसें मुख्य रूटों पर चलेंगी।

केंद्र सरकार से इसे सब्सिडी मॉडल में शामिल करने का अनुरोध किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर सब्सिडी में कोई तकनीकी दिक्कत आती है, तो दिल्ली सरकार खुद खर्च उठाने के लिए तैयार है।

दिल्ली में बसों की स्थिति

कुल बसें: 5,336

इनमें से, EV बसें: 3,535 (1,162 9-मीटर मिडी बसें, 2,273 12-मीटर बसें, और 100 फीडर बसें) - मार्च तक 5,000 से ज्यादा EV बसें चलाने का लक्ष्य।

इस साल के आखिर तक EV बसों की संख्या सात हज़ार तक बढ़ाने का लक्ष्य।

PM ई-ड्राइव के फेज 1 में 2800 बसें और फेज़ 2 में 3330 बसें आने के बाद, ई-बसों की संख्या 13,760 हो जाएगी।

पीएम ई-ड्राइव योजना

प्रधान मंत्री की ई-ड्राइव योजना भारत सरकार के भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा अक्टूबर 2024 से मार्च 2026 की अवधि के लिए ₹10,900 करोड़ के बजट के साथ शुरू की गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, ई-बसों और ई-ट्रकों की खरीद के लिए वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना है।

CESL भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के तहत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। यह मुख्य रूप से इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों को बढ़ावा देने के लिए काम करता है, जैसे कि ई-बसों की खरीद के लिए बड़े टेंडर जारी करना और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करना।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

अपने बच्चों को 'प्रिज़र्वेटिव-युक्त ज़हर' खिलाओ, फिर अस्पताल में 'VIP इलाज' का मज़ा लो!

शुरुआती 'विषाक्त खुराक': संरक्षकों का अंधाधुंध 'डोज़', नियामकों की 'नींद' और व्यापारियों का लालच!

संजय कुमार बाठला, मुख्य संपादक, स्वतंत्र पत्रकार और सामाजिक मुद्दों के विश्लेषक

क्या आप जानते हैं कि आप खुद अपने बच्चों को धीमा ज़हर दे रहे हैं? बाज़ार के 'स्वाद-सम्राट' खाद्य उत्पादों में FSSAI की अनुमेय सीमा से 10 गुना ज़्यादा संरक्षक (प्रिज़र्वेटिव्स) भर रहे हैं सोडियम बेंज़ोएट, पोटैशियम सॉर्बेट जैसी 'मित्रतापूर्ण' चीज़ें जो वैज्ञानिक रूप से कैंसरकारी यौगिकों में बदल जाती हैं!

* नियामक संस्थाएँ? वे तो 'निरीक्षण' के नाम पर चाय-पानी पी रही हैं।"

* लेबलिंग? 'छोटे फ़ॉन्ट' में छिपा राज़,

* उपभोक्ता अंधे—परिणामः हार्मोनल असंतुलन, अंग क्षति, कैंसर का 'वेलकम गिफ्ट'!

* व्यापारी हँसते हैं —लाभ कमाओ, बीमारी बेचो।

कौन रोकेगा इस 'खाद्य - महाकाव्य' को?

बच्चों के GI कैंसर: 'दुर्लभ' से 'ट्रेंडिंग हिट' बन गया — व्यंग्यपूर्ण आँकड़े!

ये कैंसर (कोलोरेक्टल, इसोफेगल, पेट, पैंक्रियाज) बच्चों में पहले 'मिथक' थे—10 लाख में 1! लेकिन अब अमेरिका (1999–2020) चिल्ला रहाः

* 10–14 वर्षः 500% 'बूम'!

* 15–19 वर्षः 333% 'सुपरहिट'!

* 20–24 वर्षः 185% 'वायरल'!

भारत में? आक्रामक, लेट-स्टेज - क्योंकि हमारी 'प्रोग्रेस' है

UPFsः चिप्स, नूडल्स, सोडा।

शोध?

1. मीठे पेय कैंसर दोगुना करते हैं,
2. सूजन - मोटापा फैलाते।
3. बच्चे निर्दोष, हम 'सुपर-पैरेंट्स' दोषी!
4. 'स्वाद का जाल'ः अल्ट्रा-प्रोसेस्ड 'हिटलिस्ट' और उनके 'गुप्त हथियार'!
5. स्नैक्सः क्रंच के साथ कैंसर।
6. नूडल्सः 2 मिनट ज़हर।
7. सीरियल्सः 'हेल्दी' चीनी-बम!
8. कोल्ड ड्रिंक्सः 'कूल' कैंसर कॉकटेल।
9. भरे पड़े शुगर, प्रिज़र्वेटिव्स— आंतें बर्बाद, कैंसर की 'फाउंडेशन'!
10. नियामक 'ड्रामा'ः लेबल झूठ, अधिकारी 'निष्क्रिय'!
11. अपर्याप्त लेबलिंग, कमजोर क्रियान्वयन—व्यापारी 'राजा', जनता 'गुलाम'।
12. पेडियाट्रिक वार्ड के आँसू? 'बिज़नेस कॉस्ट'!

समापन संदेशः जागो, बहिष्कार करो — नहीं तो कल पछतावा 'अनंत प्रिज़र्वेटिव' बनेगा!

2025 शोध चेतातेः

स्क्रीनिंग, आहार बदलो।

बच्चे आकर्षित होते हैं — दोष हमारा लालच।

आज से:

1. ताज़ा घरेलू भोजन।
2. फल-सब्ज़ी प्रधान।
3. प्रोसेस्ड 'नो एंट्री'।

जनहित अपील:

FSSAI, सरकार—कार्रवाई करो,

वरना जनता आरटीआई, जन आंदोलन से जगाएगी!

मासूमों की रक्षा नैतिक कर्तव्य है। व्यंग्य हँसाता है, लेकिन सच्चाई काटती है — बदलो आदतें, बचाओ भविष्य। कल बहुत देर हो जाएगी!

वजीरपुर फ्लाईओवर पर हादसों का सिलसिला जारी, पीडब्ल्यूडी को रेलिंग बढ़ाने का निर्देश

नई दिल्ली। वजीरपुर फ्लाईओवर से गाड़ियों के गिरने की बढ़ती घटनाओं ने ट्रैफिक पुलिस की चिंता बढ़ा दी है। इस हफ़्ते ऐसी दो घटनाओं के बाद, ट्रैफिक पुलिस सतर्क हो गई है और उसने PWD (लोक निर्माण विभाग) को पत्र लिखकर फ्लाईओवर की रेलिंग की ऊंचाई बढ़ाने की सलाह दी है। बढ़ते हादसों की वजह फ्लाईओवर के रैंप पर तेज़ मोड़ और दोनों तरफ की रेलिंग की कम ऊंचाई है। पिछले एक साल में आधे दर्जन से ज़्यादा हादसे हो चुके हैं। ज़्यादातर पीड़ित दोपहिया वाहन चालक हैं। एक हफ्ते के अंदर इस फ्लाईओवर से लोगों के गिरने की दो घटनाएं सामने आई हैं। 4 जनवरी को, सौरभ नाम का एक युवक स्कूटर चलाते हुए फ्लाईओवर से गिर गया और उसकी मौत हो गई। उसके साथ बैठी युवती घायल हो गई। बताया जा रहा है कि युवक एक अज्ञात वाहन से टक्कर लगने के बाद फ्लाईओवर से गिर गया, जबकि युवती पूरी तरह से गिरने से बच गई। उसे गंभीर चोटें आईं लेकिन वह बच गई। दो दिन बाद, मंगलवार रात को, रितिक नाम का एक मोटरसाइकिल सवार फ्लाईओवर से गिर गया। इस हादसे में रितिक गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस का कहना है कि वह तेज़ रफ़्तार में था और मोड़ पर मोटरसाइकिल फिसल गई। इससे पहले, पिछले साल फ्लाईओवर से दोपहिया वाहन चालकों के गिरने की चार घटनाएं हो चुकी थीं। बढ़ते हादसों के बाद, फ्लाईओवर के डिज़ाइन पर सवाल उठ रहे हैं। फ्लाईओवर पर तेज मोड़ों के कारण ड्राइवर अक्सर नियंत्रण खो देते हैं। जब ड्राइवर कोहाट एन्क्लेव से रिंग रोड ब्रिटानिया चौक/पंजाबी बाग की ओर जाते समय वज़ीरपुर फ्लाईओवर से नीचे उतरते हैं, तो कई ड्राइवर मोड़ पर नियंत्रण खो देते हैं। चूंकि फ्लाईओवर के मोड़ पर रेलिंग सिर्फ़ दो से तीन फ़ीट ऊंची है, इसलिए गाड़ियां और उनके ड्राइवर फ्लाईओवर से नीचे गिर जाते हैं। फ्लाईओवर के नीचे एक बस डिपो है, इसलिए पीड़ित डिपो परिसर में गिरते हैं। बस डिपो के कर्मचारियों का कहना है कि फ्लाईओवर से डिपो परिसर में अनियंत्रित गाड़ियों और ड्राइवरों के गिरने से कर्मचारियों की जान को खतरा रहता है। कई बार कर्मचारी बाल-बाल बचे हैं। डिपो कर्मचारियों ने इस समस्या का स्थायी समाधान करने की मांग की है। अशोक विहार ट्रैफिक जोन के एक अधिकारी ने बताया कि PWD (लोक निर्माण विभाग) को फ्लाईओवर की रेलिंग की ऊंचाई बढ़ाने के लिए पत्र लिखा गया है। रेलिंग की ऊंचाई बढ़ाने से पैदल चलने वालों के फ्लाईओवर से गिरने की संभावना कम हो जाएगी। दिल्ली में वज़ीरपुर फ्लाईओवर समेत कई फ्लाईओवरों की रेलिंग की ऊंचाई कम है।

नशे में डूबा जश्न और होश में डूबे मातम

[सड़क ने कुछ नहीं छीना, हमने सब दे दिया, यह सड़क दुर्घटना नहीं, संस्कारों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट है]

घड़ी में अभी पाँच बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। वह खामोश, धोखेबाज़ वक्त—रात और सुबह के बीच का—जब शरीर थक चुका होता है, दिमाग़ सुन्न पड़ जाता है और इंसान खुद को सबसे ज़्यादा अजेय समझ बैठता है। तभी अचानक एक तेज़ धमाका हुआ। सड़क पर नहीं, सीधे समाज की चेतना पर। वह टक्कर सिर्फ़ वाहन और वाहन के बीच नहीं थी; यह ज़िंदगी और लापरवाही के बीच हुई निर्मम भिड़ंत थी। इंदौर शहर में 09 जनवरी की वह सुबह तीन परिवारों के लिए कभी खत्म न होने वाली रात बन गई। तीन ज़िंदगियाँ वहीं थम गईं, और एक ज़िंदगी आज भी अस्पताल के बिस्तर पर मौत से जूझ रही है।

पुलिस की बताई कहानी इस त्रासदी को और भी निर्मम बना देती है। दो युवक और दो युवतियाँ, जिनमें से एक का जन्मदिन था, रात भर जश्न में डूबे रहे। शराब की बोतलें, डिस्पोज़ेबल गिलास और देर रात तक चलने वाला उत्सव—सब कुछ उस कार के भीतर मौजूद था, जो अलसुबह तेज़ रफ़्तार में आगे चल रहे ट्रक में जा घुसी। यह महज़ एक "गलत मोड़" नहीं था; यह नशे, थकान और गैर-जिम्मेदारी का निर्मम परिणाम था। जब नशा दिमाग़ पर हावी हो जाता है, तब ब्रेक नहीं, विवेक फेल होता है। और उसी फेल विवेक की कीमत इंसान को जान देकर चुकानी पड़ती है।

हम ऐसी घटनाओं को अक्सर "दुर्घटना" कहकर खुद को तसल्ली दे लेते हैं। यह शब्द हमें बच निकलने का भ्रम देता है। लेकिन सच्चाई यह है कि यह कोई अचानक टूटी हुई किस्मत नहीं थी, बल्कि धीरे-धीरे बुनी गई लापरवाही की चादर थी। देर रात तक शराब पीना, नींद की अनदेखी करना, तेज़ रफ़्तार को रोमांच समझना, और यह मान लेना कि "कुछ नहीं होगा"—ये सभी सोच-समझकर लिए गए फैसले थे। और फैसलों के परिणाम होते हैं। यहाँ परिणाम इतना भयावह था कि तीन सांसें हमेशा के लिए थम गईं।

आज का समाज युवाओं की आज़ादी पर गर्व करता है, लेकिन जिम्मेदारी की बात आते ही चुप हो जाता है। जश्न मनाना गुनाह नहीं है; जन्मदिन खुशी का मौका होता है। लेकिन जब खुशी विवेक को कुचल देती है, तब वह उत्सव नहीं, बल्कि आत्मघात बन जाता है। शराब पीकर गाड़ी चलाना सिर्फ़ कानून तोड़ना नहीं है; यह दूसरों की जान को दांव पर लगाना है। और यह सोचना कि "मैं संभाल लूंगा" नशे का सबसे बड़ा झूठ है।

तेज़ रफ़्तार को आज भी ताक़त और स्टेटस का प्रतीक माना जाता है। खाली सड़कें युवाओं को चुनौती देती हैं, और नशे में डूबा दिमाग़ उस चुनौती को स्वीकार कर लेता है। लेकिन सड़क किसी को माफ़ नहीं करती। खड़ा ट्रक कोई अचानक उभरी बाधा नहीं था—वह वहीं था, साफ़ और अडिग। जो नहीं था, वह था नियंत्रण, सजगता और समझ। नशा सिर्फ़ आँखों की रोशनी नहीं छीनता; वह निर्णय लेने की क्षमता भी तबाह कर देता है। यही वजह है कि ऐसे हादसों में पछतावे का मौका तक नहीं मिलता।

इस त्रासदी का सबसे दर्दनाक पहलू यह है कि इसकी कीमत सिर्फ़ उन चार लोगों ने नहीं चुकाई। इसकी कीमत उनके माता-पिता चुका रहे हैं, जिनके सपने ताबूत में बंद हो गए। इसकी कीमत वह घर चुका रहा है, जहाँ अब जन्मदिन की तारीख़ मातम की तारीख़ बन गई है। एक मां का सवाल—"मैंने उसे रोका क्यों नहीं?" और एक पिता की चुप्पी—"मैंने उसे समझाया क्यों नहीं?"—इन सवालों का कोई जवाब नहीं होता, बस उम्र भर का बोझ होता है।

यहीं परिवारों की भूमिका सबसे अहम हो जाती है। बुराइयों से बचाने में परिवार ही पहली जिम्मेदारी निभाता है। अगर घर में खुलकर संवाद हो, अगर बच्चों को यह समझाया जाए कि नशा आधुनिकता नहीं, बल्कि विनाश है, तो शायद कई फैसले बदल सकते हैं। सिर्फ़ पढ़ाई और करियर पर ध्यान देना काफी नहीं; जीवन मूल्यों की शिक्षा उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है। माता-पिता का व्यवहार, उनकी आदतें और उनका दृष्टिकोण बच्चों की सोच की नींव बनता है। अगर घर में ही नियमों को हल्के में लिया जाएगा, तो बाहर उनसे पालन की उम्मीद खोखली रह जाएगी।

दोस्तों की जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी और अहम होती है जितनी परिवार की होती है। सच्ची दोस्ती वही है, जो सबसे मुश्किल और गलत समय में भी हिम्मत करके रोक सके। नशे में गाड़ी चलाने देना दोस्ती नहीं, अपराध में साझेदारी है। अक्सर समूह में यह सोच बन जाती है कि कोई और रोक लेगा, कोई और संभाल लेगा। इसी "कोई और" के भरोसे कई ज़िंदगियाँ हमेशा के लिए खतरे में डाल दी जाती हैं। अगर उस रात किसी ने चाबी छीन ली होती, किसी ने सख़्ती से मना किया होता, तो शायद आज तीन घर सूने न होते और तीन परिवारों की खुशियाँ अभी भी जिन्दा होतीं।

प्रशासन और कानून की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। शराब पीकर ड्राइविंग पर सख़्त कार्रवाई, तेज़ रफ़्तार पर सतत निगरानी और सड़कों की बेहतर व्यवस्था ज़रूरी हैं। लेकिन यह मान लेना कि सिर्फ़ कानून ही सब कुछ ठीक कर देगा, सबसे बड़ी भूल है। कानून डर पैदा कर सकता है, लेकिन संस्कार नहीं। संस्कार घर और समाज से आते हैं। जब तक जिम्मेदारी को सहज, गंभीर और क़ानूनी कूल के ऊपर रखा नहीं जाएगा, तब तक नियमों की अनदेखी शान और साहस का प्रतीक बनी रहेगी।

यह घटना हमें आईना दिखाती है—कड़वा, सच्चा और बेहद ज़रूरी आईना। यह आईना हमें झकझोर कर पूछता है कि हम किस तरह का समाज बना रहे हैं, जहाँ जश्न और खुशी अब ज़िंदगी से महंगी हो गई हैं। जन्मदिन हर साल आता है, पार्टी दोबारा मनाई जा सकती है, लेकिन ज़िंदगी केवल एक बार मिलती है, और एक बार चली गई तो वह कभी लौटकर नहीं आती। नशे में लिया गया एक क्षणिक, अनियंत्रित फैसला पूरे परिवार की उम्र भर की सज़ा और गहरे दर्द का कारण बन जाता है।

09 जनवरी की यह सुबह भूलने के लिए नहीं है। यह सिर्फ़ घटना नहीं, बल्कि चेतावनी है—एक कड़वी चेतावनी, जो कहती है कि आख़िरी नहीं, शायद अगली भी आए। अगर आज भी हम नहीं चेते, अगर आज भी परिवार, दोस्त और समाज अपनी ज़िम्मेदारी और भूमिका को गंभीरता से नहीं समझे, तो अगली सुबह किसी और सड़क पर, किसी और तेज़ रफ़्तार ट्रक के सामने, किसी और घर की रौशनी हमेशा के लिए बुझ सकती है। सवाल यह नहीं है कि हादसा कब होगा; सवाल यह है कि क्या हम उससे पहले बदलने का साहस जुटा पाएँगे, और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाएँगे।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html I tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

CBI केस ने ऑपरेशन चक्र V के दौरान SIM फ्रॉड में टेलीकॉम इनसाइडर की भूमिका उजागर की

पिंकी कुंडू

टेलीकॉम मैनेजर / TSP अधिकारी की भूमिका

- विश्वास का पदः एक टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर (TSP) के एरिया सेल्स मैनेजर के रूप में अधिकारी KYC मानकों का पालन सुनिश्चित करने और ग्राहक पहचान सत्यापन की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था।
- कर्तव्य का उल्लंघनः सिस्टम की रक्षा करने के बजाय उसने धोखाधड़ी वाले SIM कार्ड्स का बड़े पैमाने पर वितरण कराया।

* सक्रिय मिलीभगतः उसने नकली व्यक्तियों की व्यवस्था की, उन्हें M/s Lord Mahavira Services India Pvt. Ltd. के कर्मचारी के रूप में दिखाया और फर्जी दस्तावेज जमा किए।

कार्यप्रणाली (Modus Operandi)

* फर्जी KYCः निर्दोष नागरिकों के आधार कार्ड का दुरुपयोग कर सब्सक्राइबर सत्यापन पूरा किया गया।

* कॉर्पोरेट भेषः व्यक्तियों को एक वैध कंपनी के कर्मचारी के रूप में झूठा दिखाया गया ताकि जांच से बचा जा सके।

* दस्तावेज़ कब्जाः आधार प्रतियों की बरामदगी यह दर्शाती है कि धोखाधड़ी के लिए जानबूझकर तैयारी और मिलीभगत की गई थी।

* थोक वितरणः एक साथ कई SIM सक्रिय किए गए, जिससे साइबर अपराधियों के लिए तैयार बुनियादी ढांचा बन गया।

साइबर अपराध पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव

* फ़िशिंग ऑपरेशनः धोखाधड़ी वाले SIM फ़िशिंग घोटालों, प्रतिरूपण कॉल्स और वित्तीय धोखाधड़ी की रीढ़ बन गए।

* गुमनामी की ढालः फर्जी KYC ने अपराधियों को बिना पकड़े जाने के डर के काम करने की सुविधा दी, जिससे कानून प्रवर्तन की कठिनाई बढ़ी

* नुकसान का पैमानाः थोक वितरण ने सैकड़ों या हजारों नंबरों को एक साथ दुरुपयोग करने की अनुमति दी, जिससे घोटालों की पहुँच बढ़ी।

कानूनी और नैतिक आयाम

* कानून का उल्लंघनः TRAI और DoT के सख्त KYC अनुपालन निर्देशों का उल्लंघन।

* आपराधिक जिम्मेदारीः अधिकारी की भूमिका उसे संगठित साइबर धोखाधड़ी में सहभागी बनाती है, जिससे IPC, IT Act और आधार दुरुपयोग प्रावधानों के तहत आरोप लग सकते हैं।

* नैतिक पतनः डिजिटल पहचान का संरक्षक धोखाधड़ी का सक्षमकर्ता बन गया, जिससे टेलीकॉम सिस्टम में जनता का विश्वास कमजोर हुआ।

* कॉर्पोरेट जवाबदेहीः यह मामला टेलीकॉम ऑपरेटरों के भीतर आंतरिक निगरानी और अनुपालन संस्कृति पर सवाल उठाता है।

व्यापक चिंताएँ

* प्रणालीगत कमजोरीः इनसाइडर मिलीभगत KYC ढांचे की अखंडता को कमजोर करती है, जिससे साइबर अपराध के लिए रास्ते खुलते हैं।

* नागरिक जोखिमः निर्दोष लोगों के आधार विवरण का दुरुपयोग होता है, जिससे उन्हें पहचान की चोरी और कानूनी जटिलताओं का सामना करना पड़ता है।

* राष्ट्रीय सुरक्षाः धोखाधड़ी वाले SIM न केवल वित्तीय धोखाधड़ी बल्कि उग्रवादी या राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में भी मदद कर सकते हैं।

* विश्वास की कमीः हर ऐसा मामला डिजिटल बुनियादी ढांचे और टेलीकॉम प्रशासन में सार्वजनिक विश्वास को कमजोर करता है।

आगे का रास्ता

* कड़ी जवाबदेहीः टेलीकॉम ऑपरेटरों को कर्मचारी कदाचार के लिए शून्य सहिष्णुता लागू करनी चाहिए, तत्काल निलंबन और अभियोजन के साथ।

* उन्नत सत्यापनः बहु-स्तरीय KYC जांच (बायोमेट्रिक + AI आधारित विसंगति पहचान) को अनिवार्य किया जाना चाहिए।

* ऑडिट ट्रेल्सः थोक SIM वितरण के नियमित ऑडिट और कॉर्पोरेट कनेक्शनों का यादृच्छिक सत्यापन अनियमितताओं को जल्दी उजागर कर सकता है।

* नागरिक जागरूकताः लोगों को अपने आधार के दुरुपयोग के प्रति सतर्क रहना चाहिए और संदिग्ध टेलीकॉम गतिविधियों की रिपोर्ट करनी चाहिए।

* नीति सुदृढ़ीकरणः अंदरूनी मिलीभगत को रोकने के लिए सख्त दंड और अनुपालन निगरानी तंत्र की आवश्यकता है।

* प्रौद्योगिकी अपनानाः AI आधारित धोखाधड़ी पहचान और रीयल-टाइम अलर्ट संदिग्ध थोक सक्रियण को चिन्हित करने में मदद कर सकते हैं।

मुख्य संदेश यह मामला एक चेतावनी हैः जब महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के अंदरूनी लोग धोखेबाजों के साथ मिल जाते हैं, तो नुकसान कई गुना बढ़ जाता है। यह भारत की डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए प्रणालीगत सुधारों, मजबूत निगरानी और नागरिक सतर्कता की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

विद्यार्थियों में नशे या किसी लत (Student Addiction) की समस्या शारीरिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास में बड़ी बाधा है।

पूजा ठाकुर
(मेंटल हेल्थ एंड स्कूल काउंसलर) POOJA
(Mental Health & School Counsellor)

विद्यार्थियों में नशे या किसी लत (Student Addiction) की समस्या शारीरिक, मानसिक और शैक्षणिक विकास में बड़ी बाधा है।

आज के समय में यह मुख्य रूप से दो रूपों में देखी जाती है: डिजिटल लत और नशीले पदार्थों की लत।

1. डिजिटल और सोशल मीडिया की लत यह सबसे आम समस्या है। गेमिंग, रील्स और सोशल मीडिया के कारण छात्रों का ध्यान केंद्रित नहीं हो पाता।

* **प्रभाव: नींद** की कमी, आंखों की कमजोरी और एकाग्रता (Focus) में कमी।

* **समाधान:** स्क्रीन टाइम फिक्स करें, टाईम मैनेजमेंट का उपयोग करके दिनचर्या अनुसार जीवन की गतिविधियां करें।

2. नशीले पदार्थों की लत (Substance Abuse) अक्सर तनाव, दोस्तों के दबाव (Peer Pressure) या जिज्ञासा के कारण विद्यार्थी सिगरेट, शराब या ड्रग्स की ओर बढ़ जाते हैं।

* **प्रभाव:** याददाश्त कमजोर होना, आक्रामक व्यवहार और व्यक्तिगत समस्या, करियर का पतन।

* **समाधान:** माता-पिता यह किसी भरोसेमंद व्यक्ति के साथ के साथ खुला संवाद रखें। यदि समस्या गंभीर है, तो प्रोफेशनल काउंसलर की मदद ले।

3. पढ़ाई और प्रदर्शन का दबाव परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए कई विद्यार्थी स्मोकिंग, शराब या नींद भगाने वाली गोलियों या सप्लीमेंट्स का सहारा लेते हैं, जो बाद में लत बन जाती है।

* **बचाव के उपाय:**

* हॉबी विकसित करें: खेल, संगीत या पेंटिंग जैसी गतिविधियों में समय बिताएं।

* **काउंसलिंग:** स्कूलों, कॉलेज जैसे संस्थानों द्वारा सुझाई गई मानसिक स्वास्थ्य परामर्श (Counseling) की मदद लें।

* **जागरूकता:** सरकार के 'नशा मुक्त भारत अभियान' से जुड़ें और नशीले पदार्थों के दुष्परिणामों को समझें।

* **लाइफस्टाइल बदले**

1. नशा छोड़ने के लिए आपको मानसिक ही नहीं शारीरिक तौर पर भी तैयार होना होगा।

2. नशा छोड़ने की प्रक्रिया के दौरान अपनी फिजिकल हेल्थ का ख्याल रखें।

3. संतुलित डाइट लें, रात में अच्छी नींद लें और एक्सरसाइज को रुटीन में शामिल करें।

यदि आप या आपके आसपास कोई व्यक्ति, विद्यार्थी इस समस्या से जूझ रहा है, तो बिना डरे किसी विशेषज्ञ, प्रोफेशनल काउंसलर से बात करें।

info@counsellingwali.com & Toll-Free Number (9716739398) पर संपर्क करें।

हार्ट स्टेंट क्या है और कब बनता है यह जीवनरक्षक सपोर्ट?

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में दिल की बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में जब हृदय की धमनियों में रुकावट जानलेवा बनने लगे, तब डॉक्टर जिस जीवनरक्षक तकनीक का सहारा लेते हैं—वह है स्टेंट (Stent)। लेकिन स्टेंट केवल एक "प्रोसीजर" नहीं, बल्कि लाइफस्टाइल का टर्निंग पॉइंट है।

स्टेंट क्या है? स्टेंट एक छोटी धातु/दवा-लेपित जालीदार ट्यूब होती है, जिसे दिल की बंद या संकरी धमनी में डाला जाता है ताकि रक्त का प्रवाह सामान्य हो सके। इसे आमतौर पर एंजियोप्लास्टी प्रक्रिया के दौरान लगाया जाता है।

कब स्टेंट की ज़रूरत पड़ती है?

1. जब कोरोनरी आर्टरी में 70% से अधिक ब्लॉकेज हो
2. सीने में तेज दर्द (एंजाइना) बार-बार हो
3. हार्ट अटैक के समय इमरजेंसी में
4. दवाओं से आराम न मिल रहा हो
5. ECG/एंजियोग्राफी में गंभीर रुकावट दिखे

समय पर स्टेंट न लगे तो दिल की मांसपेशी को स्थायी नुकसान हो सकता है।

स्टेंट कैसे काम करता है?

1. कैथेटर के जरिए स्टेंट को ब्लॉकेज वाली जगह तक पहुँचाया जाता है
2. वहाँ बलून फुलाकर धमनी खोली जाती है
3. स्टेंट वहीं फैलकर धमनी को खुला रखता है
4. दवा-लेपित स्टेंट (DES) दुबारा ब्लॉकेज के खतरे को कम करते हैं

परिणामः दिल तक ऑक्सीजन-युक्त रक्त की आपूर्ति बहाल।

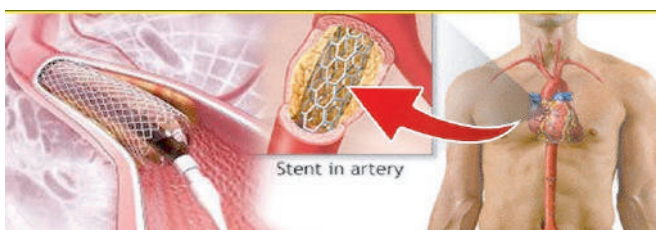

स्टेंट के बाद क्या करें (Do's)

1. डॉक्टर द्वारा दी गई ब्लड थिनर दवाएँ नियमित लें
2. नमक, शक्कर और तले भोजन सीमित करें
3. रोज़ हल्की वॉक (डॉक्टर की सलाह से)
4. BP, शुगर, कोलेस्ट्रॉल की नियमित जाँच
5. पर्याप्त नींद और तनाव प्रबंधन

स्टेंट के बाद क्या न करें (Don'ts)

1. बिना सलाह दवा बंद न करें
2. धूम्रपान और शराब से दूरी
3. अचानक भारी व्यायाम
4. बार-बार फास्ट फूड/बेकरी आइटम
5. "स्टेंट लग गया, अब सब ठीक"—यह सोच

आयुर्वेदिक दृष्टिः स्टेंट के बाद कैसे रखें दिल स्वस्थ? - आयुर्वेद स्टेंट का विकल्प नहीं, बल्कि रिकवरी और रोकथाम का सहायक विज्ञान है।

सहायक आयुर्वेदिक सुझावः

1. अर्जुन छालः हृदय-बलवर्धक (डॉक्टर की अनुमति से)
2. लहसुन (मध्यम मात्रा): रक्त प्रवाह में सहायक
3. त्रिफलाः पाचन और कोलेस्ट्रॉल संतुलन
4. प्राणायाम (अनुलोम-विलोम): तनाव घटाने में सहायक

श्लोक (भावार्थ): हृदय स्वास्थ्य के लिए शुद्ध आहार, शांत मन और नियमित दिनचर्या आवश्यक है।

ध्यान दें: स्टेंट के बाद कोई भी आयुर्वेदिक औषधि कार्डियोलॉजिस्ट की अनुमति से ही लें।

Rare लेकिन True Facts

1. स्टेंट बीमारी को ठीक नहीं, ब्लॉकेज को खोलता है—बीमारी जीवनशैली से ठीक होती है
2. स्टेंट के बाद दवा बंद करना री-थ्रॉम्बोसिस का बड़ा कारण है
3. तनाव और नींद की कमी से स्टेंट के बावजूद रिस्क बढ़ सकता है
4. आजकल के ड्रग-एल्यूटिंग स्टेंट 10–15 साल तक प्रभावी रह सकते हैं
5. सही जीवनशैली से दूसरी धमनियों में ब्लॉकेज रोका जा सकता है

निष्कर्ष स्टेंट एक जीवनरक्षक हस्तक्षेप है, लेकिन असली इलाज है — अनुशासित जीवनशैली। दवाएँ, आहार, व्यायाम और मानसिक शांति — इन चार स्तंभों पर ही स्टेंट के बाद का सुरक्षित भविष्य टिका है।

पपीते के बीज: वैज्ञानिक रूप से सिद्ध स्वास्थ्य लाभ

1. बैक्टीरिया से लड़ने में सहायक

पपीते के बीज कई हानिकारक बैक्टीरिया जैसे E. coli और Salmonella को रोक सकते हैं।

2. आंतों के परजीवियों को निकालना

बीज में कारपाइन जैसे यौगिक आंतों के कीड़ों/परजीवियों को कम कर सकते हैं।

3. शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट

इन बीजों में मुक्त कणों को निष्क्रिय करने वाले एंटीऑक्सीडेंट होते हैं।

4. पाचन में मदद

पपैन जैसे एंज़ाइम प्रोटीन पचन में सहायता करते हैं और सूजन को कम कर सकते हैं।

5. सूजन घटाने वाले गुण

बीज में ऐसे तत्व होते हैं जो शरीर में सूजन को नियंत्रित कर सकते हैं।

6. यकृत (लिवर) की रक्षा

कुछ अध्ययनों में पपीता के बीज का अर्क जिगर को विषाक्तता से बचाने में मदद दिखाता है।

7. कोलेस्ट्रॉल व शुगर नियंत्रण

फाइबर और स्वस्थ वसा होने के कारण ये कोलेस्ट्रॉल व ब्लड शुगर नियंत्रण में सहायक हो सकते हैं।

8. कैंसर-रोधी संभावनाएँ (प्रारंभिक)

कुछ प्रयोगशाला अध्ययनों में बीज के यौगिकों ने कैंसर कोशिकाओं पर सकारात्मक प्रभाव दिखाया है।

महत्वपूर्ण सावधानियाँ

* दवाइयों का विकल्प नहीं: अधिकांश लाभ लैब/छोटे अध्ययनों पर आधारित हैं।

* संभलकर सेवन करें: अत्यधिक मात्रा पाचन समस्याएँ या अन्य जोखिम बढ़ा सकती है।

* डॉक्टर से सलाह लें: गर्भावस्था, दवाइयां या एलर्जी स्थिति में पहले डॉक्टर से संपर्क करें।

क्रीम बिस्कुट: एक मिथक और उसकी सच्चाई

भारत में ज़्यादातर लोग यह मानते आए हैं कि क्रीम बिस्कुट के बीच की मीठी, मुलायम परत असली दूध से बनी क्रीम होती है। नाम में "क्रीम" शब्द, सफ़ेद रंग और दूध जैसा स्वाद — इन सबके कारण यह धारणा बनना स्वाभाविक है। लेकिन हक़ीक़त इससे बिल्कुल अलग और चौंकाने वाली है।

वास्तविकता क्या है? अधिकांश बाज़ार में मिलने वाले क्रीम बिस्कुटों की अंदरूनी "क्रीम" दूध से बनी क्रीम नहीं होती। असल में यह एक अत्यधिक प्रोसेस किया गया मिश्रण होता है, जिसमें मुख्य रूप से शामिल होते हैं:

1. वनस्पति तेल और वनस्पति घी (अक्सर पाम ऑयल या हाइड्रोजेनेटेड फैट)
२. रिफाइंड चीनी
३. इमल्सीफायर और स्टेबलाइज़र
4. कृत्रिम फ्लेवर और रंग
5. अगर दूध मौजूद भी होता है, तो वह बहुत ही नाममात्र मात्रा में होता है — कई बार तो बिल्कुल नहीं।

कंपनियाँ असली क्रीम क्यों नहीं इस्तेमाल करतीं?

क्योंकि:

1. असली डेयरी क्रीम महँगी होती है
२. जल्दी खराब हो जाती है
३. बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए असुविधाजनक होती है

जबकि वनस्पति वसा:

1. सस्ती होती है
२. लंबे समय तक खराब नहीं होती
३. मशीनों में आसानी से इस्तेमाल की जा सकती है

यही कारण है कि पैकेट पर अक्सर "Cream" की जगह "Cr me" लिखा होता है। Cr me का मतलब आमतौर पर नॉन-डेयरी, सिंथेटिक क्रीमी फिलिंग होता है — न कि दूध की क्रीम।

क्रीम बिस्कुट के अंदर वास्तव में क्या होता है? आमतौर पर इनमें पाए जाते हैं:

1. पाम ऑयल / हाइड्रोजेनेटेड फैट — बनावट और स्वाद के लिए
२. अत्यधिक चीनी — मिठास के लिए
३. इमल्सीफायर और स्टेबलाइज़र — तेल और चीनी को मिलाए रखने के लिए
4. कृत्रिम रंग और फ्लेवर — दूध जैसा स्वाद और रंग देने के लिए
5. प्रिज़र्वेटिव्स — शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए

ये सभी चीज़ें पोषण के लिए नहीं, बल्कि लागत घटाने और सुविधा के लिए चुनी जाती हैं।

स्वास्थ्य पर इसके गंभीर प्रभाव

1. ट्रांस फैट और हाइड्रोजेनेटेड तेल ये LDL (खराब कोलेस्ट्रॉल) बढ़ाते हैं HDL (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) घटाते हैं हृदय रोग, स्ट्रोक, सूजन और कैंसर का खतरा बढ़ाते हैं WHO इन्हें स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक मानता है।
२. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड क्रीम बिस्कुट:
1. ज़्यादा कैलोरी
२. लगभग शून्य पोषण

इससे हो सकते हैं:

1. तेज़ी से ब्लड शुगर बढ़ना
२. मोटापा और टाइप-२ डायबिटीज़
३. फैटी लिवर, हार्मोनल असंतुलन4. क्रॉनिक सूजन और कैंसर का जोखिम
३. रसायन और एडिटिव्स का प्रभाव कुछ कृत्रिम रंग, फ्लेवर और प्रिज़र्वेटिव:
1. बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याएँ
२. पाचन और मेटाबॉलिज़्म पर नकारात्मक असर
३. कुछ प्रिज़र्वेटिव (जैसे BHA) कैंसरकारी होता है।
4. इसके अलावा पैकेजिंग से आने वाले मिनरल ऑयल हाइड्रोकार्बन (MOH) भी स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय है।

भारत में नियम और हालिया कदम भारत की खाद्य सुरक्षा संस्था FSSAI ने:

1. ट्रांस फैट की सीमा २% या उससे कम कर दी है
२. प्रोसेस्ड फूड के जोखिमों पर जागरूकता बढ़ाने की पहल की है

लेकिन उपभोक्ता जागरूकता अभी भी बहुत ज़रूरी है।

तो उपभोक्ता क्या करें?

1. सामग्री सूची (Ingredients) ध्यान से पढ़ें
२. "Creamy / Cr me" शब्द से भ्रमित न हों
३. अल्ट्रा-प्रोसेस्ड स्नैक्स का सेवन का त्याग करें
4. सरल, घर का बना या प्राकृतिक विकल्प चुनें

याद रखें: स्वाद क्षणिक है, लेकिन स्वास्थ्य दीर्घकालिक।

घूमना क्यों ज़रूरी है और लिपिड प्रोफाइल क्या है?

केके छाबड़ा

एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने लिपिड प्रोफाइल को बहुत ही बेहतरीन ढंग से समझाया और अनोखे तरीके से समझाने वाली एक खूबसूरत कहानी साझा की।

कल्पना कीजिए कि हमारा शरीर एक छोटा-सा कस्बा है। इस कस्बे में सबसे बड़े उपद्रवी हैं - कोलेस्ट्रॉल।

इनके कुछ साथी भी हैं। इनका मुख्य अपराध में भागीदार है - ट्राइग्लिसराइड।

इनका काम है - गलियों में घूमते रहना, अफरा-तफरी मचाना और रास्तों को ब्लॉक करना।

दिल इस कस्बे का सिटी सेंटर है। सारी सड़कें दिल की ओर जाती हैं।

जब ये उपद्रवी बढ़ने लगते हैं तो आप समझ ही सकते हैं क्या होता है। ये दिल के काम में रुकावट डालने की कोशिश करते हैं।

लेकिन हमारे शरीर-कस्बे के पास एक पुलिस बल भी तैनात है - HDL

वो अच्छा पुलिसवाला इन उपद्रवियों को पकड़कर जेल (लिवर) में डाल देता है।

फिर लिवर इनको शरीर से बाहर निकाल देता है – हमारे ड्रेनेज सिस्टम के ज़रिए।

लेकिन एक बुरा पुलिसवाला भी है - LDL जो सत्ता का भूखा है।

LDL इन उपद्रवियों को जेल से निकालकर फिर से सड़कों पर छोड़ देता है।

जब अच्छा पुलिसवाला HDL कम हो जाता है तो पूरा कस्बा अस्त-व्यस्त हो जाता है।

ऐसे कस्बे में कौन रहना चाहेगा?

क्या आप इन उपद्रवियों को कम करना और अच्छे पुलिसवालों की संख्या बढ़ाना चाहते हैं?

चलना शुरू कीजिए!

हर कदम के साथ HDL बढ़ेगा, और कोलेस्ट्रॉल, ट्राइग्लिसराइड और LDL जैसे उपद्रवी कम होंगे।

आपका शरीर (कस्बा) फिर से जीवंत हो उठेगा।

आपका दिल – सिटी सेंटर – उपद्रवियों की ब्लॉकेज *(हार्ट ब्लॉक) से सुरक्षित रहेगा।

और जब दिल स्वस्थ होगा तो आप भी स्वस्थ रहेंगे।

इसलिए जब भी मौका मिले – चलना शुरू कीजिए!

स्वस्थ रहें... और

अच्छे स्वास्थ्य की कामना

*यह लेख HDL (अच्छा कोलेस्ट्रॉल) बढ़ाने और LDL (खराब कोलेस्ट्रॉल) कम करने का बेहतरीन तरीका बताता है यानी चलना।

हर कदम HDL को बढ़ाता है।

इसलिए – चलो, चलो और चलते रहो।

यह चीजें कम करें:-

1. नमक
2. चीनी
3. ब्लीच किया हुआ मैदा
4. डेयरी उत्पाद
5. प्रोसेस्ड फूड्स

यह सब रोज खाएं:-

1. सब्जियां
2. दालें
3. बीन्स
4. मेवे
5. कोल्ड प्रेस्ड तेल
6. फल

तीन चीजें जिन्हें भूलने की कोशिश करें:

1. अपनी उम्र
2. अपना अतीत
3. अपनी शिकायतें

चार जरूरी चीजें जिन्हें अपनाएं:

1. अपना परिवार
2. अपने दोस्त
3. सकारात्मक सोच
4. स्वच्छ और स्वागत भरा घर

तीन मूलभूत बातें जिन्हें अपनाना चाहिए:

1. हमेशा मुस्कराएं
2. अपनी गति से नियमित शारीरिक गतिविधि करें
3. अपने वजन की जांच और नियंत्रण करें

छः आवश्यक जीवन-शैली जो आपको अपनानी चाहिए:

1. पानी पीने के लिए तब तक प्रतीक्षा न करें जब तक आप प्यासे न हों।
2. आराम करने के लिए तब तक प्रतीक्षा न करें जब तक आप थके नहीं।
3. चिकित्सीय परीक्षणों के लिए तब तक प्रतीक्षा न करें जब तक आप बीमार न हों।
4. चमत्कारों की प्रतीक्षा न करें, भगवान पर भरोसा रखें।
5. कभी भी अपने आप पर से विश्वास न खोएं।
6. सकारात्मक रहें और हमेशा एक बेहतर कल की आशा रखें।
7. इस जीवन शैली को अपनाकर और स्वस्थ, हरदम मुस्कुराते रहें।

"एक नेक काम कीजिए"

केके छाबड़ा

हम सभी धीरे-धीरे वृद्ध हो रहे हैं, इसलिए हम सबको सतर्क होना चाहिए। कृपया एक मिनट निकालकर यह संदेश पढ़ें। यह आपके, आपके परिवार और दोस्तों के लिए उपयोगी हो सकता है।

पुराने सहपाठियों की एक पुनर्मिलन सभा हुई थी। एक महिला उस दिन एक बारबेक्यू पार्टी में अचानक फिसल कर गिर गईं। दोस्तों ने उन्हें डॉक्टर को दिखाने को कहा, लेकिन उन्होंने कहा, "मैं ठीक हूँ।" उन्हें लगा कि शायद नई सैंडल की वजह से ईंट से टकराकर वे गिर पड़ी होंगी। सबने उन्हें संभाला, खाने की प्लेट दी और वे बाकी समय हँसती-बतियाती रहीं।

लेकिन बाद में उनके पति ने सभी को फोन कर बताया कि उन्हें अस्पताल ले जाया गया है और शाम 6 बजे उनका निधन हो गया — क्योंकि पार्टी के दौरान ही उन्हें स्ट्रोक (आघात) हुआ था।

अगर वहाँ मौजूद लोग स्ट्रोक के लक्षण पहचान पाते, तो शायद उनकी जान बचाई जा सकती थी।

स्ट्रोक से पहले कुछ चेतावनी संकेत होते हैं और समय पर इलाज मिल जाए तो जान बचाई जा सकती है। एक न्यूरोसर्जन ने बताया कि यदि वे तीन घंटे के भीतर स्ट्रोक के मरीज तक पहुँच जाएँ, तो मरीज को पूरी तरह ठीक किया जा सकता है।

स्ट्रोक की पहचान कैसे करें? तीन सरल चरण याद रखें: S, T, और R

S - Smile (मुस्कुराना): मरीज से कहें मुस्कुराने को। अगर चेहरा एक तरफ झुक जाए, तो समझिए खतरा है।

T - Talk (बोलना): मरीज से कहें एक सामान्य वाक्य बोलने को, जैसे "आज आसमान साफ़ है।" अगर वह ठीक से नहीं बोल पा रहा है, तो यह भी संकेत है।

R - Raise (हाथ उठाना): कहें कि दोनों हाथ उठाए। अगर एक हाथ नीचे गिर रहा है या उठा नहीं पा रहा है, तो यह भी संकेत है।

एक और संकेत : मरीज से कहें जीभ बाहर निकाले। अगर जीभ एक ओर मुड़ जाए, तो यह भी स्ट्रोक का लक्षण हो सकता है।

इनमें से कोई भी लक्षण दिखाई दे तो बिना देर किए फौरन एम्बुलेंस या नज़दीकी अस्पताल में संपर्क करें और सभी लक्षण विस्तार से बताएं।

एक हृदय रोग विशेषज्ञ ने ज़ोर देकर कहा:

यदि यह संदेश पढ़ने वाला हर व्यक्ति इसे कम-से-कम दस लोगों को भेजे, तो कम-से-कम एक जीवन बच सकता है।

मैंने अपना कर्तव्य निभाया।

अब आपकी बारी है!

इसे आगे फैलाएं।

"जब आप किसी और को गुलाब देते हैं, तो उसकी खुशबू आपके हाथों में भी रह जाती है!"

"इस संदेश को फैलाएं, पुण्य की सुगंध आपके दिल में बस जाएगी!"

गुरुजी कहते हैं:

चाहे कितने भी व्यस्त क्यों न हों,

पुण्य के कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

गठिया व जोड़ों के दर्द का आजमाया हुआ आयुर्वेदिक उपाय

पुराने वैद्यक ग्रंथों में जो कहा गया, वही आज भी काम करता है। यह कोई थ्योरी नहीं, बार-बार का अनुभूत प्रयोग है।

औषधि योग

* असगन्ध + सौंठ + विधारा + सुरंजान

(सब बराबर-बराबर मात्रा में) मेथीदाना – (सौंठ की आधी मात्रा), सभी को कूट-पीस कर सुरक्षित रख लें।

मात्रा

* 2-2 ग्राम सुबह खाली पेट

* रात सोने से पहले, 200 ग्राम कोसे दूध के साथ सेवन करें।

सेवन विधि (यही असली गेम-चेंजर है)

* पहली बार: 7 दिन दवा

* ठीक 60 दिन बाद: फिर 7 दिन

* फिर 2 महीने बाद: पुनः 7 दिन

इसी क्रम में अधिकांश मामलों में गठिया ठीक हो जाता है। कई बार का अनुभव—नो ओवरहाइप।

परहेज (सख़्ती से)

* खटाई

* तेल

* वायु-कारक चीजें

* चावल

* मिठाई

* गरिष्ठ व देर से पचने वाला भोजन

याद रखें—दवा उतनी ही काम करती है, जितना परहेज निभाया जाता है।

पुरानी विद्या + सही विधि = पक्का परिणाम आजमाया हुआ है, हवा-हवाई नहीं। अगर गठिया ने ज़िंदगी स्लो कर दी है— तो अब गेम पलटने का समय है।

कृष्ण को लोग छलिया कहते हैं पर क्या आप जानते हैं उनके छल ?

पिंकी कुंडू

दुनिया ने हमेशा छल को समझदारी का नाम दिया है, यहाँ जो सबसे चालाक है, वही सबसे बुद्धिमान माना जाता है। लोग अपने फायदे के लिए योजनाएँ बनाते हैं, सच को मोड़ते हैं, रिश्तों को साधन बना लेते हैं। पर इस सबके बीच मैंने कभी छल को नहीं चुना मैने कृष्ण को चुना क्योंकि कृष्ण कोई तुलना नहीं हैं, वो तो स्वयं में पूर्ण हैं।

अगर आज दुनिया छल की तरफ़ भाग रही है, तो सिर्फ़ इसलिए क्योंकि उसने उस महान छलिये को उसकी गहराई में उतरकर देखा ही नहीं।

कृष्ण को लोग छलिया कहते हैं, पर उनके हर खेल के पीछे सृष्टि का संतुलन था। उन्होंने जीवन को प्रयोगशाला बनाया, कभी प्रेम का प्रयोग, कभी विरह का,

कभी युद्ध का, कभी गहन खामोशी का और हर प्रयोग के बाद कुछ टूटा नहीं, कुछ बचा - धर्म, करुणा और आशा।

मुझे इसीलिए उन पर अटूट भरोसा है, क्योंकि जिसने पूरी सृष्टि को इतने धैर्य से रचा हो, वो मेरे दुखों को अनदेखा नहीं कर सकता।

मैं जानती हूँ कृष्ण सीधे मेरे सामने नहीं आएँगे वो हमेशा किसी न किसी रूप में आते हैं, कभी किसी अजनबी की बात बनकर, कभी अचानक मिले सहारे बनकर,

कभी किसी ऐसे इंसान के रूप में जो बिना जाने मेरे लिए दुआ बन जाता है और मुझे पूरा विश्वास है कि जब मेरा हृदय सच में टूटेगा, जब बोझ असहनीय होगा, तो कृष्ण किसी को ज़रिया बनाकर इसी धरती पर भेजेंगे, मेरे दुखों से मुझे मुक्ति दिलाने के लिए।

क्योंकि जो सृष्टि का रचयिता है, वो अपने विश्वास करने वाले को कभी अकेला नहीं छोड़ता।

कृष्ण में रमने वाला एक जिद्दी भक्त का भाव है मुझमें जो कभी मुझे भीतर से खत्म नहीं होने देता और जो विश्वास मेरे इष्ट पर है, वही मेरी सबसे बड़ी ताक़त है, जो हमेशा बनी रहनी चाहिए।

कुण्डली में चन्द्र-बुध और मानसिक तनाव

पिंकी कुंडू

"स्वास्थ ही जीवन है"। यह एक पुरानी कहावत है इसकाआशय शारीरिक और मानसिक स्वास्थ से है इसमें भी व्यक्ति के जीवन की सफलता और शारिरिक स्वास्थ्य की कुंजी मानसिक स्वास्थ्य ही है।

इसके बिना व्यक्ति की शिक्षार्जन, आजीविका दांपत्य जीवन आदि संपूर्ण भाग्य की सफलता संदिग्ध ही रहती है एवम, इसकी चिकित्सा भी अत्यंत कठिन है।

व्यक्ति का जीवन जैसे जैसे जटिल समस्याओं से आक्रांत होता है वैसे वैसे उसके मानसिक तनाव में वृद्धि होती है इसकी वजह से मानसिक अवसाद और हृदय रोग की संभावना भी बन सकती है, अतः इसका ज्योतिषीय विश्लेषण एवम निवारण आवश्यक है।

मानसिक विकृति या रोग वृद्धि में चंद्र तथा बुध की प्रमुख भूमिका रहती है, क्योंकि चन्द्र मस्तिष्क एवम बुध मस्तिष्क के स्नायु तन्त्र का कारक है।

इसके अतिरिक्त सिर का कारक लग्न, मानसिक स्थिरता का कारक तृतीय और नवम, मानसिक स्वास्थ्य का कारक चतुर्थ, बुद्धि का कारक पंचम भाव है।

अतः चंद्र बुध के साथ साथ लग्न, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, नवम भाव का प्रबल होना मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

यदि ये सब पापक्रांत और निर्बल हो तो मानसिक विकृति पैदा हो सकती है जैसे, दिन में जन्म होने पर शनि के प्रभाव से मिर्गी एवम रात्रि में जन्म होने पर उन्माद पैदा हो सकती है। इसके उल्टा मंगल के प्रभाव से दिन में जन्म होनेपर उन्माद और रात्रि में जन्म होने पर मिर्गी हो सकता है, इसके अलावा षष्ठ अष्टम द्वादश भाव में स्थित बुध पाप प्रभाव में आकर वाणी दोष या कंठ रोग हो सकता है।

आचार्य चाणक्य द्वारा चंद्रगुप्त को दिया गया अमूल्य ज्ञान

पिंकी कुंडू

चाणक्य नीति कहती है —

- राजा वही होता है, जो पहले स्वयं पर शासन करे।
- निर्णय भावनाओं से नहीं, विवेक से लो।
- मित्र कम हों, पर विश्वसनीय हों।
- शत्रु को कभी कमज़ोर मत समझो।
- समय और अवसर की पहचान करना सीखो।
- शक्ति से पहले नीति को मज़बूत करो।
- जो गुप्त रखा जाए, वही सुरक्षित रहता है।
- भीड़ की नहीं, लक्ष्य की सुनो।
- पराजय अंत नहीं, शिक्षा है।
- अनुशासन ही साम्राज्य की नींव है।

चंद्रगुप्त मौर्य ने इस ज्ञान को अपनाया

और इतिहास का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य खड़ा किया।

नीति वही सच्ची है,
जो कठिन समय में भी साथ दे।

सम्भल का प्राचीन धार्मिक वैभव प्रमुख तीर्थ, परिक्रमा परंपरा और पौराणिक मान्यताएँ

पिंकी कुंडू

1. सम्भल : शम्भल ग्राम की पौराणिक पहचान प्राचीन ग्रंथों में सम्भल को "शम्भल" या "शम्भल ग्राम" कहा गया है। भविष्य पुराण, विष्णु पुराण और अन्य धार्मिक ग्रंथों के अनुसार यही वह पावन भूमि है जहाँ भगवान विष्णु के अंतिम अवतार — भगवान कल्कि का प्राकट्य होना बताया गया है। इसी कारण सम्भल को कलियुग के अंत और धर्म की पुनर्स्थापना से जुड़ा तीर्थ माना जाता है।

2. सम्भल के प्रमुख प्राचीन हिन्दू धार्मिक स्थल

1. श्री कल्कि विष्णु मंदिर सम्भल का सर्वाधिक चर्चित और पौराणिक स्थल मान्यताः यहीं भगवान कल्कि का अवतरण होगा यह मंदिर वैष्णव परंपरा का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है

2. श्री भुवनेश्वर महादेव मंदिर अति प्राचीन शिवालय मान्यता है कि यह मंदिर सृष्टि और पृथ्वी तत्व से जुड़ा है सावन व महाशिवरात्रि पर विशेष श्रद्धा

3. श्री क्षेमनाथ महादेव "क्षेम" अर्थात कल्याण भक्तों में विश्वास है कि यहाँ पूजन से जीवन की बाधाएँ दूर होती हैं

4. श्री चंदेश्वर महादेव चंद्रदेव से संबंधित मान्यता मानसिक शांति और रोग निवारण हेतु प्रसिद्ध

5. श्री श्रीवंशगोपाल तीर्थ भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ा माना जाता है वैष्णव परंपरा में विशेष स्थान

6. मनोकामना मंदिर श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होने की मान्यता नवरात्रि और विशेष पर्वों पर भारी संख्या में दर्शनार्थी

7. प्राचीन हनुमान मंदिर संकटमोचन स्वरूप में पूजे जाते हैं मंगलवार व शनिवार को विशेष भीड़

3. सम्भल की पौराणिक परिक्रमा परंपरा सम्भल परिक्रमाः- संभल में प्राचीन काल से धार्मिक परिक्रमा की परंपरा रही है, जिसमें नगर के प्रमुख तीर्थों को जोड़ा जाता है।

परिक्रमा में सम्मिलित प्रमुख स्थलः
श्री कल्कि विष्णु मंदिर
भुवनेश्वर महादेव
क्षेमनाथ महादेव
चंदेश्वर महादेव
श्रीवंशगोपाल तीर्थ
मनोकामना मंदिर

मान्यताः इस परिक्रमा को पूर्ण करने से

पाप क्षय
मनोकामना पूर्ति
आत्मिक शुद्धि
मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है

यह परिक्रमा परंपरा सम्भल को केवल एक नगर नहीं बल्कि जीवित तीर्थ बनाती है।

4. धार्मिक सहिष्णुता और ऐतिहासिक काल संभल का धार्मिक स्वरूप केवल हिन्दू आस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विभिन्न कालों में यहाँ धार्मिक सहअस्तित्व भी देखने को मिलता है।

मध्यकाल में बनी शाही जामा मस्जिद ऐतिहासिक धरोहर है, परंतु उससे पहले सम्भल की पहचान एक प्राचीन सनातन धार्मिक केंद्र के रूप में रही है।

5. निष्कर्ष संभल केवल एक जनपद नहीं, बल्कि कल्कि अवतार की भूमि, शिव-वैष्णव परंपरा का संगम, परिक्रमा और तीर्थ संस्कृति का जीवंत केंद्र है।

आज आवश्यकता है कि इसके पौराणिक गौरव, धार्मिक स्थलों और परंपराओं को सही रूप में संरक्षित और प्रचारित किया जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी सनातन विरासत को पहचान सकें।

आज प्रतीक हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले अपनी विष्णु मंदिर हरियर मंदिर को खोज रहे हैं,,,

कुरुक्षेत्र कौरव पांडव युद्ध धर्म की स्थापना के लिए हुआ, जाने

पिंकी कुंडू

महाभारत की समाप्ति के बाद हस्तिनापुर में पाण्डवों के राज्याभिषेक के बाद जब श्री कृष्ण द्वारिका जाने लगे तो धर्मराज युधिष्ठिर उनके रथ पर सवार हो कर कुछ दूर तक उन्हें छोड़ने के लिए चले गए...

लेकिन, जाते भगवान श्रीकृष्ण ने देखा, धर्मराज के मुख पर उदासी ही पसरी हुई थी.

उन्हें उदास देखकर भगवान श्री कृष्ण ने मुस्कुरा कर पूछा...

"क्या हुआ भइया ?

क्या आप अब भी खुश नहीं ?"

इस पर युधिष्ठिर ने उसी उदासी के साथ कहा : ₹प्रसन्न होने का अधिकार तो मैं इस महाभारत युद्ध में हार आया हूँ केशव...!

मैं तो यह सोच रहा हूँ कि जो हुआ वह ठीक था क्या ?₹

युधिष्ठिर का उत्तर अत्यंत मार्मिक था.

युधिष्ठिर की ऐसी बातें सुनकर श्री कृष्ण खिलखिला उठे और बोले : ₹क्या हुआ भइया...!

यह किस उलझन में पड़ गए आप ?"

"हँस कर टालो मत अनुज !

मेरी विजय के लिए इस युद्ध में तुमने जो जो कार्य किया है, वह ठीक था क्या ?

पितामह का वध, कर्ण वध, द्रोण वध, यहाँ तक कि अर्जुन की रक्षा के लिए भीमपुत्र घटोत्कच का वध कराना...

यह सब ठीक था क्या ?

क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुमने अपने ज्येष्ठ भ्राता के मोह में वह किया जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था ?"

धर्मराज बड़े भाई के अधिकार के साथ कठोर प्रश्न कर रहे थे.

अब श्री कृष्ण गम्भीर हो गए और बोले :

भ्रम में न पड़िये बड़े भइया !

यह युद्ध क्या आपके राज्याभिषेक के लिए लड़ा गया था ?

नहीं....!

आप तो इस कालखण्ड के करोड़ों मनुष्यों के बीच एक सामान्य मनुष्य भर हैं.

यदि आप स्वयं को राजा मान कर सोचें... तब भी इस समय संसार में असंख्य राजा हैं और असंख्य आगे भी होंगे.

इस भीड़ में आप बहुत छोटी इकाई हैं धर्मराज...

तो फिर, मैं आपके लिए कोई युद्ध क्यों लड़ूंगा ?"

युद्ध आपकी स्थापना के लिए नहीं अपितु धर्म की स्थापना के लिए हुआ.

यह श्री कृष्ण की बातें सुनकर युधिष्ठिर आश्चर्य में डूब गए.

और, धीमे स्वर में बोले, "फिर...?

फिर यह महाभारत क्यों हुआ..?"

अब श्री श्री कृष्ण ने बताया : यह युद्ध आपकी स्थापना के लिए नहीं अपितु धर्म की स्थापना के लिए हुआ.

यह भविष्य को ध्यान में रखते हुए जीवन संग्राम के नए नियमों की स्थापना के लिए हुआ.

महाभारत हुआ.

ताकि, भविष्य का भारत सीख सके कि विजय ही धर्म है...

वो चाहे जिस प्रयत्न से मिले.

यह अंतिम धर्मयुद्ध है धर्मराज.

क्योंकि, यह वो अंतिम युद्ध है जो धर्म की छाया में हुआ है.

भारत को इसके बाद उन बर्बरों का आक्रमण सहना होगा जो केवल सैनिकों पर ही नहीं बल्कि निर्दोष नागरिकों, स्त्रियों, बच्चों और यहाँ तक कि सभ्यता और संस्कृति पर भी प्रहार करेंगे.

उन युद्धों में यदि भारत सत्य असत्य, उचित अनुचित के भ्रम में पड़ कर कमजोर पड़ा और पराजित हुआ तो उसका दण्ड समूची संस्कृति को युगों युगों तक भोगना पड़ेगा.

आश्चर्यचकित युद्धिष्ठर चुपचाप श्री कृष्ण को देखते रहे.

श्री कृष्ण ने फिर कहा.... "भारत को अपने बच्चों में विजय की भूख भरनी होगी धर्मराज.

यही मानवता और धर्म की रक्षा का एकमात्र विकल्प है.

क्योंकि, इस सृष्टि में एक आर्य परम्परा ही है जो समस्त प्राणियों पर दया करना जानती है...

यदि वह समाप्त हो गयी तो न निर्बलों की प्रतिष्ठा बचेगी न प्राण.

"ऐसे में भारत को अपना हर युद्ध जीतना होगा, वही धर्म की विजय होगी."

श्री कृष्ण की ये बातें सुनकर युधिष्ठिर जड़ हो गए तो श्री कृष्ण ने उनकी पीठ थपथपाते हुए कहा, "मनुष्य अपने समय की घटनाओं का माध्यम भर होता है भइया...

वह कर्ता नहीं होता.

इसीलिए, भूल जाइए कि किसने क्या किया..

और, आप बस इतना स्मरण रखिये कि इस कालखण्ड के लिए समय ने आपको हस्तिनापुर का महाराज चुना है.

तथा, आपको इस कर्तव्य का निर्वहन करना है.

यही आपके हिस्से का अंतिम सत्य है।"

अब युधिष्ठिर के रथ से उतरने का स्थान आ गया था इसीलिए वे अपने अनुज कृष्ण को गले लगा कर उतर आए.

क्योंकि, अभी कृष्ण के सामने अभी अनेक लीलाओं का मंच सजा था.

आज ये युधिष्ठिर और कोई नहीं हिन्दू समाज है जो नपुंसक हो गया है "भाई चारा की बीमारी से ग्रस्त"।

और, मोदी जी श्री कृष्ण की भांति ये लड़ाई भारत में धर्म स्थापना के लिए लड़ रहे हैं.

परंतु, याद रखें कि द्वापर के महाभारत की तरह ही मोदी जी सारथी बनकर केवल रास्ता दिखा सकते है...

अर्जुन की तरह शस्त्र हमें खुद उठाने होंगे.

कोई ये न भूले कि.... जब मोदी जी भगवा वस्त्र में मंदिर में निकलते है तो वे सिर्फ पूजा-अर्चना ही नहीं करते...

बल्कि, एक सेनापति की भांति आगे बढ़कर पूरे हिन्दू समाज को एक सन्देश देते हैं कि...

"गर्व करो हम हिन्दू हैं".

इसीलिए, राजनीति में नैतिकता और सुचिता की बात कर अपने मन को बहकाना सिर्फ बेवकूफी है क्योंकि विजय ही अंतिम सत्य है.

अतः , इस प्रसंग में श्री कृष्ण की चेतावनी को समझें और किसी दूसरे के प्रति विलाप करने की जगह गंभीरता से चिंतन करें कि इस धर्मयुद्ध हम कहाँ खडे हैं और आने वाली पीढ़ी के लिए समाज के लिए, राष्ट्र के लिए और सनातन के लिए हमारा कर्तव्य क्या है ???

जय महाकाल...!!!

माँ भारती का अमर सपूत : शहीद सूबेदार हीरा लाल

2 गाड्र्स (1 ग्रेनेडियर्स)
वीरगाथा

अकबरपुर (महेंद्रगढ़), 10 जनवरी। नांगल चौधरी के ग्राम अकबरपुर, जिला महेंद्रगढ़ (हरियाणा) की पावन धरती पर जन्मे भारतीय सेना के वीर सपूत सूबेदार हीरा लाल ने मातृभूमि की रक्षा करते हुए 09 जनवरी 2026 को जम्मू-कश्मीर में सर्वोच्च बलिदान देकर वीरगति प्राप्त की। उनका जीवन साहस, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और अटूट राष्ट्रभक्ति का प्रेरणादायक प्रतीक रहा।

सूबेदार हीरा लाल ने वर्ष 2000 में भारतीय सेना की प्रतिष्ठित गाड्र्स रेजिमेंट में भर्ती होकर देश सेवा का संकल्प लिया। कठोर सैन्य प्रशिक्षण के उपरांत उनकी नियुक्ति 2 गाड्र्स (1 ग्रेनेडियर्स) यूनिट में हुई। प्रारंभ से ही वे एक जुझारू, कर्मठ एवं अनुशासित सैनिक के रूप में जाने गए। अपनी उत्कृष्ट सेवा, नेतृत्व क्षमता और समर्पण के बल पर उन्होंने सेना में अनेक महत्वपूर्ण दायित्व निभाए और आगे चलकर जूनियर कमीशन ऑफिसर (JCO) के पद तक पहुँचे।

वर्तमान में सूबेदार हीरा लाल 46 RR बटालियन के साथ जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद-रोधी अभियानों में तैनात थे। कर्तव्य पालन के दौरान उन्होंने अदम्य साहस का परिचय देते हुए मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनका यह बलिदान परिवार, सेना और पूरे राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है, साथ ही देश के लिए गर्व का विषय भी है।

शहीद सूबेदार हीरा लाल अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनके भीतर देशभक्ति के संस्कार परिवार के त्याग और मूल्यों से आए। उनकी धर्मपत्नी ने घर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए हर कदम पर उन्हें संबल और मनोबल प्रदान किया, जिससे वे निश्चिंत होकर सीमाओं पर देश सेवा करते रहे। यह बलिदान केवल एक सैनिक का नहीं, बल्कि पूरे परिवार का राष्ट्र के प्रति समर्पण है।

जैसे ही शहीद का पार्थिव शरीर सेना की टुकड़ियों द्वारा उनके पैतृक गांव अकबरपुर लाया गया, पूरा गांव शोक और गर्व के भाव से भर उठा। गांव से लगभग 3 किलोमीटर पहले से ही ग्रामवासी, सैनिक, पूर्व सैनिक एवं युवा हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लिए सड़कों पर उतर आए। "भारत माता की जय" और "जब तक सूरज-चाँद रहेगा, हीरा लाल तेरा नाम रहेगा" जैसे गगनभेदी नारों के बीच पुष्पवर्षा करते हुए उनके निवास स्थान से श्मशान घाट तक अंतिम यात्रा निकाली गई। हर हाथ में लहराता तिरंगा और हर स्वर में गूंजती देशभक्ति ने वातावरण को भावुक और गौरवमयी बना दिया।

शहीद की अंतिम विदाई में 46 RR बटालियन, 9 MECH INF यूनिट तथा 2 गाड्र्स से अधिकारी, सूबेदार मेजर, जेसीओ, एनसीओ एवं जवान बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त 100 से अधिक पूर्व सैनिक, जिनमें कई पूर्व सूबेदार मेजर, ऑनरेरी कैप्टन, सूबेदार एवं एनसीओ शामिल थे, अपने वीर साथी को नम आँखों से अंतिम सलामी देने पहुँचे। यह दृश्य सैनिक एकता, अनुशासन और भाईचारे का सजीव उदाहरण था।

अंत में पलटन से उपस्थित अधिकारियों, जेसीओ एवं एनसीओ तथा पूर्व सैनिकों ने शहीद सूबेदार हीरा लाल के परिजनों से भेंट कर उन्हें ढांढस बंधाया। उन्होंने परिवार को हिम्मत और संबल देते हुए कहा कि सेना केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक परिवार है और शहीद का परिवार कभी अकेला नहीं छोड़ा जाएगा। दुःख की इस घड़ी में ही नहीं, बल्कि आगे आने वाले हर सुख-दुःख में सेना और पूर्व सैनिक समुदाय परिवार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहेगा।

। पूर्ण सैन्य सम्मान और गार्ड ऑफ ऑनर के साथ 10 जनवरी 2026 को माँ भारती के इस अमर सपूत को अंतिम विदाई दी गई। गांव अकबरपुर ने अपना लाल खोया है, लेकिन देश ने ऐसा वीर नाम पाया है जो इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

शहीद सूबेदार हीरा लाल अमर रहें।

IN भारत माता की जय IN

— for Gurais Ex-Servicemen Welfare Association

जम्मू-कश्मीर में माता वैष्णोदेवी कालेज का मान्यता रद होने पर इसकी कड़ी निन्दा करने के बजाय लोग खुशियां मना रहे हैं बहुत ही निंदनीय है पुर्व मिडिया प्रभारी वसीम अहमद

परिवहन विशेष न्यूज

जम्मू-कश्मीर में माता वैष्णोदेवी कालेज की मान्यता रद होने से देश में नफरती माहौल बन गया है MBBS की पढ़ाई करने वाले बच्चे के भविष्य को संवारने के बजाय उनका कैरियर ख़राब किया जा रहा है लोग स्कूल कालेज के लिए तमाम तरह से कोशिश कर रहे हैं देश भर में स्कूल और कॉलेज खोले जाएं जिससे बच्चे पढ़-लिखकर डाक्टर इंजीनियर बनें। पर कुछ अपने ही देश में नफ़रत फैला कर अपने बच्चों के भविष्य को संवारने के बजाय उनके कैरियर को ख़राब कर रहे हैं देश में हिन्दू मुस्लिम के नाम पर भेदभाव करके कुछ संगठनों द्वारा विरोध प्रदर्शन कर कॉलेज को ही बंद करवा दिया ये बहुत ही दुखत और निंदनीय है।

अब जमीन पर नहीं बैठेंगे 105 छात्र, पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन ने दी 35 मेज कुर्सियां

सुनील बाजपेई

कानपुर। इस महानगर में कई स्कूल ऐसे हैं ,जहां छात्र जमीन पर बैठकर शिक्षा ग्रहण करने को मजबूर हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। उनके लिए मेज कुर्सियों की व्यवस्था कर दी गई है।

यह जानकारी देते हुए भाजपा पार्षद नेता नवीन पंडित ने यहां बताया कि प्राथमिक स्कूल निराला नगर और प्राथमिक विद्यालय लेबर कॉलोनी के लिए

श्याम कुकरेजा और अंकिता ग्राम उद्योग के समाजसेवी चेयर मैन दिनेश अहूजा के सहयोग से पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में105 छात्रों को बैठने के लिए 35 मेज कुर्सियों की व्यवस्था करवाई। का सहयोग किया गया है। छात्रा - छात्राओं को बैठने के लिए इस सराहनीय व्यवस्था का मुख्य श्रेय भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित को ही जाता है। उन्हें छात्र क्षात्राओं के जमीन पर बैठकर पढ़ने की जानकारी तब हुई ,जब उन्होंने कई विद्यालयों का आकस्मिक दौरा किया ,जहां छात्र जमीन पर बैठकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए मजबूर थे। जिसके बाद ही भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने सार्थक प्रयास करते हुए प्राथमिक स्कूल निराला नगर और प्राथमिक विद्यालय लेबर कॉलोनी के लिए में105 छात्रों को बैठने के लिए 35 मेज कुर्सियों की व्यवस्था करवाई। उन्होंन बताया अब सर्वे करके शेष बचे अन्य स्कूलों के छात्रों के लिए भी इसी तरह की व्यवस्था करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी जाएगी।

इसबीच अंकिता ग्रामोद्योग के मुखिया समाज सेवी दिनेश आहूजा ने पार्षद वेलफेयर एसोसिएशन को अन्य स्कूलों के लिए भी इसी तरह की सहायता किए जाने का भरोसा दिया। भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित द्वारा दोनों विद्यालयों के छात्र छात्राओं को बैठने के लिए फर्नीचर समर्पित किए जाने के इस मौके पर अमित पांडे ,नीरज गुप्ता ,दिनेश आहूजा, श्याम कुकरेजा, प्रकाश वीर आर्य, संदीप पासवान और रंजीत झा आदि मौजूद रहे।

केसरवानी वैश्य सभा ने निकाली भव्य व ऐतिहासिक विराट शोभा यात्रा, वैश्य एकता की दिखी अनूठी मिसाल

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर । स्थानीय श्याम गंज रोड से वैधनाथद्याम केसरवानी वैश्य सभा ने केसरवानी आश्रम में महर्षि कश्यप मुनि की विधिवत पूजा कर एक शानदार भव्य, विराट व ऐतिहासिक धार्मिक शोभा यात्रा निकाली। जो शहर के मुख्य मार्गो से भ्रमण करते हुए केसरवानी अतिथि भवन, झौसागढी तक गई। जिसमें केसरी परिवारों के महिला, पुरुष, युवक युवतियों बच्चें, दुकानदार आदि ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस भव्य आकर्षक मनोरम शोभा यात्रा में महामुनि कश्यप ऋषि ,भारत-माता, एवं विभिन्न देवी-देवताओं की झलक दिखाई दी। इसके अलावा कोलकाता से आए कलाकारों द्वारा एवं 50 लोगों के छत्तीसगढ़ टीम की भी अनुपम झांकी की प्रस्तुति की गई।जिसमे सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियों की जीवंत मिसाल देखने को मिला। मौके पर भारतीय वैश्य महासभा के जिला अध्यक्ष श्री प्रभाष गुप्ता ने कहा कि इस ऐतिहासिक भव्य शोभा यात्रा में वैश्य परिवार के एकजुटता, व संगठन की एकता का अनूठा मिसाल देखने को मिला।

दूसरी को भोगने की चाहत में ही कानपुर में दफनाई गई रेशमा, प्रेमी समेत दो गये जेल, जारी अन्य की तलाश

सुनील बाजपेई

कानपुर। 7 बच्चों की मां रेशमा को भोगकर उसका मन भर गया था। इसीलिए वह दूसरी युवती को जाल में फंसा कर अब उसके साथ अपनी रातें रंगीन करना चाहता था। उसने रेशमा सें कहा कि अब वह उसके भाई की पत्नी बन जाए लेकिन रेशमा राजी नहीं है।

अब जब पीछा छुडाने का कोई रास्ता नहीं बचा तो उसने जो योजना बनाई उसी के चलते वह रेशमा को सात फुट गहरे में दफन करने में सफल हो गया। लेकिन पाप तो सिर चढ़ कर बोलता है । - - -और फिर ऐसा ही हुआ जिसके फलस्वरूप ही 10 माह से छिपा राज बाहर आ गया। पुलिस ने रेशमा हत्या कांड का खुलासा करते हुए उसके प्रेमी और साथी को जेल भेज दिया । सजेती थाने के टिकवांपुर की इस घटना में पुलिस भूमिका के आधार पर कुछ और लोगों को भी जेल भेजने की तैयारी कर रही है।

लगभग पांच साल पहले सजेती थाने के गांव टिकवांपुर निवासी रामबाबू संखवार का निधन होने के चलते उसकी पत्नी सात बच्चों की मां 45 वर्षीय रेशमा पड़ोसी रामाबू के चचेरे भाई अविवाहित गोरेलाल संखवार के साथ रहने लगी थी।

इस बहुचर्चित रेशमा हत्याकांड का खुलासा तब हुआ, जब रेशमा अपने बेटे के बुलाने पर शादी में घर नहीं पहुंची। बेटा प्रेमी गोरे लाल के घर पहुंचा, तो मां नहीं मिली।

जब प्रेमी गोरेलाल से पूछा तो उसने कहा- तुम्हारी मां अब कभी नहीं आएगी। इसके बाद बेटे ने शक के आधार पर प्रेमी के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने प्रेमी को पकड़कर सख्ती से पूछताछ की, तो उसने जुर्म कबूल कर लिया।

जिसके बाद एसीपी कृष्णकांत यादव ने फोर्स के साथ गांव पहुंच टावर के नीचे जमीन खोदवाई। टार्च की लाइट में 7 फीट गड्ढा खोदने पर बैठी हुई स्थिति में रेशमा का कंकाल बरामद हुआ। फोरेंसिक टीम ने मौके से सबूत जुटाए। प्रेमी ने पुलिस को बताया कि हत्या के बाद वह दो दिन तक लाश छिपाने की प्लानिंग करता रहा। जगह ढूंढता रहा। पहले नहर में फेंकने की प्लानिंग की, फिर शक हुआ कि शव उतराएगा तो पहचान हो जाएगी और पकड़ा जाएगा। इसके बाद जमीन में उसने 7 फीट गहरा गड्ढा खोदा और शव को दफना दिया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक गोरेलाल के इस बीच एक अन्य महिला से भी संबंध हो गए थे। इसीलिए वह रेशमा को छोड़कर अब उसे भोगना चाहता था ,जिसमें रेशमा बाधक बन रही थी।

पुलिस की पूछताछ में गिरफ्तार प्रेमी गोरेलाल ने भी बताया कि मैं रेशमा के साथ नहीं रहना चाहता था। मैंने उससे कहा कि तुम मेरे भाई के साथ रिश्ते में रहो। इसका रेशमा ने विरोध किया, फिर रोज-रोज लड़ाई-झगड़ा करने लगीं। इससे छुटकारा पाने के लिए मैंने गला दबाकर रेशमा को मार डाला। इस मामले में अबतक दो को गिरफ्तार कर जेल भेजने के बाद अन्य भूमिका के आधार पर उन्हें भी जेल भेजने की तैयारी कर रही है।

– घना है कोहरा (बाल कविता)

धुंध की चादर ने डाल रखा है डेरा,
कड़ाके की ठंडी और घना है कोहरा,
हाथ को हाथ भी नहीं दिखता है यहाँ,
सूरज दादा तुम हो कहाँ बताओ ज़रा ।

इस सर्द मौसम ने बड़ा ही है सताया,
ऊपर से बारिश ने तापमान गिराया,
हवा भी चल रही जोर-शोर से यहाँ,
ठंडे बर्फीले पानी ने डर और बढ़ाया ।

कुछ तो रखो छोटे बच्चों का ख़्याल,
लाल-लाल हो गए हैं हमारे तो गाल,
गुलाबी होंठ भी हुए रूखे हमारे यहाँ,
शुष्क मौसम ने कैसी चली है चाल ।

सूरज दादा आओ न बीत गई रात,
पेड़ों से झर रहे हैं पीले-पीले पात,
चाहिए हमें रआनंदर गर्माहट यहाँ,
सुन लो हमारी भी थोड़ी सी बात ।

– **मोनिका डागा "आनंद",**
चेन्नई, तमिलनाडु

सबके चेहरों पे हो मुस्कान...!

शांति में 'समझ और समझ' में है समाधान,
छोटी-छोटी बातें देती बड़े तनाव, व्यवधान।
जीवन में बाँटों सुख-दु:ख हो आदान-प्रदान,
दुआ करों सबके चेहरों पे सदा हो मुस्कान।

जब कोई बात हमारे 'हिसाब' से ना हो पाये,
ध्यान दें हमारा मन घबराहट से भर न जाये।
सवाल है के तनाव की मूल वजह जान पाये,
समस्या बड़ी नहीं परिवार से ही सुलझ जाये।

हमारी सोचने-समझने की शक्ति न हो क्षीण,
जब मन अशांत हो निर्णय क्षमता हो महीन।
हम सही होते हुए भी गलत दिशा में गमगीन,
ईश्वर से करिए प्रार्थना समाधान हो तल्लिन।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

बजट 2026-27:भारत की आर्थिक दिशा, टैक्स सुधार और मिडिल क्लास की उम्मीदों क़ा निर्णायक पड़ा

भारत से लेकर वैश्विक निवेशकों तक, सभी की निगाहें इस बजट पर टिकी हुई हैं
लोकतंत्र में बजट जवाबदेही और पारदर्शिता की कसौटी होता है,राजकोषीय अनुशासन व मिडिल क्लास,नौकरीपेशा वर्ग, किसानों,स्टार्टअप्स और उद्योग जगत के बीच संतुलन साधने की अपेक्षा- **एडवोकट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत का आम बजट केवल एक वित्तीय दस्तावेज़ नहीं होता, बल्कि यह देश की आर्थिक सोच सामाजिक प्राथमिकताओं और वैश्विक भूमिका को परिभाषित करने वाला नीति-घोषणापत्र होता है। वर्ष 2026-27 का केंद्रीय बजट इस दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व रखता है, क्योंकि यह न केवल एक नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत करेगा, बल्कि भारत के आयकर ढांचे में होने वाले सबसे बड़े कानूनी परिवर्तन से पहले का अंतिम पूर्ण बजट भी होगा। यही कारण है कि संसद से लेकर शेयर बाजार तक, टैक्सपेयर्स से लेकर उद्योग जगत तक और भारत से लेकर वैश्विक निवेशकों तक,सभी की निगाहें इस बजट पर टिकी हुई हैं।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र बता दूं क़ि वर्ष 2026-27 के बजट का औपचारिक आगाज़ संसद के बजट सत्र के साथ होगा, जिसे 28 जनवरी से 2 अप्रैल 2026 तक आयोजित करने की मंजूरी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा दी जा चुकी है। यह सत्र दो चरणों में विभाजित होगा, पहला चरण 28 जनवरी से 13 फरवरी तक और दूसरा चरण 9 मार्च से 2 अप्रैल तक चलेगा।इसविस्तारित सत्र का उद्देश्य केवल बजट पारित करना नहीं, बल्कि उससे जुड़ी नीतियों, संशोधनों और विधायी पहलुओं पर व्यापक विमर्श सुनिश्चित करना है। लोकतंत्र में बजट सत्र सरकार और संसद दोनों के लिए जवाबदेही और पारदर्शिता की कसौटी होता है।केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी 2026 को लोकसभा में वित्त वर्ष 2026-27 का आम बजट पेश करेंगी। यह क्षण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनका एक और बजट होगा, जिसमें उनसे न केवल राजकोषीय अनुशासन बल्कि मिडिल क्लास, नौकरीपेशा वर्ग, किसानों, स्टार्टअप्स और उद्योग जगत के बीच संतुलन साधने की अपेक्षा की जा रही है। भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्था में बजट के हर प्रावधान का सीधा असर घरेलू मांग, निवेश वातावरण और वैश्विक भरोसे पर पड़ता है।

साथियों बात अगर हम टैक्सपेयर्स की उम्मीदें: बजट का सबसे संवेदनशील पक्ष इसको समझने की करें तो,हर बजट में अगर किसी एक वर्ग की निगाहें सबसे अधिक वित्तमंत्री के भाषण पर टिकी होती हैं, तो वह है टैक्सपेयर्स विशेषकर मिडिल क्लास और नौकरीपेशा लोग। महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रिटायरमेंट की बढ़ती लागत के बीच यह वर्ग वर्षों से यह महसूस करता आया है कि आर्थिक विकास का सबसे बड़ा बोझ उसी के कंधों पर है। इसलिए बजट 2026-27 में इनकम टैक्स से जुड़ी घोषणाएं केवल वित्तीय नहीं,बल्कि सामाजिकराजनीतिक संदेश भी होंगी।

साथियों बात अगर हमस्टॉक मार्केट की तैयारी:बजट और निवेशकों का संबंध इसको समझने की करें तो बजट 2026- 27 का असर केवल आम नागरिकों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसका सीधा प्रभाव शेयर बाजार और पूंजी बाजार पर भी पड़ेगा। स्टॉक एक्सचेंजों ने संकेत दे दिए हैं कि यदि 1 फरवरी को बजट रविवार के दिन पेश किया जाता है,तो उस दिन स्पेशल ट्रेडिंग सेशनआयोजित किया जाएगा। यह व्यवस्था दर्शाती है कि बजट घोषणाओं को बाजार कितनी गंभीरता से लेता है। टैक्स सुधार, पूंजीगत लाभ कर, टीडीएस नियम और निवेश प्रोत्साहन जैसे प्रावधान बाजार की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

साथियों बात अगर हम नया इन्कम टैक्स एक्ट 2025 एक युग का अंत, दूसरे की शुरुआत को समझने की करें तो, यूनियन बजट 2026-27 को ऐतिहासिक बनाने वाला सबसे बड़ा कारण यह है कि यह 60 साल पुराने आयकर कानून के अंत से पहले का अंतिम पूर्ण बजट होगा। सरकार 1 अप्रैल 2026 से नया इन्कम टैक्स एक्ट 2025 लागू करने जा रही है, जो मौजूदा जटिल विवादग्रस्त और बार-बार संशोधित कानून की जगह लेगा। ऐसे में बजट 2026-27 केवल मौजूदा वित्तीय जरूरतों का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि आने वाले टैक्स सिस्टम की बुनियाद भी रखेगा।

साथियों बात अगर हम टैक्सपेयर्स की 5 बड़ी उम्मीदें: क्या मिडिल क्लास की खुलेगी किस्मत? इसको समझने की करें तो(1) धारा 80सी और 80डी की सीमा में वृद्धि : बचत और सुरक्षा का सवाल-धारा 80सी के तहत ₹1.5 लाख की कर छूट सीमा वर्षों से अपरिवर्तित है, जबकि इस अवधि में महंगाई, आय स्तर और जीवन-शैली खर्चों में भारी वृद्धि हुई है। इसी प्रकार 80डी के तहत स्वास्थ्य बीमा पर मिलने वाली छूट भी आज की चिकित्सा लागत के मुकाबले अपर्याप्त प्रतीत होती है। टैक्सपेयर्स की प्रमुख मांग है कि इन सीमाओं को यथार्थवादी स्तर तक बढ़ाया जाए, ताकि लंबी अवधि की बचत, बीमा कवरेज और सामाजिक सुरक्षा को प्रोत्साहन मिल सके।(2)लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स में राहत:निवेशसंस्कृति को बढ़ावा-भारत सरकार निवेश आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना चाहती है, लेकिन लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन (एलटीसीजी) टैक्स की मौजूदा संरचना कई निवेशकों को हतोत्साहित करती है। टैक्सपेयर्स की अपेक्षा है कि या तो इसकी आय सीमा बढ़ाई जाए, या फिर छोटे और मध्यम निवेशकों को अतिरिक्त राहत दी जाए।इससे घरेलू निवेश, रिटेल पार्टिसिपेशन और पूंजी बाजार की गहराई बढ़ सकती है, जो वैश्विक निवेशकों के लिए भी सकारात्मक संकेत होगा।(3) टीडीएस सीमा में वृद्धि:नकदी प्रवाह और अनुपालन की सरलता-टीडीएस (टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स) व्यवस्था का उद्देश्य टैक्स संग्रह को आसान बनाना है, लेकिन अत्यधिक कम सीमाएं कई बार अनावश्यक अनुपालन बोझ पैदा करती हैं।वरिष्ठ नागरिकों, फ्रीलांसर्स और छोटे करदाताओं की मांग है कि विभिन्न श्रेणियों में टीडीएस की सीमा बढ़ाई जाए, जिससे नकदी प्रवाह सुधरे और रिफंड- आधारित टैक्स सिस्टम पर निर्भरता कम हो।(4)नए इनकम टैक्स कानून में सरल संरचना : जटिलता से मुक्ति-इन्कम टैक्स एक्ट 2025 से सबसेबड़ी उम्मीद यह है कि यह सरल, स्पष्ट और विवाद-मुक्त होगा। बजट 2026-27 में सरकार से अपेक्षा है कि वह इस नए कानून की संरचना को स्पष्ट संकेतों के माध्यम से पेश करे जैसे कम धाराएं,सरल भाषा, डिजिटल- फ्रेंडली अनुपालन और न्यूनतम व्याख्यात्मक विवाद। यह सुधार भारत की ईजी ऑफ़ डूइंग बिज़नेस रैंकिंग और वैश्विक टैक्स छवि को भी मजबूत करेगा। (5) विवाद समाधान और टैक्स आतंक से मुक्ति-पिछले वर्षों में सरकार ने 'टैक्स टेररिज़्म' की धारणा को समाप्त करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर अब भी लंबे विवाद, अपीलें और मुकदमेबाज़ी टैक्सपेयर्स के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं। बजट 2026-27 से अपेक्षा है कि इसमें तेज़, पारदर्शी और तकनीक- आधारित विवाद समाधान तंत्र को और मजबूत किया जाएगा।

साथियों बात अगर हम इस बजट को दो एंगल मिडिल क्लास व शेयर बाजार केंद्रित से समझने की करें तो (1) मिडिल क्लास केंद्रित आय, बचत और जीवन- स्तर की कसौटी-बजट 2026- 27 मिडिल क्लास के लिए इसलिए निर्णायक है क्योंकि यह नए इनकम टैक्स कानून से पहले का अंतिम पूर्ण बजट है।नौकरी पेशा और मध्यम आय वर्ग की प्रमुख अपेक्षा यह है कि बढ़ती महंगाई, शिक्षा-स्वास्थ्य खर्च और रिटायरमेंट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इनकम टैक्स ढांचे में वास्तविक राहत दी जाए। विशेष रूप से धारा 80सी और 80डी की सीमाओं में वृद्धि मिडिल क्लास के लिए केवल टैक्स लाभ नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा का साधन मानी जा रही है।यदि बजट में कर-छूट या टैक्स स्लैब में संतुलित सुधार होता है, तो इसका सीधा असर घरेलू खपत पर पड़ेगा। ऑटो, आवास, उपभोक्ता वस्तुएँ और सेवाएँ, ये सभी सेक्टर मिडिल क्लास की डिस्पोज़ेबल इनकम से चलते हैं। इसलिए बजट 2026-27मिडिल क्लास के लिए इस प्रश्न का उत्तर देगा कि क्या सरकार उसे केवल टैक्स बेस के रूप में देखती है या आर्थिक विकास का इंजन मानती है।(2) शेयर बाजार केंद्रित-भरोसा,स्थिरता और दीर्घकालिकसंकेत-शेयर बाजार के लिए बजट 2026-27 अल्पकालिक उतार-चढ़ाव से अधिक नीतिगत दिशा और टैक्स स्थिरता का दस्तावेज़ है।निवेशकों की प्राथमिक अपेक्षा यह है कि कैपिटल गेन टैक्स, टीडीएस और कॉरपोरेट टैक्स से जुड़े संकेत स्पष्ट और पूर्वानुमेय हों। टैक्स अनिश्चितता बाजार को कमजोर करती है, जबकि स्थिरता दीर्घकालिक निवेश को आकर्षित करती है। यदि बजट में राजकोषीय अनुशासन के साथ कैपेक्स और इंफ्रास्ट्रक्चर खर्च को प्राथमिकता दी जाती है, तो यह कैपिटल गुड्स, बैंकिंग और इंडस्ट्रियल सेक्टर के लिए सकारात्मक ट्रिगर होगा। साथ ही,नए इन्कम टैक्स एक्ट 2025 को लेकर स्पष्ट रोडमैप शेयर बाजार को यह संकेत देगा कि भारत का पूंजी बाजार नियम- आधारित और निवेश-अनुकूल दिशा में आगे बढ़ रहा है।

साथियों बात अगर हम वैश्विक स्तरपर देखें तो भारत आज विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है ऐसे में बजट 2026-27 न केवल घरेलूनीति का दस्तावेज़ होगा, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय निवेशकों रेटिंग एजेंसियों और बहुपक्षीय संस्थाओं के लिए भी एक संकेतक बनेगा। टैक्स सुधार, कानून की स्थिरता और नीतिगत स्पष्टता भारत को चीन के बाद एक विश्वसनीय निवेश गंतव्य के रूप में और मजबूत कर सकती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि एक बजट, कई उम्मीदें,एक ऐतिहासिक मोड़ है बजट 2026-27 एक साधारण वार्षिक बजट नहीं है। यह पुराने टैक्स युग से नए टैक्स युग की दहलीज पर खड़ा बजट है। यह मिडिल क्लास की वर्षों पुरानी अपेक्षाओं निवेशकों की आकांक्षाओं और सरकार की सुधारवादी छवि, तीनों की परीक्षा लेगा।यदि यह बजट संतुलित, दूरदर्शी और संवेदनशील रहा, तो यह भारत की आर्थिक यात्रा में एक निर्णायक मील का पत्थर साबित हो सकता है।

नक्सलवाद के खिलाफ जंग में बड़ी कामयाबी

कुमार कृष्णन

बिहार में नक्सलवाद के खिलाफ सुरक्षाबलों को एक और बड़ी कामयाबी मिली है। इसे नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में बड़ी सफलता के रूप में देखा जा रहा है ।मुंगेर के हवेली खड़गपुर में बिहार के पुलिस महानिदेशक विनय कुमार और अपर पुलिस महानिदेशक विधि व्यवस्था ऑर्डर कुंदन कृष्णन के सामने तीन इनामी नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटने का फैसला किया है ।मुंगेर जिले के हवेली खड़गपुर स्थित एक कॉलेज मैदान में आयोजित समर्पण समारोह में प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) के तीन सक्रिय नक्सलियों ने बिहार पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। सरेंडर करने वालों में दो नक्सली ऐसे हैं जिन पर सरकार ने 3-3 लाख रुपये का इनाम घोषित कर रखा था।

बिहार पुलिस के महानिदेशक विनय कुमार की मौजूदगी में तीन नक्सलियों नारायण कोड़ा, बहादुर कोड़ा और विनोद कोड़ा ने हथियार डाल दिए।

नारायण कोडाः यह पीएलजीए का जोनल कमांडर था। बिहार सरकार ने इसकी गिरफ्तारी पर 3 लाख रुपये का इनाम रखा था। इसके खिलाफ मुंगेर, लखीसराय और जमुई में लगभग दो दर्जन मामले दर्ज हैं।

बहादुर कोडाः पीएलजीए के सब-जोनल कमांडर के पद पर सक्रिय था। इस पर भी 3 लाख रुपये का सरकारी इनाम था। इस पर भी दो दर्जन के करीब संगीन मामले दर्ज हैं।

विनोद कोडाः यह सशस्त्र दस्ते का सदस्य है। इसके खिलाफ लखीसराय जिले में तीन मामले दर्ज हैं।

जमुई का कुछ हिस्सा झारखंड से लगता है। ऐसे में ये तीनों नक्सली बिहार में वारदात के बाद झारखंड भाग जाते थे। जब झारखंड में कुछ होता था तो बिहार चले आते थे।

बिहार पुलिस के आधिकारिक बयान के अनुसार, 'आत्मसमर्पण के दौरान, नक्सलियों ने बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद भी सौंपे, जिसमें दो 5.56 एमएम इनसास राइफलें, चार 7.62 एम एम एस एल आर राइफलें, 150 राउंड 5.56 एम एम जिंदा कारतूस, 353 राउंड 7.62 एम एम जिंदा कारतूस, और बम/बम डेटोनेटर के साथ-साथ अन्य सामान शामिल हैं।'

सरकार की 'आत्मसमर्पण-सह-पुनर्वास नीति' के तहत इन नक्सलियों को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। बिहार पुलिस द्वारा जारी प्रेस नोट के अनुसार- प्रत्येक को 2.5 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि दी गई। साथ ही इनामी नक्सलियों के परिवार को 3 लाख रुपये की इनामी राशि मिलेगी।

बिहार पुलिस के मुताबकि, रोजगारपरक प्रशिक्षण के लिए 36 महीनों तक 10,000 रुपये प्रति माह (कुल 3.6 लाख रुपये) भी दिए जाएंगे। वहीं सरेंडर के दौरान जो हथियार नकस्लियों ने दिए हैं, उनके बदले में 1.11 लाख रुपये की अतिरिक्त राशि भी उन्हें दी जाएगी। इसके अलावा सरेंडर करने वाले नकस्लियों को आवास, राशन, आयुष्मान स्वास्थ्य योजना, शिक्षा और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिलेगा।

बिहार के पुलिस महानिदेशक विनय कुमार ने कहा कि वामपंथी उग्रवाद की जो समस्या थी भारत में, उसमें प्रत्येक राज्य ने काफी तेजी से उपलब्धियां हासिल की हैं। जिन इलाकों में वामपंथी उग्रवाद की काफी गंभीर समस्या थी, उन इलाकों में काफी सारे इलाके से उग्रवाद समाप्त हुए हैं।

बिहार पहला राज्य है जहां पर बड़ी तेजी से नक्सलवाद खत्म हुआ ।बिहार में 2005 के बाद से ही पटना, जहानाबाद, अरवल वगैरह जिला पूरी तरीके से नक्सल मुक्त हो गए ।धीरे-धीरे हम लोगों ने जो 23 जिले हमारे अति उग्रवाद प्रभावित थे, वो शून्य हो गए। अभी 4 जिले मात्र हैं, जो 'लीगेसी एंड थ्रस्ट' जिले हैं। मतलब वो उग्रवाद प्रभावित नहीं है, लेकिन हम लोग निगरानी रख रहे हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जो उग्रवाद प्रभावित इलाके थे, उनमें विकास की परियोजनाओं का इतना विकास हुआ है कि नक्सलवाद खत्म हो गया। वहां पर आप अभी जाएंगे, तो वहां एक से एक विकास की परियोजनाएं हैं ।वहां सड़क, एक्सप्रेसवे, नेशनल हाईवे वगैरह की स्थापना हुई है ।स्किल डेवलपमेंट किया गया है, स्कूल-कॉलेज स्थापित हुए हैं। तो विकास की परियोजनाओं को इस प्रकार से वहां पर लाया गया है कि वहां के जो युवा वर्ग हैं, जो उग्रवाद की ओर उन्मुख हो गए थे, वे मुख्यधारा में आ गए हैं ।पंचायती राज संस्थाओं से युवा जुड़े हैं और क्षेत्र के विकास में काफी रुचि ले रहे हैं।

पुलिस महानिदेशक के अनुसार मुंगेर के हवेली खड़गपुर भीमबांध का जो क्षेत्र था, खड़गपुर हिल्स का क्षेत्र था, यहां 2007 में यहां पर पूरी केंद्रीय कमेटी आई थी और इनका कांग्रेस (अधिवेशन) हुआ था. तो यह इलाका भी काफी प्रभावित था, यहां पर कई गंभीर घटनाएं भी हुई थीं ।तो यह इलाका भी अब पूर्ण रूप से कहें कि एकदम ही नगण्य एक-दो लोग बच गए हैं और सभी जो सक्रिय सदस्य थे उग्रवाद संगठन के, उन सभी या तो गिरफ्तार हुए हैं, आत्मसमर्पण हुए हैं और पूरा इलाका यह क्लियर हो चुका है ।अब क्लियर होने के बाद हमारा सबसे बड़ा यह उद्देश्य है कि उस इलाके को विकसित कराया जाए।"

विनय कुमार ने कहा कि विभिन्न प्रकार की योजनाओं से, पर्यटन की योजनाएं हों, विकास की योजनाएं हों, इनसे उस इलाके को इस प्रकार से सैचुरेट किया जाए कि वहां के लोग समझें कि सरकार की जबरदस्त वहां उपस्थिति है, प्रशासन की जबरदस्त उपस्थिति है. किसी प्रकार की शून्यता नहीं है, कोई वैक्यूम नहीं है. आज की तिथि में इतनी योजनाएं हैं, इतनी सारी योजनाएं हैं, तो उन योजनाओं को सफलतापूर्वक वहां पर कार्यान्वित किया जाएगा और इलाके को पूरी तरीके से विकास से जोड़ा जाएगा ।काफी वहां पर चंद वर्षों में ही आपको दिखेगा कि पूरा खड़गपुर इलाका जो है, वह पर्यटन और हर दृष्टिकोण से काफी विकसित होगा।

वहीं बिहार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि सबको मुख्य धारा में आना चाहिए। बिहार के विकास में एक-एक व्यक्ति की ज़रूरत है और हमारा जो पैकेज है, उनको सहयोग भी किया गया।

व्यंग्य : सबको रस देगा 2026 राशिफल

डा. विनोद बब्बर

नया साल क्या होता है, क्यों होता है, इस झमेले में पड़े बिना हम सभी कोई न कोई ऐसा काम करना चाहते हैं जिससे ज्यादा से ज्यादा प्रचार मिले। और हाँ, हम भारतीयों के दो गुण अन्यत्र दुर्लभ हैं। पहला- हर सुबह अखबार हाथ आते ही सबसे अपना राशिफल देखना और दूसरा- नकल करना। परम्पराएँ टूटने के दौर में हमारी सलाह है कि इन दोनो गुणों की रक्षा के लिए कमर कसे रखनी चाहिए। सबसे पहले प्रस्तुत है नये साल का राशिफल। पर ध्यान रहे, इसे पढ़ने से पहले यह जान लें कि जिसकी जेब में राशि होती है उसे फल आसानी से मिल जाता है। (बशर्ते फल की इच्छा रखें)

प्रथम जनवरी भारत में आम दिनों की तरह बीतेगी लेकिन इण्डिया के सभी जन, वरी को भूल मस्ती के मुड में दिखाई देंगे। शराब संग कबाब की बिक्री बढ़ेगी लेकिन मुंगफली रेवड़ी की मांग में कमी आ सकती है। जनवरी में लेट चलने वाली गाड़ियां इंतजार- ए-यार का मजा प्रदान करती रहेंगी। कोहरा दुर्घटनाओं में सहायक बना रहेगा। लोहड़ी और मकर संक्रांति से ज्यादा धूम उन महोत्सवों की होगी जो पंचसितारा होटलों और फार्म हाऊसों में आयोजित किये जाएगे। मेले में जिस 'पिछड़े हुए' को जाना होगा जायेगा, 'उन्नत किस्म के प्राणी' तो यहीं मदिरा मिलन करेंगे। इस बार भी इन विशिष्ट (?) आयोजनों में आम का प्रवेश निषेध बना रहेगा। खास की विशेष प्रतीक्षा जारी रहेगी।

फाइव डे वीक दफ्तरों के बाबू बसंत की गणतंत्र दिवस से निकटता काभरपूर लाभ लेते हुए देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों को नमन करने की बजाय इकट्ठी चार दिन की छुट्टी अपनी खास अंदाज में मनाएंगे।

फरवरी में 'वरी' फिर से फर-फराने लगेगी। क्योंकि हमेशा फरवरी में मनाये जाने वाले बसंत को उससे छीनकर जनवरी में पहुंचा दिया गया है। वैसे भी सरस्वती पूजा और वीर हकीकतराय का बलिदान दिवस याद ही कितने लोगों को रहता है। पर सात फेरो के फेर में पड़ने जोड़े इस दिन को शायद ही कभी भुला सकेंगे। पर हां, फरवरी की पहचान बन चुके 14 का स्मरण बार-बार कराया जायेगा। प्रेम 'व्यापारी' चिंता करेंगे कि थोक में अच्छे फूल कहां से सस्ते ले? किस- मिस को भेंट करें और किस मिस को मिस करें। फरवरी है तो बजट पूर्व खरीददारी के विज्ञापन खूब ललचायेंगे। पर बंदा 'रोज' नहीं रोज की जरूरतों की बंदगी करेगा। वेलेन्टाइन डे के मर्यादा रहित स्वच्छंद नशे की ओर लपकने वालों का विरोध पिछड़ापन, रुढ़िवाद, कट्टरता घोषित होगा। संसद से सड़क तक प्यार करने वालों से की गई ज्यादतियों के लिए सरकार को जिम्मेवार ठहराया जायेगा। फरवरी में ही हंगामें के बीच वित्त मंत्राणी जी पूरी ठसक के साथ बजट पेश करेंगी। राहतों की बौछार होगी। जय किसान से जय युवा तक गूंजेगा। गब्बर सिंह टैक्स के रूप में कुख्यात किए गए जीएसटी का दंश फिर कम हो सकता है। कुछ नई रेल चलने से कुछ नई लाइनों के विस्तार की सदाबहार पंक्तियांइस बार भी संसद में गूंजेगी। सरकार की लाख कोशिशें के बावजूद विपक्ष बजट को जनविरोधी साबित करने में कोई मुरब्बत नहीं बरतेगा।

मार्च में विपक्ष देश की राजधानी से प्रदेश की राजधानियों तक धरना, प्रदर्शन, मार्च करेगा। बहाना वही पुराना, जनविरोधी बजट का विरोध। संसद और विधानसभाओं में हंगामे के दृश्य देखने को मिलेगे। अनेक ऐसे अवसर भी होगे जब ओलम्पिक, कामन वेल्थ आदि खेलों में अवसर न मिलने के कारण मुक्केबाजी का स्वर्ण पदक जीतने से वंचित रहे नेता अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेगे।

अप्रैल में नई फसल आने पर किसानों के लिए चार दिन की चांदनी रहेगी। पर पुराना कर्ज से छुटकारे की चिंता बनी रहेगी। चुनाव प्रचार में किसानों मजदूरों की चिंता में हर दल के नेता समान रूप से भाषणवीर बने रहेंगे। वादों की भरमार होगी। आरोप- प्रत्यारोप का सुनामी भारतीय आकाश को गुंजायेगा। रही सही कसर टिकट न पाने वाले बागी पूरी करेंगे। पप्पू- गप्पू एक बार फिर लोकप्रियता की कसौटी पर कसे जायेगे। अपनी असफलता पर वे हमेशा की तरह वोट चोरी और पीडीए का जाप जारी रखेंगे। गठबंधन की गांठे ढ़ीली होगी पर ठगबंधन मजबूती से चलता रहेगा।

मई विशेष होगा। स्कूल कॉलेज में दाखिले की भीड़ नोटा की तरह चर्चा का ग्राफ बढ़ाएगी। जहां कहीं भी चुनावआसपास होंगे वहाँ ईवीएम निशाने पर होगी। जोड़ - तोड़ की मंडी सजेगी। विश्लेषको की पौ बारह होगी। जीतने वाले की नैतिक हार और हारने वाले के मत प्रतिशत की चिंता हर चैनल पर होगी। कुछ को मंत्री पद तो कुछ को वनवास मिलेगा तो शेष अपने कीर्तनी जत्थे चलाते रहेंगे।

समीक्षा : "यादें नीरज की जन्मशताब्दी विशेषांक"

महामना नीरज : शब्दों में अवतरण,स्मृतियों में अनंत

डॉ. शंभु पंवार

समीक्षक:डॉ.शंभु पंवार

हिंदी गीत–परंपरा के सूर्य, पद्मभूषण महामना गीतऋषि गोपाल दास 'नीरज' का व्यक्तित्व और कृतित्व भारतीय साहित्य की ऐसी अमूल्य धरोहर है, जिसकी आभा समय की सीमाओं से परे है। उनके गीत केवल शब्दों की संरचना नहीं, बल्कि जीवन के राग–विराग, प्रेम–वेदना, दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत दस्तावेज़ हैं। नीरज जी के जन्म शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर दिल्ली की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था गीतांजलि काव्य प्रसार मंच द्वारा प्रकाशित मंच की पत्रिका 'नीरज कुंज' का विशेषांक "यादें नीरज की" इसी भावभूमि पर आधारित एक सार्थक और स्मरणीय साहित्यिक प्रयास है, जो महामना नीरज जी को सच्ची साहित्यिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।पत्रिका की संपादक डॉ.गीतांजलि नीरज अरोड़ा गीत ने इस विशेषांक को नीरज जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित किया है जिसमें

साहित्यकारों,समीक्षकों ओर रचनाकारों के आलेख,कविताएं और संस्मरण संकलित कर बहुत सुंदर ओर सराहनीय प्रयास किए है ।यह अंक न केवल महामना को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, बल्कि उनकी काव्य धारा से नई पीढ़ी को भी जोड़ने का कार्य करेगा।

गीतांजलि काव्य प्रसार मंच दिल्ली द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'नीरज कुंज' का विशेषांक "यादें नीरज की" नीरज जी के जन्म शताब्दी वर्ष पर एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज़ के रूप में सामने आया है। इस विशेषांक में देश–विदेश के 33 रचनाकारों ने नीरज जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनसे जुड़े संस्मरणों के माध्यम से अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की है। यह अंक न केवल नीरज जी के साहित्यिक अवदान को रेखांकित करता है, बल्कि उनके मानवीय, सरल और प्रेरक व्यक्तित्व को भी उजागर करता है।

गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष, वरिष्ठ लेखिका, साहित्यकार एवं संपादक डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' ने अपने उद्गारों में कहा कि नीरज जी के गीत अमर हैं। उनका ऐसा कोई गीत नहीं जो आमजन के जीवन से जुड़ा न हो। उनके गीत कभी मार्गदर्शन बनकर जीवन की राह दिखाते हैं तो कभी स्मृतियों में सुनहरी यादों की तरह बस जाते हैं। उन्होंने नीरज जी का चर्चित गीत—

"फूलों के रस से, दिल की कलम से, तुझको लिखी रोज पाती"

का उल्लेख करते हुए इसे अपने जीवन का अत्यंत प्रिय गीत बताया, जो उनके लिए भावनात्मक धरोहर बन गया।

आकाशवाणी के सहायक निदेशक एवं प्रसिद्ध ग़ज़लकार रामावतार बैरवा ने नीरज जी से साक्षात्कार के सौभाग्य को साझा करते हुए कहा कि नीरज जी का जन्म नहीं, अवतरण हुआ था। गीत–लेखन और उसकी प्रस्तुति में बीती सदी में नीरज जी का कोई सानी नहीं था; वर्तमान सदी केवल उनका अनुकरण करती रह गई।

प्रख्यात अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार डॉ. सविता चढ्ढा ने कहा कि गोपाल दास नीरज जी का नाम सदियों तक स्मरणीय रहेगा। साहित्य और फिल्मी जगत में लिखे उनके गीत जनमानस के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। 'मेरा नाम जोकर' फिल्म का गीत—

"ए भाई ज़रा देख के चलो"

आज भी हर पीढ़ी की जुबान पर सहजता से आ जाता है।

हिंदी और संस्कृत की विदुषी साहित्यकार डॉ. पुष्पा जोशी ने नीरज जी को 'युग–पुरुष' बताते हुए कहा कि उन्होंने अनेक संघर्षों के बीच विश्व–स्तरीय ख्याति अर्जित की और एक शिक्षक, कवि व गीतकार के रूप में भारत का मान विदेशों में भी फहराया। उनके सान्निध्य, सादगी और मधुर व्यक्तित्व से उन्हें गहन प्रेरणा मिली।

वरिष्ठ दोहाकार डॉ. मनोज कामदेव के अनुसार नीरज जी पर लिखना सूरज को दिया दिखाने जैसा है। हिंदी गीत–साहित्य में प्रेम, श्रृंगार, करुणा, जीवन–दर्शन और देश–प्रेम को जिस ऊँचाई पर नीरज जी ने पहुँचाया, वह अद्वितीय है। 'प्रेम पुजारी' फिल्म का गीत—

"शोखियों में घोला जाए फूलों का शबाब"

इसका सशक्त उदाहरण है।

वरिष्ठ लेखिका ममता सोनी ने नीरज जी को 'शब्दों का साधक' बताया, जिन्होंने प्रेम, वेदना, समाज और जीवन के हर रंग को अपनी रचनाओं में इस तरह पिरोया कि वे हर युग में ताज़गी से भरपूर प्रतीत होते हैं।

साहित्यकार रश्मि भटनागर ने नीरज जी को मां शारदे के आशीष से उदित वह सूर्य कहा, जिसकी लेखनी और वाणी ने प्रेम के प्रकाश से पूरे संसार को आलोकित किया।

इसके अतिरिक्त मृत्युंजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ. इलाज जायसवाल सहित अनेक विद्वानों ने नीरज जी को मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत शिल्पी, भावनाओं की कोमलता और विचारों की गहराई का प्रतीक बताया। इस विशेषांक में जयवीर सिंह अत्री, डॉ. शंभु पंवार, रजनी बाला, पुनीता सिंह, डॉ. सुमन मोहिनी, अर्चना शर्मा, संध्या सेठ, डॉ. कामना मिश्रा, सुकृति श्रीवास्तव, डॉ. नूतन शर्मा नवल, सोनिया सरीन, अर्पणा भटनागर, डॉ. पुष्पलता सिंह 'पुष्प', सरिता विजय शर्मा, संगीता वर्मा, शशीकरण श्रीवास्तव, रूबी सोम, डॉ. कविता मल्होत्रा, नीरज मेहता कमलिनी, सुनीता अग्रवाल, डॉ. सूक्ष्मलता महाजन, मीनाक्षी सुकुमारन, शकुंतला मित्तल, स्वाति पूजा, कुमारी ममता सहित अनेक रचनाकारों की रचनाएँ नीरज जी के प्रति भावपूर्ण नमन हैं। पत्रिका के इस महत्वपूर्व विशेषांक का कुशल संपादन डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा ने किया ।कुल मिलाकर "यादें नीरज की" विशेषांक नीरज जी के साहित्यिक अवदान, उनके मानवीय स्वरूप और स्मृतियों को सहेजने का एक सार्थक, गरिमामय और संग्रहणीय प्रयास है, जो हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा।

समीक्षक
डॉ. शंभु पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अंतराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

हरदा मध्य प्रदेश में

मशहूर शायर साहिर लुधियानवी के गीत की ये पंक्तियाँ,,

मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया
हर फ़िक्र को धुएँ में उड़ाता चला गया।
जो मिल गया उसी को मुक़द्दर समझ लिया
जो खो गया मैं उस को भुलाता चला गया।

जीवन की एक गहरी सच्चाई को बयान करती हैं। ये शेर हमें सिखाता है कि ज़िंदगी एक लंबी यात्रा है, जिसमें हम हर मोड़ पर जो कुछ पाते हैं, उसे ही अपना भाग्य मानकर स्वीकार कर लेते हैं। ये भाव न सिर्फ़ कविता का हिस्सा है, बल्कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी का सार भी है। आज के भागदौड़ भरे दौर में, जब हर कोई परफ़ेक्ट लाइफ़ की तलाश में भटक रहा है, ये पंक्तियाँ हमें वर्तमान में जीने की सीख देती हैं। ज़िंदगी का साथ निभाना,स्वीकार्यता की ताक़त ज़िंदगी हमें कभी वैसा नहीं देती जैसा हम सपने बुनते हैं। कभी अपनों का साथ मिलता है, तो कभी अकेलापन,कभी कामयाबी का स्वाद चखाते हैं, तो कभी नाकामी का कड़वा घूंट। लेकिन सच्ची हिम्मत तो इस सबको निभाने में है। ₹ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया₹ यानी हर उतार-चढ़ाव को बिना शिकायत के अपनाना। सोचिए, एक किसान जो बारिश न हो तो भी बीज बोता रहता है, या एक माँ जो बीमार बच्चे की सेवा में रात-दिन एक कर देती है। ये लोग मुक़द्दर को कोसते नहीं, बल्कि जो मिला है उसी में खुशियाँ तलाश लेते हैं। आज की पीढ़ी सोशल मीडिया पर दूसरों की चमकती ज़िंदगियाँ देखकर अपनी परेशान होती है, लेकिन असली सुकून तो वही है जो मिला है, उसे पूरा निभाने में मिलता है। मनोविज्ञान में इसे ₹ग्रेटिट्यूड₹ कहते हैं जो मिला है, उसके लिए शुक्रगुज़ार होना। ये भाव हमें तनाव से मुक्ति देता है और जीवन को सरल बनाता है। जो मिला, उसी को मुक़द्दर समझना, व्यावहारिक सबक ₹जो मिल गया उसी को मुक़द्दर समझ लिया₹ ये पंक्ति भाग्यवाद नहीं, बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण सिखाती है। ज़िंदगी में रिश्ते, नौकरी, स्वास्थ्य सब कुछ परिवर्तनशील है। हमेशा ₹बेहतर₹ की चाह में वर्तमान को खो देते हैं। उदाहरण लीजिए, एक नौकरी जो पसंद न हो, लेकिन परिवार चलाने वाली होती है, और इसे मुक़द्दर मानकर निभाइए, तो नई संभावनाएँ खुद खुलेंगी। भारतीय संस्कृति में भी ये भाव गहरा है। भगवद्गीता का ₹कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन₹ यही कहता है , कर्म करो, फल की चिंता मत करो। आधुनिक उदाहरण,असफलता के बाद भी हार न मानना और जो मिला, उसी को निभाना। आम आदमी के लिए ये मतलब है ,छोटी-छोटी खुशियों को अपनाना। अगर साथी वैसा न हो जैसा सोचा, तो जो है उसी में प्यार ढूंढो,अगर कम कमाई हो, तो उसी में संतोष रखो। इससे न केवल मन शांत रहता है, बल्कि रिश्ते मज़बूत होते हैं। आज के दौर में इस भाव का महत्व ,आज महंगाई, बेरोज़गारी और रिश्तों की जटिलताओं के बीच ये शेर एक मंत्र की तरह काम करता है। युवा डिप्रेशन से जूझ रहे हैं क्योंकि ₹परफ़ेक्टर₹ की दौड़ में हैं। लेकिन जो मिला है, उसे निभाने से आत्मविश्वास बढ़ता है।

उमर खालिद, शरजील इमाम पर विपक्ष को रुख तय करना चाहिए

(आलेख : बृंदा करात, अनुवाद : संजय पराते)

सुप्रीम कोर्ट का उमर खालिद और शरजील इमाम को ज़मानत देने से इंकार कर दिया है, जबकि उसी मामले में पांच अन्य आरोपियों की ज़मानत याचिकाएं मंजूर कर ली है। यह सिर्फ़ दो लोगों को प्रभावित करने वाला न्यायिक आदेश नहीं है। यह भारत में संवैधानिक लोकतंत्र के लिए एक बहुत ही संकट पैदा करने वाला मामला है। जबकि सत्ताधारी पार्टी, उसकी ज़हरीकी ट्रोल सेना और व्यापक मीडिया की बंधक पारिस्थितिकी इस अन्यायपूर्ण और दूरगामी आदेश का जश्न मना रही है, वामपंथी पार्टियों को छोड़कर मुख्यधारा के ज़्यादातर विपक्ष की राजनीतिक चुप्पी -- साफ़ दिखती है और इस पर सवाल उठाया जाना चाहिए।

यह आदेश एक ऐसे पैटर्न को मज़बूत करता है, जिसमें असाधारण कानूनों, खासकर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) को, ₹राष्ट्रीय सुरक्षा₹ की रक्षा के घोषित लक्ष्य के लिए इस्तेमाल करने के बजाय, असंतुष्टों को लंबे समय तक जेल में रखने के साधन के तौर पर सामान्य बना दिया गया है। न्यायमूर्ति अरविंद कुमार और एन वी अंजारिया की पीठ ने अभियोजन पक्ष के प्रथम दृष्टया संलिप्तता के दावे को स्वीकार किया है और कहा है कि खालिद और इमाम अन्य आरोपियों से ₹गुणात्मक रूप से अलग स्थिति₹ में है।

विडंबना यह है कि एकमात्र साफ़ अंतर यह है कि हिंसा के दौरान उनमें से कोई भी दिल्ली में मौजूद नहीं था। इमाम पहले से ही न्यायिक हिरासत में था, उसे जनवरी में -- दिल्ली हिंसा से लगभग एक महीने पहले -- भड़काऊ भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। खालिद कहीं और था। इन तथ्यों को, जिनसे किसी भी कथित साज़िश में उनकी गैर-भागीदारी का मामला मज़बूत होना चाहिए था, उल्टा कर दिया गया, और हिंसा वाली जगह पर उनकी गैर-मौजूदगी को गलत तरीके से साज़िश रचने के सबूत के तौर पर पेश किया गया।

अपने आदेश में, कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के पहले के दिए गए उन फैसलों के तर्क को पलट दिया है, जिनमें यूएपीए के तहत जमानत देने के मामले में ज़्यादा संतुलित नज़रिया अपनाया गया था। यह आदेश कानून के पहले से ही सख्त स्वभाव में नए और खतरनाक आयाम जोड़ता है। इस व्याख्या के तहत, किसी को भी हिंसा के किसी भी काम में शामिल होने या सीधे हिंसा भड़काने की ज़रूरत नहीं है। सड़क जाम करने, सार्वजनिक जगहों पर बाधा डालने, या ₹आर्थिक स्थिरता₹ को प्रभावित करने वाले कामों को भी अब आतंकवाद माना जा सकता है।

इस तरह की बड़े दायरे की व्याख्या के तहत, हड़ताल पर जाने वाले मज़दूरों, अपनी ज़मीन में खनन का विरोध करने के लिए सड़कों को जाम करने वाले आदिवासियों, या अपने घरों को गैर-कानूनी तरीके से तोड़े जाने का विरोध करने वाले झुग्गी-झोपड़ीवासियों को यूएपीए के तहत गिरफ्तार किया जा सकता है और आतंकवादी घोषित किया जा सकता है। ऐसे में, संविधान के ₹सुनहरे त्रिकोण₹ -- अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार), अनुच्छेद 19 (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता), और अनुच्छेद 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) -- का क्या बचेगा ? यह व्याख्या एक तानाशाह सरकार के लिए असहमति को देशद्रोह के बराबर मानने और डर और जेल के ज़रिए अपनी नीतियों के किसी भी विरोध को व्यवस्थित रूप से खत्म करने का रास्ता खोलती है।

Umar Khalid, Sharjeel Imam

इस अन्याय की जड़ में एक और कड़वी सच्चाई छिपी हैः शुरुआती सबूत और घटनाओं का असली क्रम बिल्कुल अलग दिशा की ओर इशारा करते हैं। हिंसा की वजह संशोधित नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) का बड़े पैमाने पर विरोध था। यह विरोध मोटे तौर पर, शांतिपूर्ण और धर्मनिरपेक्ष था, और जाति, समुदाय तथा क्षेत्रीय सीमाओं को पार करते हुए अपने फैलाव में अभूतपूर्व था। फरवरी 2020 के पहले हफ़्ते में हुए दिल्ली विधानसभा चुनावों में भाजपा के अभियान का एक मुख्य मुद्दा इस विरोध को कलंकित करना था।

गृह मंत्री के उन भड़काऊ शब्दों को कौन भूल सकता है, जो उन्होंने मतदाताओं से कहा था -- ₹बटन इतनी ज़ोर से दबाओ कि उसका झटका शाहीन बाग तक महसूस हो ।₹ भाजपा चुनाव हार गई। इस हार ने सत्ताधारी पार्टी के नज़रिए से, सीएए-विरोधी आंदोलन को तोड़ने, उसे कलंकित करने और उसे सांप्रदायिक बताने की ज़रूरत को और मज़बूत कर दिया। उस दौरान खालिद, इमाम और दूसरे कार्यकर्ताओं के भाषणों और दूसरी तरफ अनुराग ठाकुर, प्रवेश वर्मा और कपिल मिश्रा जैसे भाजपा नेताओं के भाषणों की तुलना करने पर साफ पता चलता है कि किसके शब्दों ने नफ़रत और हिंसा भड़काई।

इस लेखिका ने इन भाजपा नेताओं के खिलाफ पुलिस में शिकायतें दर्ज कराईं थीं और वीडियो सबूत के साथ कोर्ट में याचिकाएं दायर की थीं। एक भी एफआईआर दर्ज नहीं हुई। न्यायमूर्ति एस मुरलीधर ने एक दूसरी याचिका पर सुनवाई करते हुए और खुले कोर्ट में वीडियो देखने के बाद, नफरत भरे भाषणों के मामलों में एफआईआर दर्ज न करने के लिए दिल्ली पुलिस की आलोचना की थी। इसके तुरंत बाद उनका स्थानांतरण कर दिया गया।

यह हिंसा 23 फरवरी को मिश्रा के भड़काऊ भाषण के बाद शुरू हुई। फिर भी, बचाव के लिए कोई खास कार्रवाई नहीं की गई। इसके उलट, पुलिस के कुछ हिस्सों के दंगाईयों के साथ मिलीभगत के वीडियो सबूत सामने आए। 25 फरवरी को दिल्ली अल्पसंख्यक आयोग ने लेफ्टिनेंट गवर्नर को एक नाराजगी भरा पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने तुरंत कर्फ्यू लगाने की अपील की थी। उसी दिन, तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पुलिस कमिश्नर अमूल्य पटनायक ने गृह मंत्रालय को सुरक्षा बलों की भारी कमी के बारे में बताया था, जो राष्ट्रीय राजधानी में कानून-व्यवस्था के लिए ज़िम्मेदार था।

पुलिस बल की कम तैनाती के लिए कौन ज़िम्मेदार था ? सेना को समय पर तैनात क्यों नहीं किया गया ? कर्फ्यू देर से क्यों लगाया गया, और सिर्फ़ कुछ ही इलाकों तक सीमित क्यों रखा गया ? सरकारी आंकड़ों के अनुसार, मारे गए 53 लोगों में से 41 मुस्लिम थे, और जिनके घर, दुकानें और पूजा स्थल नष्ट हुए, उनमें से भी ज़्यादातर मुस्लिम ही थे। यह सांप्रदायिक हिंसा की पिछली घटनाओं से परेशान करने वाली समानता दिखाती है, जहाँ देरी से या चुनिंदा सरकारी कार्रवाई ने भीड़ को बिना किसी डर के काम करने का मौका दिया।

फिर भी, हमसे यह विश्वास करने को कहा जाता है कि इस हिंसा को 18 लोगों के एक समूह ने योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया, जिनमें से ज़्यादातर युवा छात्र थे। एक और पहलू है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता : सीएए का संवैधानिक आधार पर विरोध करने वाले मुस्लिम कार्यकर्ताओं को कलंकित करना। यूएपीए के तहत आरोपित 18 लोगों में से 16 मुस्लिम हैं, जिनमें तीन महिलाएं भी शामिल हैं। उस समय दायर किए गए लगभग 751 मामलों में से, एक के बाद एक मामले में, निचली अदालतों ने दिल्ली पुलिस को उसकी खराब जांच और संदिग्ध गवाहों के लिए फटकार लगाई है।

विपक्षी पार्टियों — खासकर कांग्रेस — के लिए इन मुद्दों पर साफ़ और लगातार बोलना बहुत ज़रूरी है। एक नियमित शासन प्रणाली में चुप्पी अन्याय में बदल जाती है, खासकर जब उसमें सांप्रदायिक रंग मिला हुआ हो। जब अन्यायपूर्ण अदालती आदेशों को, चुनौती देने में हिचकिचाहट होती है, खासकर यूएपीए जैसे बिना कानूनी आधार वाले कानूनों के ज़रिए किए जा रहे राजनीतिक उत्पीड़न का विरोध करने में हिचकिचाहट होती है, चाहे वह दिल्ली हिंसा के मामलों में हो, भीमा कोरेगांव मुकदमों में हो या न्यूज़क्लिक मामले में, तो सत्ताधारी सरकार को अपने दमन के लिए कोई असली राजनीतिक कीमत नहीं चुकानी पड़ती। ऐसे राजनीतिक माहौल में, स्टेन स्वामी की हिरासत में मौत — जो उनकी गंभीर स्वास्थ्य स्थितियों के बावजूद ज़मानत और बुनियादी सुविधाओं को देने से इंकार करने की क्रूरता के कारण हुई — भी सामान्य बात बन जाती है।

उमर खालिद और शरजील इमाम जैसे मामलों में धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक विपक्षी पार्टियों का साफ़ रुख न अपनाना, लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए चल रही लड़ाई को कमज़ोर करता है।

(सौजन्यः इंडियन एक्सप्रेस ।लेखक माकपा पोलिट ब्यूरो की पूर्व-सदस्य तथा पूर्व सांसद हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

विज्ञान पत्रिका: युवा छात्रों में विकासशील मस्तिष्क की शक्ति

● विजय गर्ग

महामारी, जलवायु परिवर्तन और तीव्र तकनीकी प्रगति से जूझ रहे विश्व में वैज्ञानिक साक्षरता अब वैकल्पिक नहीं रही। विज्ञान पत्रिकाएं युवा पाठकों की मदद करती हैं विश्वसनीय जानकारी और गलत सूचना में अंतर करें महत्वपूर्ण मुद्दों के पीछे मूल सिद्धांतों को समझें विज्ञान और समाज के बारे में सूचित बातचीत में शामिल हों यह साक्षरता युवाओं को नागरिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाती है।

ऐसे युग में जहां सूचना प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और जिज्ञासा नवाचार को प्रेरित करती है, विज्ञान पत्रिकाओं के पास युवा दिमागों को आकार देने की एक अनूठी और परिवर्तनकारी शक्ति है। तथ्यों और खोजों के संग्रह से कहीं आगे, ये प्रकाशन आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और सीखने के लिए आजीवन जुनून का द्वार बनते हैं।

जिज्ञासा और आश्चर्य को प्रज्वलित करना

विज्ञान पत्रिकाओं में जिज्ञासा जगाने की अद्वितीय क्षमता होती है। जब छात्रों को ऐसे लेख मिलते हैं जो ब्रह्मांड के रहस्यों को समझाते हैं, मानव शरीर की आंतरिक कार्यप्रणाली को उजागर करते हैं, या अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का पता लगाते हैं, तो वे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना शुरू कर देते हैं

यह क्यों होता है

यह वास्तविक जीवन में कैसे उपयोग किया जा सकता है

"क्या होगा अगर हम इसे देख सकें

आश्चर्य की यह भावना एक ऐसी मानसिकता को बढ़ावा देती है जो उत्तरों की तलाश करती है, संभावनाओं का पता लगाती है, और कभी भी सांसारिक चीजों से संतुष्ट नहीं होती।

कक्षाओं और वास्तविकता के बीच की खाई को पाटना

पारंपरिक पाठ्यपुस्तकें अक्सर विज्ञान को कठोर, सूत्रबद्ध तरीके से प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर, विज्ञान पत्रिकाएं वास्तविक प्रयोगों, शोधकर्ताओं के साथ साक्षात्कार, केस स्टडी और हाल की सफलताओं पर रिपोर्ट के माध्यम से विज्ञान को क्रियान्वित करते हुए दिखाती हैं।

युवा शिक्षार्थियों के लिए, सिद्धांत और वास्तविकता के बीच यह पुल मूल्यवान संदर्भ प्रदान करता है। वे विज्ञान को अमूर्त विषय-वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित चीज़ के रूप में देखना शुरू कर देते हैं। यह निरंतर विकसित हो रही है और रोजमर्रा की जिंदगी से गहराई से जुड़ी हुई है।

आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना

विज्ञान पत्रिकाएं पढ़ना निषक्रिय उपभोग से कहीं अधिक है। लेख छात्रों को चुनौती देते हैं:

साक्ष्य का मूल्यांकन करें

विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करें

जटिल घटनाओं को समझें

तार्किक निष्कर्ष निकालें

ये कौशल न केवल शैक्षणिक सफलता के लिए बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में सूचित निर्णय लेने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

वैज्ञानिक साक्षरता को बढ़ावा देना

महामारी, जलवायु परिवर्तन और तीव्र तकनीकी प्रगति से जूझ रहे विश्व में वैज्ञानिक साक्षरता अब वैकल्पिक नहीं रही। विज्ञान पत्रिकाएं युवा पाठकों की मदद करती हैं

विश्वसनीय जानकारी और गलत सूचना में अंतर करें

महत्वपूर्ण मुद्दों के पीछे मूल सिद्धांतों को समझें

विज्ञान और समाज के बारे में सूचित बातचीत में शामिल हों

यह साक्षरता युवाओं को नागरिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाती है।

भविष्य के नवप्रवर्तकों को ईंधन देना

अनगिनत वैज्ञानिक, इंजीनियर और विचारक अपनी प्रेरणा को एक ही क्षण में पाते हैं: एक आकर्षक लेख जिसने उन्हें सोचने, सपने देखने या विश्वास करने के लिए प्रेरित किया। चाहे वह अंतरिक्ष अन्वेषण, आनुवंशिक इंजीनियरिंग या टिकाऊ ऊर्जा के बारे में कोई लेख हो, विज्ञान पत्रिकाएं अक्सर भविष्य की नवाचारों का बीज बोती हैं।

विज्ञान को सुलभ और मनोरंजक बनाना

विज्ञान पत्रिकाओं की सबसे बड़ी ताकत उनकी सुगमता है। उपयोग करके:

आकर्षक दृश्य

सम्मोहक कहानियाँ

वास्तविक दुनिया के उदाहरण

मजेदार प्रयोग और पहेलियाँ

वे जटिल विषयों को आनंददायक और समझने योग्य बनाते हैं। इससे सीखना एक साहसिक कार्य में बदल जाता है, न कि एक कठिन काम।

विकासशील मस्तिष्क की ₹शक्ति युवा दिमागों पर वैज्ञानिक चर्चा आम तौर पर तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित होती है जहां युवाओं को एक अलग लाभ मिलता है

प्लास्टिसिटी पीक किशोर मस्तिष्क एक बड़े पैमाने पर ₹पुनर्निर्माण₹ चरण से गुजरता है। जबकि हम कुछ ग्रे मैटर (सिनाप्टिक प्रूनिंग नामक प्रक्रिया) खो देते हैं, हमें सफेद पदार्थ प्राप्त होता है, जो हमारे तंत्रिका ₹वायरिंग₹ के लिए उच्च गति इन्सुलेशन (माइलिन) का काम करता है शक्ति: यह मस्तिष्क को अविश्वसनीय रूप से ₹प्लास्टिक₹ बनाता है, जिसका अर्थ है कि यह वयस्क मस्तिष्क की तुलना में बहुत तेजी से नए वातावरण या कौशल के अनुकूल हो सकता है। समझौता: यही खुलापन युवा दिमाग को नकारात्मक प्रभावों या तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

"सामाजिक मस्तिष्क" और सामूहिक बुद्धिमत्ता साइंस जैसे पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख अक्सर इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि युवा दिमाग सामाजिक संकेतों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। इसे अक्सर अस्तित्व के लिए एक महाशक्ति के रूप में वर्णित किया जाता है: सामाजिक पुरस्कार: मस्तिष्क की प्रतिफल प्रणाली (वेंट्रल स्ट्राइटम) वयस्कों की तुलना में किशोरों में सामाजिक संपर्क के दौरान अधिक सक्रिय होती है। वितरित बुद्धिमत्ता: अनुसंधान (जैसे ऑड्रे डसुटूर द्वारा किया गया) यह पता लगाता है कि युवा लोग किस प्रकार "सामूहिक बुद्धि" में योगदान करते हैं, जहां व्यक्तियों के समूह एक एकल ₹विशेषज्ञ₹ इकाई की तुलना में जटिल समस्याओं को अधिक प्रभावी ढंग से हल करते हैं। 3। "उन्नत शिक्षण पूंजी। हाल ही में 2025 में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि हम "प्रतिभाशाली" बच्चों का पालन-पोषण गलत तरीके से कर रहे हैं। युवा दिमाग में ₹शक्ति₹ प्रारंभिक विशेषज्ञता (उदाहरण के लिए, केवल गणित करना) में नहीं पाई जाती है, बल्कि व्यापकता में पाई जाती है। विविध इनपुट: कई असंबंधित क्षेत्रों (जैसे संगीत और विज्ञान) में संलग्न होना, जीवन के बाद दीर्घकालिक "विश्वस्तरीय" प्रदर्शन के लिए एक मजबूत आधार बनाता है। सतर्कता: युवा मस्तिष्क खतरे और नवीनता के प्रति अधिक ₹सतर्क₹ होते हैं, जिससे वे उच्च तीव्रता वाली गलतियों से सीख सकते हैं। अधिक पढ़ें कहां यदि आप विशिष्ट हालिया मुद्दों या पहलों की तलाश कर रहे हैं, तो आपको निम्नलिखित में रुचि हो सकती है फ्रंटियर्स फॉर यंग माइंड्स: एक अनूठी पत्रिका जहां शीर्ष वैज्ञानिक (नोबेल पुरस्कार विजेताओं सहित) अपनी खोजों के बारे में लिखते हैं, और 8 वर्ष की आयु के बच्चे सहकर्मी समीक्षक के रूप में कार्य करते हैं, यह निर्णय लेते हैं कि विज्ञान है या नहीं

यदि आप विशिष्ट हालिया मुद्दों या पहलों की तलाश कर रहे हैं, तो आपको निम्नलिखित में रुचि हो सकती है फ्रंटियर्स फॉर यंग माइंड्स: एक अनूठी पत्रिका जहां शीर्ष वैज्ञानिक (नोबेल पुरस्कार विजेताओं सहित) अपनी खोजों के बारे में लिखते हैं, और 8 वर्ष की आयु के बच्चे सहकर्मी समीक्षक के रूप में कार्य करते हैं, यह निर्णय लेते हैं कि क्या विज्ञान इतना स्पष्ट और शक्तिशाली है कि उसे प्रकाशित किया जा सके। साइंस मैगज़ीन ₹यंग माइंड्स₹ श्रृंखला: अक्सर इस बात को कवर करती है कि कैसे प्रारंभिक बचपन में ₹गोंद₹ (ग्लियल कोशिकाएं) भविष्य की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के खिलाफ लचीलापन बनाती हैं। मुख्य निष्कर्ष: युवा मन की ₹शक्ति₹ उसके जैविक लचीलेपन में निहित है। इसे एक "उच्च-प्रदर्शन सीखने वाली मशीन" के रूप में डिजाइन किया गया है जो वयस्क मस्तिष्क की दक्षता और स्थिरता पर अन्वेषण को प्राथमिकता देता है निष्कर्ष

विज्ञान पत्रिकाएं केवल जानकारी देने से कहीं अधिक काम करती हैं। वे परिवर्तन लाती हैं। युवा दिमागों के लिए, वे शक्तिशाली उपकरण हैं जो अन्वेषण के द्वार खोलते हैं, वैज्ञानिक मानसिकता को पोषित करते हैं, तथा कल के विचारकों और समस्या-समाधानकर्ताओं को प्रेरित करते हैं। प्रत्येक अंक में यह संभावना निहित है कि एक युवा पाठक दुनिया को किस प्रकार देखता है तथा उसे आकार देने में उसका स्थान क्या है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर

संपादकीय

चिंतन-मनन

विज्ञापन (Advertisements) क्या है और यह कैसे काम करता है?

विज्ञापन मूलतः वह संचार है जिसमें कंपनियां अपने उत्पाद/सेवा के बारे में आकर्षक ढंग से बताते हैं ताकि लोग उसे खरीदें या इस्तेमाल करें। यह विज्ञापन एजेंसियों, मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और डेटा पर आधारित होता है — न कि हमेशा उस वस्तु की वास्तविक गुणवत्ता पर।

विज्ञापन इस तरह से बनाया जाता है कि वह हमारे दिल, इच्छाओं और भावनाओं को छू ले — जैसे कि खुशी, स्वीकृति, सौंदर्य, दोस्ती, लाइफस्टाइल आदि। यह रणनीति जानबूझकर हमारी ज़रूरतों को इच्छाओं में बदल देती है।

विज्ञापन और बच्चे — सच क्या है?

बच्चे विज्ञापनों से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं क्योंकि उनका मन अभी विकसित हो रहा होता है।

शोध बताते हैं:

* विज्ञापन बच्चों को एक आइडियल-लाइफ़स्टाइल और सुखद परिणाम दिखाकर

* उन्हें अपनी माँ-बाप से वही चीज़ माँगने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

* बच्चे यह नहीं समझ पाते कि विज्ञापन लाभ-कमाई के लिए बनाया गया है।

इसलिए वे अक्सर यह मान लेते हैं कि जो दिखाया जा रहा है — वह असल जीवन में भी वैसा ही होगा।

विज्ञापन कंपनियां अक्सर ऐसे रंग-रूप, संगीत, खिलौने, कैंडी, पॉपुलर चेहरे आदि का उपयोग करती हैं जिससे बच्चे भावनात्मक रूप से जुड़ जाएँ।

सेलेब्रिटीज़ और इन्फ्लुएंसर्स को कंपनियां क्यों भुगतान करती हैं? आज सिर्फ टीवी ही नहीं, सोशल मीडिया — Instagram, YouTube, TikTok — पर भी विज्ञापन दिन-रात चलते हैं।

कंपनियां सेलेब्रिटीज़, स्टार्स या इन्फ्लुएंसर्स को बड़ी रकम देती हैं ताकि वे उनका प्रोडक्ट इस्तेमाल करते/सिफारिश करते दिखें।

लेकिन सच यह है कि: वह सेलिब्रिटी वास्तव में वह प्रोडक्ट खुद कभी भी इस्तेमाल नहीं करते है, फिर भी वे विज्ञापन के पैसे लेकर गलत प्रचार करते हैं।

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है कि

* सेलेब्रिटीज़ और इन्फ्लुएंसर्स को असत्य या भ्रामक विज्ञापन दिखाने पर उसी तरह जवाबदेह माना जाएगा जैसे विज्ञापन कंपनी खुद।

* यानी अब जिम्मेदारी बढ़ रही है कि प्रमोट करने से पहले वे जान लें कि विज्ञापन सच है या नहीं।

बच्चों को कैसे सिखाएँ विज्ञापन की सच्चाई?

* पहले खुद समझें:

* विज्ञापन पैसे के लिए बनते हैं, सच को दिखाना ज़रूरी नहीं होता।

* सेलिब्रिटीज़ को सामान्य लोग नहीं, कंपनियों की एजेंट माना जाता है।

बच्चों को सरल भाषा में बताएं कि:

* विज्ञापन हमेशा सच्चाई नहीं दिखाते।

* स्टार-फेस दिखाने का मतलब है पैसे की डील.

* उन्हें अपनी जरूरत और चाह में फर्क समझना सीखें।

विचार - शील सवाल पूछें:

* 1. "क्या यह सच में ऐसा है?"

* 2. "क्या यह चीज़ हमें ज़रूरत है या बस आकर्षक दिखती है?"

आत्म - जागरूकता और परिवार में संवाद आवश्यक हमें बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि विज्ञापन सिर्फ मनोरंजन या सूचना नहीं, वह वाणिज्यिक रणनीति भी हैं।

इसलिए बातचीत जरूरी है —

* घर में मीडिया वा ऐप पर आ रहे विज्ञापन पर सवाल पूछना, और

* सोच-विचार करना सीखना।

आज की मुख्य सीख — एक प्रभावशाली संदेश

* विज्ञापन हमारी सोच को ओझल कर सकता है

* बहुत से एड में सेलेब्रिटी खुद वह वस्तु इस्तेमाल नहीं करते

* बच्चों को विज्ञापन की बुनियादी चालों को समझना ज़रूरी है

* घर पर खुले संवाद से हम बच्चों को स्वयं-निर्णय शक्ति दे सकते हैं

सरकार चाहे जो नियम लागू करे, सच्चाई बताना और समझना हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

बाजार का संजाल : डॉ विजय गर्ग

वर्तमान समय बाजार का समय है। बाजार मनुष्य की सुविधाओं के लिए शताब्दियों से काम करता रहा है। वह मनुष्य के लिए एक जरूरी जरिया है, जिसमें वह अपनी जरूरत की चीजों का लेन-देन करता है। मगर आज यही बाजार किस तरह मनुष्य को अपनी ही इच्छाओं का गुलाम बनने को विवश करने लगा है, कोई भी व्यक्ति इस साधारण-सी प्रक्रिया पर गौर नहीं करता। हर चीज में, स्थिति में व्यावसायिक अवसर तलाशने की बाजारी प्रवृत्ति ने बाजार को मानव समाज और उसकी संस्कृति के लिए एक ऐसे स्थायी खतरे में तब्दील कर दिया है, जिससे बचने के लिए हर संभव कदम उठाना आवश्यक हो गया है। बिना नियम, नैतिकता, भावना और संवेदना के बाजार मनुष्य को एक ऐसी कठपुतली के रूप में देखता है, जिसे जब चाहे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। अधिकतम लाभ कमाने के लक्ष्य के साथ बाजार ने मानवीय जीवन के हर पहलू और पड़ाव में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है। वह आपदा में अवसर देखने के आर्थिक दृष्टिकोण को मानते हुए ऐसी अंधी दौड़ में मनुष्य को धकेलता है, जिसका कोई अर्थ किसी के लिए नहीं होता।

बाजार हमें आखिर में यही कहता है कि खुद को महसूस करो, खुद की सुंदरता को पहचानो, चीजों को उसके बाह्य दृश्य से नहीं, भावना से परखो। बाजार यही बात सीधे-सीधे नहीं कहता, क्योंकि सीधे कहने से उसका काम नहीं चलता। वह मनुष्य को झूठे स्वप्न दिखाता है, उसमें हीनता पैदा करता है और भ्रमित करने वाली आकांक्षाएं उपजाता है। वह प्रचार के नारों के माध्यम से एक ऐसी हवा बनाता है, जिसमें व्यक्ति महसूस करता है कि वह जो है, वह खुद सही नहीं है। बाकी दूसरी चीजें अपनी जगह बिल्कुल ठीक। ऐसी हवा पैदा करके ही मनुष्य को दौड़ाया जा सकता है। बाजार 'जो हम हैं' से 'जो हमें होना चाहिए' की ओर लेकर जाता है। हमारे पास जो है, वह हमारे लिए पूरा नहीं है। दूसरे के पास जो है, वह उसके लिए पूरा है। इसलिए बाजार सबके लिए जरूरी हो जाता है। क्या आज के समय में हम इसे जरूरत तक सीमित कर सकते हैं? नहीं अक्सर हम देखते हैं कि बाजार हमें सुरक्षा के नाम पर हमारी शिक्षा, नुस्खों, पुरातन तरीकों और जड़ों से अलग करता है और फिर उन्हीं चीजों को चलन बनाकर हम तक पहुंचाता है। हमारी दिनचर्या में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां लोग अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक तत्त्वों की स्वीकार्यता के लिए बाजार द्वारा चालित सामयिक फैशन की तरफ देखते हैं। इसी वजह से यह संभव होता है कि बाजार उन पुरानी चीजों को, जिन्हें मनुष्य समय के प्रवाह में कई- कई बार छोड़ चुका है, उन्हें भी फैशन के नाम पर चला है। अधिकतर लोगों के पास चीजों को देखने का कोई विशेष ढंग नहीं होता, वे दूसरों की हां में हां मिलाते हैं। हमारे समाज की पूरी मानसिकता 'दूसरे क्या कहेंगे' पर टिकी हुई है, लेकिन जब सब एक जैसा ही हो, तो दूसरे के कहने के लिए कुछ बचता ही कहां है! हम अपने पैसे खर्च करके इसी तरह बाजार का गुणगान भी करते हैं। हम दूसरों की तरह दिखना चाहते हैं, उनकी तरह होना चाहते हैं, बाजार सभी को एक सम धरातल पर ले आता है, लेकिन ऐसा कर- के वह उसे व्यक्ति से उपभोक्ता में तब्दील करता है। उपभोक्ता की कोई निजी पसंद नहीं होती और उसका कोई निर्णय नहीं होता। वह उन चीजों का उपभोग करता है, जो उसके लिए बनाई जाती है। इस तरह इस समानता की कीमत अपने व्यक्तित्व और विविधता को खोने के रूप में सभी चुकाते हैं, लेकिन तब भी कोई बेचैनी व्यक्ति में नहीं होती, क्योंकि इस बेचैनी को, सोचने की क्षमता को नष्ट करके ही ये सब चीजें जगह बनाती। बाजार मनुष्य को उपभोक्ता बनाकर उसकी मूल पहचान को ही एक तरह से संकट में डाल देता है। मनुष्य की अस्मिता उसकी बुद्धि, विचारशीलता, नैतिकता और विवेक से बनती है। वह केवल अपने सही-गलत के बारे में ही नहीं पर्यावरण और अन्य प्राणियों के बारे में भी सोच सकता है और सोचता रहा है। संस्कृति और समाज के साथ ही अन्य जैविक - अजैविक सत्ताओं के प्रति उसका दायित्व ही उसे मनुष्य बनाता है। मगर उपभोक्ता बनाकर बाजार मनुष्य के विवेक, विचार, व्यवहार और भावों को नियंत्रित करता है। वह मनुष्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों में बदलाव करता है और मनुष्य को उसकी गरिमा से स्खलित कर एक ऐसे पुतले में बदल देता है, जिसे अपने स्वार्थ के अनुसार चलाना संभव होता है। व्यक्ति, व्यक्तिगत नहीं होकर भीड़ का हिस्सा मात्र बनकर रह जाता है। अकेले व्यक्ति को नियंत्रित करना जितना मुश्किल है, उसे भीड़ का हिस्सा बनाकर नियंत्रित करना उतना ही आसान है।

बाजार हमारी जरूरतों को संचालित करने वाले केंद्र से कब 'बाजारवाद' की तरफ झुकने लगता है और कब हम बाजारीकरण की प्रक्रिया की गिरफ्त में आने लगते हैं, इन बिंदुओं को समझे बिना हम बाजार के प्रभाव का सही आकलन नहीं कर सकते हैं। जब हम बाजार से परे मानवीय अस्तित्व को समझ पाएंगे, तभी अपने ही बनाए खिलौने के हाथों मनुष्य के कैद होने की त्रासदी को सही मायने में महसूस कर पाएंगे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

विश्वविद्यालय, सत्ता और साहित्य की अपमानित गरिमा

- डॉ. प्रियंका सौरभ

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित एक साहित्यिक कार्यक्रम के दौरान हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार मनोज रूपड़ा के साथ हुआ सार्वजनिक दुर्व्यवहार केवल एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना नहीं है, बल्कि यह हमारे समय के अकादमिक और सांस्कृतिक जीवन में गहराते संकट का स्पष्ट संकेत है। किसी आमंत्रित लेखक को मंच पर अपमानित करना और कार्यक्रम से बाहर जाने के लिए कहना उस परंपरा के सर्वथा विपरीत है, जिसमें विश्वविद्यालयों को विचारों के मुक्त आदान—प्रदान, असहमति के सम्मान और रचनात्मक संवाद के केंद्र के रूप में देखा जाता रहा है। यह घटना व्यक्ति-विशेष तक सीमित नहीं है; यह साहित्य, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और बौद्धिक गरिमा पर सीधा आघात है।

विश्वविद्यालयों की ऐतिहासिक भूमिका सत्ता के अनुचर बनने की नहीं रही है। नालंदा और तक्षशिला जैसी प्राचीन ज्ञान-परंपराओं से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालयों तक, इन संस्थानों ने सदैव प्रश्न पूछने, तर्क करने और स्थापित धारणाओं को चुनौती देने की संस्कृति को बढ़ावा दिया है। विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने वाली मशीनें नहीं होते, बल्कि वे समाज की चेतना को दिशा देने वाले केंद्र होते हैं। यहां विचारों की विविधता, मतभेद और बहस को कमजोरी नहीं, बल्कि बौद्धिक शक्ति माना जाता है। ऐसे में जब किसी विश्वविद्यालय के भीतर सत्ता-प्रदर्शन, अहंकार और असहिष्णुता का दृश्य सामने आता है, तो यह केवल एक कार्यक्रम की विफलता नहीं, बल्कि संस्थागत मूल्यों के क्षरण का प्रमाण बन जाता है।

मनोज रूपड़ा समकालीन हिन्दी कथा साहित्य का एक सशक्त और प्रतिष्ठित नाम हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास सत्ता, समाज और व्यक्ति के जटिल संबंधों को बेबाकी से उजागर करते हैं। वे उन लेखकों में शामिल हैं जिन्होंने साहित्य को केवल सौंदर्य का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक हस्तक्षेप का माध्यम माना है। ऐसे लेखक को आमंत्रित करना स्वयं विश्वविद्यालय की बौद्धिक प्रतिबद्धता और खुलेपन का प्रतीक होना चाहिए था। किंतु उनके साथ हुआ व्यवहार यह दर्शाता है कि कहीं न कहीं आलोचनात्मक दृष्टि और स्वतंत्र विचार से असहजता ने विवेक पर विजय पा ली। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या विश्वविद्यालय अब केवल औपचारिक आयोजनों, प्रशस्ति-पाठों और सत्ता-अनुकूल वक्तव्यों तक सीमित रह जाएंगे?

कुलपति जैसे पद से केवल प्रशासनिक दक्षता की नहीं, बल्कि नैतिक नेतृत्व और अकादमिक संवेदनशीलता की अपेक्षा की जाती है। यह पद संयम, संवाद और समावेशन का प्रतीक होना चाहिए। विश्वविद्यालय का मुखिया यदि आलोचना या असहमति को व्यक्तिगत चुनौती मानने लगे, तो उसका प्रभाव केवल एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रहता। भय का वातावरण धीरे-धीरे पूरे परिसर में फैलने लगता है। शिक्षक खुलकर बोलने से कतराने लगते हैं, विद्यार्थी प्रश्न पूछने से डरने लगते हैं और रचनात्मकता आत्म-सेंसरशिप की भेंट चढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में विश्वविद्यालय अपने मूल उद्देश्य से भटक जाता है और ज्ञान का केंद्र होने के बजाय अनुशासन और नियंत्रण का उपकरण बन जाता है।

इस घटना का एक और चिंताजनक पक्ष यह है कि संस्थागत स्तर पर आमंत्रित साहित्यकार के सम्मान की रक्षा के लिए अपेक्षित संवेदनशीलता और दृढ़ता दिखाई नहीं दी। साहित्यिक आयोजनों की सफलता केवल मंच-सज्जा, पोस्टरों और औपचारिक भाषणों से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से तय होती है कि वहां संवाद कितना खुला, सम्मानजनक और अर्थपूर्ण रहा। जब किसी लेखक का अपमान होता है और संस्था मौन साध लेती है, तो वह मौन भी एक प्रकार की स्वीकृति बन जाता है। यह चुप्पी भविष्य में और अधिक दमनकारी व्यवहारों को प्रोत्साहित करती है और संस्थान की नैतिक विश्वसनीयता को कमजोर करती है।

यह याद दिलाना आवश्यक है कि विश्वविद्यालय किसी व्यक्ति या पदाधिकारी की निजी जागीर नहीं होते। वे सार्वजनिक संसाधनों, करदाताओं के धन और समाज के विश्वास से संचालित होते हैं। यहां लिए गए निर्णय और प्रदर्शित व्यवहार समाज के लिए संदेश का काम करते हैं। यदि विश्वविद्यालयों में सत्ता का मद, व्यक्तिगत अहंकार और असहिष्णुता हावी हो जाए, तो समाज में संवाद की जगह टकराव और भय की संस्कृति पनपने लगती है। यह प्रवृत्ति न केवल साहित्य और शिक्षा के लिए, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए भी घातक है, क्योंकि लोकतंत्र का आधार ही विचारों की बहुलता और असहमति का सम्मान है।

भारतीय लोकतंत्र की आत्मा में साहित्य और बौद्धिक विमर्श की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज़ादी की लड़ाई से लेकर सामाजिक सुधार आंदोलनों तक, लेखकों और विचारकों ने सत्ता से सवाल पूछे हैं और समाज को आत्मावलोकन के लिए प्रेरित किया है। यदि आज विश्वविद्यालयों में ही लेखकों और विचारकों को अपमानित किया जाएगा, तो यह उस परंपरा का घोर अपमान होगा जिसने हमें एक जीवंत लोकतांत्रिक समाज बनाया है। यह विडंबना ही है कि जिन संस्थानों से वैचारिक नेतृत्व की अपेक्षा की जाती है, वही यदि असहिष्णुता का उदाहरण प्रस्तुत करने लगें, तो समाज किस दिशा में जाएगा?

इस पूरे घटनाक्रम में यह अवश्य उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय के कुछ अध्यापकों ने स्थिति को संभालने और सम्मानजनक समाधान खोजने का प्रयास किया। यह दर्शाता है कि संस्थान के भीतर अभी भी विवेक और संवेदनशीलता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। किंतु यह भी सत्य है कि जब सत्ता का मद विवेक पर हावी हो जाता है, तब व्यक्तिगत प्रयास अक्सर निष्प्रभावी सिद्ध होते हैं। संस्थागत संस्कृति तभी बदलती है, जब नेतृत्व स्वयं संवाद और आत्मालोचना के लिए तैयार हो।

यह घटना हमें साहित्यकारों और बौद्धिक वर्ग की भूमिका पर भी पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करती है। जब किसी लेखक के साथ अन्याय होता है और पूरा साहित्यिक समुदाय मौन साध लेता है, तो यह मौन स्वयं में एक राजनीतिक और नैतिक वक्तव्य बन जाता है। इतिहास साक्षी है कि चुप्पी ने हमेशा सत्ता को मजबूत किया है और प्रतिरोध को कमजोर। यदि आज इस घटना पर स्पष्ट और सामूहिक प्रतिक्रिया नहीं होगी, तो कल किसी और लेखक, किसी और विचार और किसी और मंच पर यही दुहराया जाएगा।

साहित्य का मूल स्वभाव प्रश्नाकुलता और प्रतिरोध का है। वह सत्ता के समक्ष नतमस्तक होने के लिए नहीं, बल्कि उसे आईना दिखाने के लिए पैदा हुआ है। यदि साहित्यकार ही अपने सम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए खड़े नहीं होंगे, तो साहित्य धीरे-धीरे केवल करियर और पुरस्कारों तक सिमट जाएगा। तब वह समाज की आत्मा नहीं, बल्कि व्यवस्था का सजावटी उपकरण बनकर रह जाएगा।

आज आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षक, विद्यार्थी और साहित्यिक समाज इस घटना से सबक लें। विश्वविद्यालयों को आत्ममंथन करना होगा कि वे किस प्रकार के अकादमिक वातावरण को बढ़ावा दे रहे हैं। क्या वे संवाद और बहस को प्रोत्साहित कर रहे हैं, या भय और आज्ञाकारिता को? साहित्यिक आयोजनों को केवल औपचारिकता के रूप में नहीं, बल्कि जीवंत वैचारिक मंच के रूप में देखना होगा, जहां असहमति भी सम्मान के साथ व्यक्त की जा सके।

यह घटना शर्मनाक है और इसकी कड़ी निंदा आवश्यक है, लेकिन निंदा से आगे बढ़कर ठोस आत्मालोचना और सुधार की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में किसी भी आमंत्रित लेखक या वक्ता के साथ ऐसा व्यवहार न हो। अकादमिक स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा केवल कागजी नीतियों से नहीं, बल्कि व्यवहार और संस्कृति से होती है। अंततः प्रश्न केवल मनोज रूपड़ा या किसी एक कार्यक्रम का नहीं है। प्रश्न यह है कि हम किस प्रकार के विश्वविद्यालय और किस प्रकार का समाज बनाना चाहते हैं। यदि हम विचार से डरेंगे, प्रश्न से घबराएंगे और असहमति को अपमान से दबाने की कोशिश करेंगे, तो हम एक जीवंत लोकतंत्र की जगह एक भयग्रस्त समाज की ओर बढ़ेंगे। विश्वविद्यालयों को यह याद रखना होगा कि उनका अस्तित्व सत्ता की कृपा से नहीं, बल्कि ज्ञान, संवाद और स्वतंत्र चेतना से है। यदि यही चेतना कुचल दी गई, तो विश्वविद्यालय केवल इमारतें रह जाएंगे—ज्ञान के नहीं, बल्कि मौन के स्मारक।

सेहत संवारने में नींद का बड़ा योगदान

डॉ विजय गर्ग

हमारी शारीरिक-मानसिक सेहत में नींद का महत्वपूर्ण योगदान है। सोने के दौरान शरीर निषक्रिय होता है, पर मस्तिष्क अपनी सक्रिय यात्रा पर निकलता है। स्मृतियां फिर लिखी जाती हैं, भावनाएं साफ होती हैं, शरीर खुद की मरम्मत करता है। यानी ग्रोथ हार्मोन रिलीज होता है, जिससे मांसपेशियां, हड्डियां व कोशिकाएं रिपेयर होती हैं। इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। डीएनए रिपेयर एंजाइम सक्रिय होते हैं।

सोने का समय भी जिंदगी का एक बड़ा और महत्वपूर्ण समय है। जिंदगी के इस विस्तृत समय के बारे में सोचकर ही रोमांच होता है। दरअसल, सोने का समय सिर्फ आराम का नहीं बल्कि पुनर्निर्माण का समय भी है। अगर कोई कहे कि हम अपनी जिंदगी का एक-तिहाई हिस्सा बिना जाने-समझे, आंखें बंद करके बिता देते हैं तो यह चौंकाने वाला लगेगा। मगर हकीकत में ऐसा ही होता है और हम जरा भी नहीं सोचते। अगर कोई इंसान औसतन 75 साल जिए तो वह लगभग 25 साल सिर्फ सोने में बिताता है। पर सवाल है- क्या वह सचमुच कुछ नहीं कर रहा होता? असल में, नींद के दौरान शरीर निष्क्रिय होता है, पर मस्तिष्क अपनी सबसे सक्रिय यात्रा पर निकल चुका होता है। हमारी स्मृतियां फिर से लिखी जाती हैं, भावनाएं साफ होती हैं, शरीर खुद की मरम्मत करता है। उस दौरान यह सब कुछ होता है।

सोते समय दिमाग की सक्रियता

विज्ञान के मुताबिक़, सोते वक्त हमारा मस्तिष्क किसी भी जागृत अवस्था से ज्यादा सक्रिय होता है। एमआरआई स्कैन में दिखता है कि नींद के दौरान मस्तिष्क बिजली की चमक की तरह जलता-बुझता है। दरअसल हम सोते हैं, पर हमारा मन जागता रहता है। साथ ही इस दौरान हमारा मस्तिष्क दिनभर के अनुभवों को छांटता है और यह तय करता है कि क्या याद रखना है, क्या मिटाना है। इस तय किये हुए के मुताबिक नई जानकारी पुरानी स्मृतियों से जुड़ती है, ठीक वैसे ही जैसे किसी लाइब्रेरी में नई किताब को उसके सन्दर्भ के मुताबिक सही जगह पर रख दिया जाता है। जो भावनाएं जागते वक्त भारी लगती हैं, नींद में डिस्टिल होकर हल्की हो जाती हैं। इसलिए रोने के बाद नींद आने पर मन हल्का लगता है। मतलब यह कि नींद सिर्फ आराम नहीं, मस्तिष्क की सफाई और पुनर्गठन की प्रयोगशाला है।

सपनों की गुप्त प्रयोगशाला

नींद का सबसे जादुई पहलू है- सपनों की दुनिया। क्या आपने कभी सोचा है कि सपने हमें क्यों आते हैं? वैज्ञानिक बताते हैं कि सपने हमारे भावनात्मक संतुलन के संरक्षक हैं। ये हमें अव्यक्त भय, अधूरी इच्छाओं और अनकहे अनुभवों को प्रोसेस करने देते हैं।

शरीर की मरम्मत का कारखाना

जब हम गहरी नींद में जाते हैं, तब शरीर एक शांत लेकिन व्यापक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया से गुजरता है। इसी दौरान ग्रोथ हार्मोन रिलीज होता है, जिससे मांसपेशियां, हड्डियां और कोशिकाएं खुद को ठीक करती हैं। इसी से इम्यून सिस्टम (प्रतिरक्षा तंत्र) मजबूत होता है। इसलिए नींद की कमी से लोग तुरंत बीमार पड़ जाते हैं। नींद के दौरान ही शरीर में डीएनए रिपेयर एंजाइम सक्रिय होते हैं, जिससे शरीर की हर कोशिका टूटे हुए अणुओं की मरम्मत करती है। इस तरह हर रात हमारा शरीर चुपचाप अपना नवीनीकरण करता है- जैसे कोई शहर रात में सड़कें, पुल और बिजली की लाइनें ठीक करता है ताकि सुबह वह फिर चमक उठे।

स्वस्थ जीवन की गारंटी

आखिर नींद के बिना मनुष्य कितने दिन टिक सकता है? अमेरिका के सैन डियागो शहर के एक युवक रेंडी गार्डेनर ने दिसंबर 1963 से जनवरी 1964 के बीच 264 घंटे (लगभग 11 दिन 24 मिनट) तक लगातार जागकर रहने का प्रयास किया था, जिसका नतीजा यह हुआ कि वह भ्रमित हो गया, उसे लोग और वस्तुएं झूठी लगने लगीं और उसकी स्मृति खोने लगी। वैज्ञानिकों ने इससे यह निष्कर्ष निकाला है कि अगर कोई 72 घंटे तक लगातार न सोए, तो उसकी सोच, भावनाएं और निर्णय क्षमता किसी मदहोश व्यक्ति जैसी हो जाती हैं। अगर कोई 10 दिन तक न सोए, तो मस्तिष्क स्थायी नुकसान झेल सकता है। मतलब यह कि नींद सिर्फ चाह नहीं बल्कि जीवित रहने की शर्त है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अनंत शक्ति का उद्घोष: स्वामी विवेकानंद — भारत की जागृत ज्योति

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जब मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ और भारत की उस सनातन आत्मा का स्मरण करता हूँ, जो युगों से सत्य, प्रेम और साहस की प्रेरणा देती रही है, तो मेरे अंतःकरण में स्वामी विवेकानंद का तेजस्वी स्वरूप सजीव हो उठता है। वह स्वरूप केवल एक महापुरुष का नहीं, बल्कि एक युग की चेतना का प्रतीक है; वह वाणी केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि आत्मजागरण का महाघोष है। 12 जनवरी 1863—यह तिथि केवल एक जन्म-दिन नहीं, बल्कि भारत की आत्मा में प्रज्वलित हुई उस अग्नि का स्मरण है, जिसने सुप्त राष्ट्र को जाग्रत किया और विश्व को भारतीय अध्यात्म की विराटता से परिचित कराया। स्वामी विवेकानंद कोई साधारण संन्यासी नहीं थे; वे उस अमर मशाल के समान थे, जिसकी लौ आज भी मानवता को दिशा दे रही है। उनकी जयंती हमें नमन करने का अवसर देती है—न केवल उनके जीवन को, बल्कि उस आत्मविश्वास, करुणा और निर्भीकता को, जो उन्होंने भारत की चेतना में प्रवाहित की।

स्वामी विवेकानंद का जन्म कोलकाता में नरेंद्र नाथ दत्त के रूप में हुआ। बाल्यकाल से ही उनके व्यक्तित्व में असाधारण तेज, निर्भीकता और जिज्ञासा स्पष्ट दिखाई देती थी। सत्य को जानने की उत्कंठा, ईश्वर के साक्षात्कार की तीव्र प्यास और तर्कशील बुद्धि उन्हें अपने समकालीनों से भिन्न बनाती थी। 1881 में रामकृष्ण परमहंस से हुई उनकी भेंट उनके जीवन की निर्णायक घटना सिद्ध हुई। रामकृष्ण ने उनके भीतर उस सुप्त सूर्य को पहचान लिया, जो आगे चलकर संपूर्ण विश्व को आलोकित करने वाला था। गुरु के सान्निध्य में नरेंद्र से विवेकानंद बनने की यह यात्रा केवल एक साधक की साधना नहीं थी, बल्कि भारत के आत्मबोध की यात्रा थी।

रामकृष्ण परमहंस के महाप्रयाण के पश्चात, विवेकानंद ने अपने गुरु के संदेश को विश्व तक पहुँचाने का संकल्प लिया। यह संकल्प केवल आध्यात्मिक प्रचार का नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण का था। 1893 का शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन उनके जीवन का वह ऐतिहासिक क्षण बना, जिसने भारत को वैश्विक मंच पर गौरवपूर्ण पहचान दिलाई। जब उन्होंने "मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों" कहकर अपना संबोधन प्रारंभ किया, तो सभागार में तालियों की गड़गड़ाहट केवल शिष्टाचार नहीं थी—वह विश्व की आत्मा द्वारा भारतीय संस्कृति को दिया गया सम्मान था। सात मिनट के उस भाषण में उन्होंने वेदांत, सहिष्णुता और सार्वभौमिक भाईचारे का जो संदेश दिया, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरक है।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन रूढ़ परंपराओं की सीमाओं को तोड़ने वाला था। उन्होंने धर्म को केवल कर्मकांड और पूजा-पाठ तक सीमित नहीं किया। उनके लिए धर्म का अर्थ था—मानव सेवा, करुणा और निर्भय सत्य। वे स्पष्ट शब्दों में कहते थे, "जो दरिद्र नारायण की सेवा नहीं करता, वह ईश्वर की सेवा का अधिकारी नहीं हो सकता।" उनके इस विचार ने अध्यात्म को जीवन से जोड़ा और सेवा को साधना का सर्वोच्च रूप घोषित किया। 1897 में स्थापित रामकृष्ण मिशन उनके इसी विचार का सजीव उदाहरण है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा के माध्यम से आज भी लाखों जीवनों को संवार रहा है।

उनके विचारों की सबसे बड़ी विशेषता थी—आत्मविश्वास की अग्नि। औपनिवेशिक दासता से ग्रस्त भारत को उन्होंने आत्मग्लानि से मुक्त होने का संदेश दिया। उनका उद्घोष—"अपने को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है"—केवल वाक्य नहीं, बल्कि राष्ट्र की चेतना को झकझोरने

वाला मंत्र था। उन्होंने युवाओं को यह विश्वास दिलाया कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी आत्मा में निहित है। उनके शब्दों में जो ओज था, वह आज भी रक्त में बिजली-सी दौड़ जाता है।

स्वामी विवेकानंद का युवाओं पर अटूट विश्वास था। वे मानते थे कि युवा शक्ति ही राष्ट्र की धुरी है। उनका प्रसिद्ध कथन—"मुझे सौ ऊर्जावान युवा दो, मैं भारत का पुनर्निर्माण कर दूँगा"—आज भी हर युवा हृदय को आंदोलित करता है। आज के भारत में, जहाँ युवा जनसंख्या विशाल है, स्वामीजी का यह आह्वान और भी अधिक प्रासंगिक हो उठता है। वे युवाओं को केवल स्वप्न देखने के लिए नहीं, बल्कि संकल्प और कर्म के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करते थे।

उनका अमर संदेश—"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"—मानव जीवन का शाश्वत सूत्र है। यह संदेश केवल व्यक्तिगत सफलता का नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान का मार्गदर्शन करता है। विवेकानंद का विश्वास था कि प्रत्येक आत्मा में अनंत सामर्थ्य विद्यमान है। आवश्यकता केवल उसे पहचानने और जाग्रत करने की है।

शिक्षा के विषय में भी उनका दृष्टिकोण अत्यंत क्रांतिकारी था। वे शिक्षा को सूचना-संग्रह नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण का साधन मानते थे। उनके अनुसार, वही शिक्षा सार्थक है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर, निर्भीक और नैतिक बनाती है। आज के युग में, जब शिक्षा प्रायः केवल रोजगार का साधन बनकर रह गई है, स्वामी विवेकानंद के विचार हमें उसके मूल उद्देश्य की याद दिलाते हैं।

स्वामी विवेकानंद का जीवनकाल भले ही संक्षिप्त रहा हो, परंतु उनकी चेतना कालातीत है। वे समय की सीमाओं में बंधे नहीं थे। उनका जन्म केवल 1863 में नहीं हुआ—वे प्रत्येक युग में तब जन्म लेते हैं, जब समाज को दिशा की आवश्यकता होती है। उनकी जयंती हमें यह स्मरण कराती है कि विचार अमर होते हैं, और जो राष्ट्र आत्मविश्वास खो देता है, वह इतिहास बन जाता है।

आज, स्वामी विवेकानंद की जयंती के पावन अवसर पर, यह आवश्यक है कि हम उन्हें केवल पुष्पांजलि तक सीमित न करें। सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी, जब हम उनके विचारों को अपने जीवन और कर्म में उतारें। उनका जीवन एक चिरस्थायी दीपस्तंभ है, जो अंधकार में भी मार्ग दिखाता है। उनकी अमर वाणी—"तुम अनंत शक्तियों के स्वामी हो"—हर निराश मन को आशा से भर देती है।

स्वामी विवेकानंद का जन्म भारत की आत्मा में उदित हुआ वह सूर्य है, जिसकी किरणें आज भी विश्व को आलोकित कर रही हैं। उनकी जयंती हमें संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम उनके आदर्शों को जीवन में उतारकर राष्ट्र और मानवता की सेवा करें, और भारत को पुनः उस गौरवशाली पथ पर अग्रसर करें, जिसकी कल्पना स्वामी विवेकानंद ने की थी।

सूर्य, संस्कृति और स्त्री: मकर संक्रांति का भारतीय स्वरूप

कृति आरके जैन

जब शीत ऋतु की कठोरता के बीच सूर्य उत्तरायण होता है और अंधकार से प्रकाश की यात्रा आरंभ होती है, तब मकर संक्रांति केवल तिथि परिवर्तन का संकेत नहीं देती, बल्कि भारतीय चेतना के नवजागरण का उद्घोष करती है। यह पर्व ऋतु, कृषि, आस्था और सामाजिक एकता का संगम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में मकर संक्रांति अनेक नामों और रूपों में मनाई जाती है, किंतु उसकी आत्मा एक ही रहती है। इन सभी रूपों को जीवंत बनाए रखने में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय, सशक्त और प्रेरणादायक रही है। आधुनिक युग की व्यस्तता के बावजूद नारी शक्ति इस पर्व को परंपरा और परिवर्तन के संतुलन के साथ आगे बढ़ा रही है।

मकर संक्रांति सूर्य उपासना का पर्व है, जो जीवन में सकारात्मकता, ऊर्जा और संतुलन का प्रतीक माना जाता है। यह वह समय है जब किसान नई फसल के आगमन का उत्सव मनाते हैं और समाज श्रम के सम्मान को स्वीकार करता है। महिलाओं के लिए यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि परिवार और समाज को जोड़ने का माध्यम है। वे घर की रसोई से लेकर सामुदायिक आयोजनों तक, हर स्तर पर इस पर्व की आत्मा को साकार करती हैं। उनकी सहभागिता से यह उत्सव भावनात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनता है।

उत्तर भारत में मकर संक्रांति लोहड़ी और माघी के रूप में मनाई जाती है। पंजाब और हरियाणा में महिलाएँ अग्नि के चारों ओर घूमकर तिल, गुड़, मूंगफली और रेवड़ी अर्पित करती हैं। लोकगीतों की मधुर ध्वनि और गिद्दा-भांगड़ा की लय से वातावरण उल्लासपूर्ण हो उठता है। नवविवाहित बहुओं को विशेष सम्मान दिया जाता है, जो उन्हें परिवार की परंपरा से जोड़ने का प्रतीक है। यहाँ महिलाएँ सामूहिक उत्सव की धुरी बनती हैं और नारी शक्ति तथा सामाजिक एकता का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

पश्चिम भारत में यह पर्व महाराष्ट्र में मकर संक्रांति के नाम से हल्दी-कुंकू और तिलगुल की परंपरा से जुड़ा है। विवाहित महिलाएँ एक-दूसरे को तिल-गुड़ की मिठाइयाँ भेंट करती हैं और मधुर वाणी का संदेश देती हैं। घर-घर में सौहार्द और अपनत्व का वातावरण बनता है। नवविवाहित महिलाएँ विशेष पूजा करती हैं और पारंपरिक वस्त्र धारण करती हैं। यह पर्व महिलाओं के बीच आपसी सहयोग, सम्मान और सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का सशक्त माध्यम बनता है।

मध्य भारत में मकर संक्रांति को सुकरात या सक्रात कहा जाता है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में महिलाएँ हल्दी-कुंकू की रस्म निभाती हैं, एक-दूसरे को आमंत्रित करती हैं और तिल-गुड़, खिचड़ी, लाई तथा लड्डुओं का आदान-प्रदान करती हैं। नदियों में स्नान, पूजा-अर्चना और दान-पुण्य की परंपरा सौभाग्य और पारिवारिक सुख की कामना से जुड़ी होती है। हाल के वर्षों में सामाजिक और सरकारी प्रयासों से यह पर्व महिला सशक्तीकरण और सामाजिक समरसता का प्रतीक भी बन रहा है।

गुजरात में मकर संक्रांति उत्तरायण के रूप में मनाई जाती है। रंग-बिरंगी पतंगों से भरा आकाश उल्लास, स्वतंत्रता और आशा का प्रतीक बन जाता है। महिलाएँ भी पूरे उत्साह से पतंगबाजी में भाग लेती हैं और परिवार के साथ इस आनंद को साझा करती हैं। राजस्थान में यह पर्व सुहाग और सौभाग्य से जुड़ा है। सुहागिन महिलाएँ सास को वायना देकर आशीर्वाद लेती हैं, अन्य विवाहित महिलाओं को वस्त्र और श्रृंगार सामग्री दान करती हैं तथा सामूहिक भोज का आयोजन करती हैं। ये परंपराएँ महिलाओं की सामाजिक भूमिका और पारिवारिक संतुलन को उजागर करती हैं।

दक्षिण भारत में यही पर्व पोंगल, मकर संक्रांति/सुग्गी हब्बा, पेड्डा पांडुगा के रूप में मनाया जाता है। तमिलनाडु में महिलाएँ घर के आँगन में रंगोली बनाती हैं, सूर्य और प्रकृति की पूजा करती हैं तथा पोंगल पकाकर समृद्धि की कामना करती हैं। कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में भी महिलाएँ पारंपरिक व्यंजन बनाकर पड़ोसियों के साथ साझा करती हैं। यहाँ यह पर्व प्रकृति और मानव के सह-अस्तित्व का उत्सव बन जाता है, जिसमें नारी की भूमिका सृजन और पोषण की प्रतीक के रूप में उभरती है।

आधुनिक युग में महिलाएँ इन परंपराओं को केवल निभा ही नहीं रहीं, बल्कि उन्हें नई चेतना से जोड़ रही हैं। वे स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन तैयार कर रही हैं, पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैला रही हैं और सामाजिक सेवा को पर्व से जोड़ रही हैं। सामुदायिक दान, जरूरतमंदों की सहायता और सांस्कृतिक शिक्षण के माध्यम से वे मकर संक्रांति को व्यापक सामाजिक अर्थ प्रदान कर रही हैं। संचार माध्यमों के उपयोग से महिलाएँ युवा पीढ़ी को पर्व के महत्व से जोड़ने में भी सफल हो रही हैं।

परंपराओं को अगली पीढ़ी तक जीवंत रूप में पहुँचाने में माताओं की भूमिका निस्संदेह अमूल्य और आधारभूत है। वे बच्चों को केवल उत्सव की बाहरी चमक या औपचारिक रस्में निभाना ही नहीं सिखातीं, बल्कि सूर्य, कृषि, श्रम और प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान तथा कृतज्ञता का संस्कार भी देती हैं। लोककथाओं की कथन-शैली, पारंपरिक गीतों की लय और पारिवारिक अनुष्ठानों की आत्मीयता बच्चों के मन में सांस्कृतिक स्मृति को स्थायी रूप से अंकित करती है। इसी निरंतर, स्नेहपूर्ण और अर्थपूर्ण शिक्षण के माध्यम से मकर संक्रांति मात्र वर्तमान का पर्व न रहकर भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सशक्त सांस्कृतिक पूँजी और पहचान बन जाती है।

मकर संक्रांति—चाहे वह लोहड़ी के उल्लास में प्रकट हो, माघी की आस्था में सिमटी हो, उत्तरायण की उमंग में उड़ती हो, पोंगल की समृद्धि में ढली हो या सक्रात की परंपरा में रची-बसी हो—हर नाम और हर रूप में भारतीय संस्कृति की एक ही आत्मा विद्यमान है। इस आत्मा को जीवंत और सशक्त बनाए रखने वाली सबसे मजबूत कड़ी महिलाएँ हैं। उनकी आस्था, श्रम और संवेदना से यह पर्व समय और पीढ़ियों की सीमाओं को पार करता है। सूर्य के उत्तरायण होने के साथ नारी शक्ति भी समाज को प्रकाश, एकता और आशा की सकारात्मक दिशा में आगे ले जाती है। यही मकर संक्रांति की अनुपम, अप्रतिम और शाश्वत महिमा है।

खामोश अपराध के खिलाफ आवाज़: मानव तस्करी जागरूकता दिवस

-सुनील कुमार महला

11 जनवरी को राष्ट्रीय मानव तस्करी विरोधी दिवस (नेशनल एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग डे) या राष्ट्रीय मानव तस्करी जागरूकता दिवस मनाया जाता है, जैसा कि मानव तस्करी आज दुनिया भर में एक गंभीर व बड़ी समस्या बनकर उभरी है।यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि तस्करी का मतलब सिर्फ और सिर्फ परिवहन से नहीं है। वास्तव में यह एक बहुत बड़ा भ्रम है कि तस्करी का मतलब व्यक्ति को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना है। असल में, तस्करी का मुख्य आधार शोषण है; पीड़ित अपने ही घर या शहर में भी तस्करी का शिकार हो सकता है। उल्लेखनीय है कि मानव तस्करी दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा संगठित अपराध है (नशीली दवाओं के बाद), जिससे हर साल लगभग 150 डॉलर बिलियन का अवैध लाभ कमाया जाता है। हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास और उत्पत्ति या शुरुआत की बात करें तो इस दिवस की आधिकारिक शुरुआत वर्ष 2007 में अमेरिका में हुई थी,जब अमेरिकी सीनेट ने 11 जनवरी को राष्ट्रीय मानव तस्करी जागरूकता दिवस के रूप में नामित करने का एक प्रस्ताव पारित किया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में इसे 'राष्ट्रीय मानव तस्करी जागरूकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। दरअसल, वर्ष 2010 में, राष्ट्रपति बराक ओबामा ने पूरे जनवरी को 'राष्ट्रीय दासता एवं मानव तस्करी रोकथाम माह' घोषित किया था, जिसके तहत यह दिवस जागरूकता फैलाने का कार्य करता है। हालांकि, इस दिवस को मनाने की शुरुआत अमेरिका से हुई थी, लेकिन आज यह एक वैश्विक आंदोलन बन चुका है।संयुक्त राष्ट्र द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार, किसी व्यक्ति को डराकर, बलपूर्वक या दोषपूर्ण तरीके से कोई कार्य करवाना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने या बंधक बनाकर रखने जैसे कृत्य तस्करी की श्रेणी में आते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि 11 जनवरी को अक्सर 'वियर ब्लू डे' के रूप में भी मनाया जाता है, जिसमें लोग नीले रंग के कपड़े पहनकर पीड़ितों के साथ एकजुटता दिखाते हैं। यहां गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र 30 जुलाई को 'मानव तस्करी के विरुद्ध विश्व दिवस' मनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो संयुक्त राष्ट्र ने 30 जुलाई को 'मानव तस्करी के विरुद्ध विश्व दिवस' (वर्ल्ड डे अगेंस्ट ट्रैफिकिंग इन पर्सन्स) घोषित किया है, जो वैश्विक स्तर पर इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करता है।मानव तस्करी के पीछे कारणों की यदि हम यहां पर बात करें तो इसके पीछे प्रमुख कारण क्रमश: गरीबी और अशिक्षा, बंधुआ मज़दूरी, देह व्यापार, सामाजिक असमानता, क्षेत्रीय लैंगिक असंतुलन, बेहतर जीवन की लालसा है। सामाजिक सुरक्षा की चिंता, महानगरों में घरेलू कामों के लिये लड़कियों की तस्करी तथा चाइल्ड पोर्नोग्राफी के लिये बच्चों की तस्करी भी मानव तस्करी के प्रमुख कारण हैं। हाल फिलहाल, क्या यह बहुत ही गंभीर और संवेदनशील नहीं है कि आज महिलाएँ और लड़कियाँ मानव तस्करी से सर्वाधिक पीड़ित हैं और इनमें से अधिकांश की तस्करी यौन शोषण के लिये की जाती है।वास्तव में, यह एक ऐसा अपराध है जिसमें लोगों को उनके शोषण के लिये खरीदा और बेचा जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि मानव तस्करी को रोकने के क्रम में यह दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य मानव तस्करी जैसी गंभीर सामाजिक बुराई के प्रति आम लोगों में जागरूकता बढ़ाना, पीड़ितों के अधिकारों की रक्षा करना तथा इस अपराध के विरुद्ध समाज, पीड़ितों के पुनर्वास के उपायों पर ध्यान केंद्रित करना तथा प्रशासन और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को मानव तस्करी के खिलाफ एकजुट करना है।सरल शब्दों में कहें तो यह दिवस मानव तस्करी (ह्यूमन ट्रैफिकिंग) के खिलाफ चेतना और जनजागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है। आज मानव तस्करी करके बच्चों को जबरन श्रम, यौन शोषण, बाल श्रम में धकेल दिया जाता है,जो बहुत ही दुखद है। पाठकों को बताता चलूं कि मानव तस्करी में लोगों को धोखे, बल, या जबरन तरीके से किसी अन्य स्थान पर ले जाकर जबर्दस्ती श्रम, यौन शोषण, अंगों की तस्करी या अन्य अनैतिक कामों के लिए मजबूर किया जाता है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि यह दिवस मानव तस्करी जैसे अपराध के गंभीर प्रभावों के बारे में लोगों को सचेत या जागरूक करता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि नेशनल ह्यूमन ट्रैफिकिंग अवेयरनेस डे की शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई थी, जहां 11 जनवरी को 'नेशनल स्लेवरी एंड ह्यूमन ट्रैफिकिंग प्रिवेंशन मंथ' के रूप में इसे घोषित किया गया था और इसके बाद यह दिवस हर साल 11 जनवरी को मानव तस्करी के खिलाफ जागरूकता के रूप में विश्वभर में मनाया जाने लगा। हमारे देश में भी इस दिवस को जागरूकता दिवस के रूप में मनाया जाकर इस दिन अनेक सामाजिक, शैक्षिक और प्रशासनिक कार्यक्रम (सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा) आयोजित किये जाते हैं। वैश्विक परिप्रेक्ष्य की बात करें तो आज दुनिया भर में लगभग 30 मिलियन लोग आधुनिक गुलामी/मानव तस्करी की शिकार हैं। भारत से सम्बंधित आंकड़ों की यदि हम यहां पर बात करें तो हमारे देश में साल 2018—2022 के दौरान लगभग 10,655 मानव तस्करी मामले दर्ज किए गए थे। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत में लगभग 6,036 पीड़ितों की पहचान हुई, जिनमें से 2,878 बच्चे शामिल थे।इनमें 1,059 लड़कियाँ थीं, जो बाल तस्करी का हिस्सा थी।एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार बिहार में पिछले छह महीनों में 100 से अधिक लड़कियों के लापता होने के मामले राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तक पहुंचे हैं, जो मानव तस्करी गिरोह की संभावित सक्रियता को दर्शाते हैं।इसी प्रकार से आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर झारखंड से आए 12 बच्चों को संभावित मानव तस्करी से बचाया गया था। भारत में स्थिति की बात करें तो 'ग्लोबल स्लेवरी इंडेक्स 2023' के अनुसार, भारत में लगभग 1.1 करोड़ लोग आधुनिक गुलामी की स्थितियों में रह रहे हैं। भारत के राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, तस्करी के मामलों में जबरन श्रम और यौन शोषण सबसे प्रमुख कारण हैं।एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार दुनिया भर में लगभग 5 करोड़ लोग आधुनिक गुलामी के शिकार हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, तस्करी के हर 4 पीड़ितों में से 1 बच्चा होता है। गौरतलब है कि ग्लोबल स्लेवरी इंडेक्स 2025 के अनुसार दुनिया भर में आधुनिक दासता (मॉडर्न स्लेवरी) एक गंभीर वैश्विक समस्या बनी हुई है। इस इंडेक्स को वॉक फ्री फाउंडेशन द्वारा तैयार किया जाता है, जिसमें जबरन श्रम, मानव तस्करी, ऋण-बंधन, जबरन विवाह और यौन शोषण जैसे शोषण के रूपों को शामिल किया जाता है। 2025 के विश्लेषण में अनुमान है कि विश्व में लगभग 5 करोड़ (50 मिलियन) लोग किसी न किसी रूप में आधुनिक दासता का शिकार हैं। इसमें सबसे अधिक दर उत्तर कोरिया, इरीट्रिया और मॉरिटानिया जैसे देशों में दर्ज की गई है, जबकि दक्षिण सूडान और सोमालिया जैसे देश सबसे अधिक जोखिम वाले देशों में शामिल हैं। भारत की बात करें तो जनसंख्या अधिक होने के कारण हमारे यहां जबरन श्रम, ऋण-बंधुआ मजदूरी और मानव तस्करी के मामले देखने को मिलते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यह इंडेक्स सरकारों की नीतियों, कानूनों और पीड़ितों के संरक्षण प्रयासों का भी मूल्यांकन करता है और वैश्विक स्तर पर मानव तस्करी व आधुनिक दासता के खिलाफ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर देता है। बहरहाल, यह भी एक कड़वा तथ्य है कि तस्करी में पहचाने गए पीड़ितों में से लगभग 70% महिलाएं और लड़कियां होती हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2025 के लिए इस दिवस की थीम-'कड़ियों को जोड़ना, समुदायों को मजबूत करना, तस्करी को रोकना' रखी गई थी। वास्तव में यह थीम इस बात पर जोर देती है कि मानव तस्करी को केवल कानून से नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग के सहयोग और जागरूकता से ही खत्म किया जा सकता है। वहीं पर इस साल यानी कि वर्ष 2026 के लिए ह्यूमन ट्रैफिकिंग प्रिवेंशन मंथ (जनवरी) की थीम-'स्ट्रोंगर कनेक्शन्स,स्ट्रोंगर फ्यूचर्स' यानी कि-'ज्यादा मजबूत सम्बन्ध, बेहतर भविष्य।'वास्तव में,इसका फोकस इस बात पर है कि घर, समुदाय और कार्यस्थल में मजबूत सम्बन्ध तस्करी के जोखिम को कम करने में कैसे मदद करते हैं। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देता चलूं कि मानव तस्करी के विरुद्ध विश्व दिवस 30 जुलाई 2025 के लिए इस अंतरराष्ट्रीय दिवस की थीम 'मानव तस्करी एक संगठित अपराध है - शोषण समाप्त करें' (ह्यूमन ट्रैफिकिंग इज आर्गेनाइज्ड क्राइम-एंड द एक्सप्लोइटेशन) रखी गई थी। अंत में यही कहूंगा कि हमारे देश में में मानव तस्करी को रोकने के लिए सरकार द्वारा कई महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। अनैतिक देह व्यापार (निवारण) अधिनियम, 1956 (आइटीपीए), बाल श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, पोस्को अधिनियम तथा भारतीय न्याय संहिता में मानव तस्करी से जुड़े कठोर प्रावधान लागू किए गए हैं। केंद्र सरकार ने एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट (एएचटीयू) की स्थापना कर राज्यों में विशेष जांच और बचाव तंत्र को मजबूत किया है। इसके साथ ही उज्ज्वला योजना के तहत पीड़ितों के पुनर्वास, संरक्षण और कौशल विकास पर ध्यान दिया जा रहा है। ट्रैकचाइल्ड पोर्टल, 1098 चाइल्डलाइन, और अंतर-राज्यीय व अंतरराष्ट्रीय समन्वय के माध्यम से गुमशुदा बच्चों की पहचान व त्वरित बचाव सुनिश्चित किया जाता है। जागरूकता अभियानों, एनजीओ की भागीदारी और डिजिटल निगरानी के माध्यम से भारत मानव तस्करी की रोकथाम की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 23—24 मानव तस्करी और जबरन श्रम को रोकते हैं तथा भारतीय संविधान के अनुच्छेद 23 (1) और अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम, 1956 के तहत भारत में मानव तस्करी प्रतिबंधित है।आपराधिक कानूनों (आइपीसी धारा 370 और 370ए) के अंतर्गत मानव तस्करी को कड़े दंड के साथ दंडनीय अपराध माना गया है।मानव तस्करी को रोका जा सकता है। वास्तव में आज मानव तस्करी को रोकने के लिए कानूनी, सामाजिक और जागरूकता आधारित प्रयासों की आवश्यकता है।कड़े कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन और दोषियों को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए।गरीबी, बेरोज़गारी और अशिक्षा को कम कर लोगों को सुरक्षित आजीविका के अवसर उपलब्ध कराना बहुत ही जरूरी व आवश्यक है। जन-जागरूकता अभियान, खासकर महिलाओं और बच्चों को उनके अधिकारों के प्रति सजग बनाते हैं। सरकार, पुलिस, स्वयंसेवी संगठन और समाज के सहयोग से ही मानव तस्करी पर प्रभावी रोक संभव है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

विश्लेषण : प्रधानमंत्री की चुप्पी: विवशता, दबाव, डर, राजनीति या रणनीति ?

घनश्याम बादल

हवा में इन दिनों एक सवाल सबसे ज़्यादा उद्वेलन पैदा कर रहा है कि बहुत बोलने वाले भारत के प्रधानमंत्री इन दिनों इतने चुप क्यों हैं? क्यों इतने सारे घटनाक्रमों एवं विवादों पर उन्होंने एक लंबी चुप्पी खींच रखी है?

सवाल सीधा भोला-सा नहीं, तीखा है और शायद इसी वज़ह से चुभने वाला भी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक के बाद एक बड़े घटनाक्रम जैसे वेनेजुएला में अमेरिकी दख़ल, वहां के राष्ट्रपति का जबरदस्ती अपहरण, बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले और उनकी हत्या, बांग्लादेश के खिलाड़ी मुस्तफिजुर रहमान पर आईपीएल खेलने पर बैन, डोनाल्ड ट्रंप की 500% तक टैरिफ की धमकी और रूस से तेल खरीद को लेकर भारत-अमेरिका का टकराव और बांग्लादेश का लगातार भारत को आंखें दिखाना जैसे घटनाक्रम घटित हो रहे हैं मगर इन सबके बीच भारत सरकार, खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सार्वजनिक चुप्पी एक बड़ा सवाल खड़ा कर रही है। यह चुप्पी विपक्ष को बोलने का मौका दे रही है और विरोधियों को बल.

नरेंद्र मोदी को जानने वाले यह अच्छी तरह समझते हैं कि यह चुप्पी बेपरवाही, डर, या विवशता नहीं बल्कि एक सोची-समझी राजनीतिक-रणनीतिक मुद्रा है। इसके पीछे के कारण और संभावित असर दोनों को ठंडे दिमाग से समझना ज़रूरी है।

वेनेजुएला में अमेरिकी हस्तक्षेप, बांग्लादेश में हिंदुओं की लगातार हत्याएँ, डोनाल्ड ट्रंप द्वारा 500 प्रतिशत तक टैरिफ की धमकी और रूस से तेल खरीद को लेकर भारत पर बढ़ता अमेरिकी दबाव पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सार्वजनिक चुप्पी किसी खास रणनीति का हिस्सा है।

भले ही गैर जानकार या विरोधियों को लगे कि मोदी मौन है लेकिन अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिकार खूब समझ रहे हैं यह है 'नमो का मौन' नहीं अपितु उनकी चुप्पी का कहीं अधिक मुखर होकर बोलना है।

भारत की विदेश नीति लंबे समय से "रणनीतिक स्वायत्तता" के सिद्धांत पर टिकी रही है। लेकिन हालिया घटनाक्रम बताते हैं कि यह स्वायत्तता अब संकोच में बदलती दिख रही है।

अमेरिका अंतरराष्ट्रीय कानून को दरकिनार कर वेनेजुएला में कार्रवाई करता है -भारत मौन।

पड़ोसी बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं की हत्या होती है-भारत औपचारिक चिंता तक सीमित। भारत के खिलाफ अभूतपूर्व टैरिफ धमकियाँ दी जाती हैं-कोई सार्वजनिक प्रतिवाद नहीं। तो क्या यह चुप्पी किसी डर या दबाव की परिणीति है?

तो इसका उत्तर है 'नहीं', यह डर या मज़बूरी नहीं बल्कि टकराव से बचने की नीति का संकेत है।

बेशक, अमेरिकी दबाव ऐसी वास्तविकता है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता और यह भी स्वीकार करना होगा कि भारत आज भी वैश्विक आर्थिक ढांचे में पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है।

विदेशी पूंजी, डॉलर आधारित वित्तीय प्रणाली, उन्नत तकनीक और रक्षा सहयोग,

इन सब पर अमेरिका का प्रभाव साफ है।

ऐसे में भारत के लिए खुला विरोध महँगा पड़ सकता है लेकिन यहीं से एक असहज सच्चाई सामने आती है। क्या भारत की विदेश नीति अब दबाव-प्रबंधन तक सिमट कर रह गई है?

अगर एक उभरती महाशक्ति खुले दबाव में भी अपनी असहमति दर्ज नहीं करा सकती तो उसकी शक्ति केवल आंकड़ों तक सीमित रह जाती है।

रूस से तेल खरीद भारत की मजबूरी है, इसमें कोई संदेह नहीं लेकिन अमेरिका द्वारा इसे राजनीतिक मुद्दा बनाना यह दिखाता है कि भारत की आर्थिक आवश्यकताओं को भी अब भू-राजनीतिक अनुशासन में बांधने की कोशिश हो रही है और भारत चुप इसलिए है क्योंकि उसे ऊर्जा चाहिए. उसे महंगाई काबू में रखनी है ।

क्या टीएमसी-ईडी विवाद का पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव पर प्रभाव पड़ेगा?

कमलेश पांडेय

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 के दृष्टिगत राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और प्रमुख विपक्षी पार्टी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जो केंद्र में सत्तारूढ़ है, के बीच जिस तरह की सियासी जंग छिड़ी हुई है; केंद्र व राज्य की प्रशासनिक मशीनरियों के दुरूपयोग की बातें सुनी जा रही हैं, उससे साफ है कि दिल्ली की तत्कालीन सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) के मुखिया अरविंद केजरीवाल की ही तरह पश्चिम बंगाल की मौजूदा मुखिया ममता बनर्जी को उनके पद से हटाकर ही भाजपा रहेगी।

यही वजह है कि भाजपा ने मशहूर चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर को शह प्रदान करने वाली कंपनी आई-पैक की नकेल कसने का निश्चय किया है और अपनी प्रशासनिक प्रभाव वाली मिशनरी ईडी को उसके पीछे लगा दिया है, जैसा कि आरोपी लगते आये हैं। तभी तो टीएमसी और ईडी के बीच कोयला तस्करी से जुड़े आई-पैक छापों पर विवाद तेज हो गया है. जहां ममता बनर्जी ने केंद्रीय एजेंसी पर चुनावी डेटा चोरी का आरोप लगाया है वहीं, ईडी का दावा है कि ममता ने जांच में बाधा डाली और महत्वपूर्ण दस्तावेज ले लिए। देखा जाए तो यह विवाद 2026 बंगाल विधानसभा चुनाव से ठीक पहले केंद्र-राज्य टकराव को उभार रहा है।

बताते चलें कि ईडी ने 7-8 जनवरी 2026 को कोलकाता और दिल्ली में आई-पैक (टीएमसी की चुनावी सलाहकार फर्म) के 10 ठिकानों पर छापे मारे, जो कोयला घोटाले से जुड़े हैं। इससे विचलित हुईं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी खुद ही छापे स्थल पहुंचीं और अपनी पार्टी की जरूरत वाली दस्तावेज बचाकर ले गईं, जिसे ईडी ने बाधा बताते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की। वहीं, टीएमसी ने भी कोर्ट में ईडी पर राजनीतिक डेटा चुराने का केस ठोका, जबकि कोलकाता पुलिस ने ईडी के खिलाफ दो मामले दर्ज किए।

इस प्रकार उक्त विवाद का राजनीतिक प्रभाव स्पष्ट है। कुल मिलाकर यह विवाद टीएमसी को 'केंद्र की साजिश' का शिकार दिखाने में मदद कर रहा है, जो उसके वोट बैंक को एकजुट कर सकता है जबकि भाजपा इसे भ्रष्टाचार उजागर करने का मौका मान रही है, खासकर पुराने घोटालों (स्कूल जॉब्स, पीडीएस) के बाद। वहीं अन्य विपक्षी दल जैसे कांग्रेस और आप टीएमसी का समर्थन कर रहे हैं, जबकि सीपीआई(एम) इसे स्टेज्ड ड्रामा बता रहा है।

इससे पुनः यह सवाल उठता है कि आखिर चुनाव से ठीक पहले शुरू हुआ यह राजनीतिक और प्रशासनिक ड्रामा किसके पक्ष में जाएगा? शायद टीएमसी के पक्ष में, क्योंकि इस विवाद से भी ममता की 'संघर्षरत नेता' की छवि मजबूत हो रही है। वहीं, जिस तरह से नई दिल्ली में टीएमसी सांसदों के प्रदर्शन से इंडिया गठबंधन को मजबूती मिली है, उससे साफ है कि चुनावी डेटा चोरी का नैरेटिव मुस्लिम-दलित वोटों को पुनः लोकसभा चुनाव 2024 की तरह ही एकजुट कर सकता है। क्योंकि टीएमसी को वोट एकीकरण में मदद मिलेगी, उसकी केंद्र-विरोधी नैरेटिव मजबूत होगी। यह बात दीगर है कि यदि कोर्ट में हार मिली तो इससे उनकी छवि को धक्का पहुंचेगा।

हालांकि, भाजपा के पक्ष में सकारात्मक बात यह है कि यदि ईडी कोयला घोटाले में ठोस सबूत लाती है, तो टीएमसी नेताओं (अभिषेक बनर्जी से जुड़े केस) पर दबाव बनेगा और भाजपा 'विकास vs भ्रष्टाचार' पर हमला बोल सकेगी। वहीं, कोर्ट फैसला भाजपा को नैतिक ऊंचाई दे सकता है। यदि ऐसा हुआ तो, जैसा कि दिल्ली का अनुभव चुगली कर रहा है कि केजरीवाल के बाद ममता का सियासी शिकार करके ही भाजपा दम लेगी क्योंकि भाजपा भ्रष्टाचार के मुद्दे पर एक्सपोजर पा जाएगी और राज्य सरकार पर दबाव बनाने में सफल होगी, जबकि जोखिम यह है कि उसपर एजेंसी दुरुपयोग का आरोप पुष्ट होगा।

झारखंड में अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन मॉडल का अवलोकन किया अंतरराष्ट्रीय संस्थान

झारखण्ड में अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन एप्रोच से सशक्त हो रहे अति-वंचित परिवार, अंतरराष्ट्रीय दल ने इसे सराहा मॉडल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, अमेरिका एवं भारत के एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने 8 एवं 9 जनवरी 2026 को पूर्वी सिंहभूम जिले के डुमरिया और मुसाबनी प्रखंडों का भ्रमण किया। प्रतिनिधिमंडल में न्यूयॉर्क स्थित लाईवलीहुड इम्पैक्ट फंड की सीनियर एडवाइज़र सुश्री हाइडी मैकएनैली, द नज इंस्टीट्यूट के सीईओ अतुल सतीजा, सीडीओ देवदास तथा सीनियर डायरेक्टर जॉन पॉल शामिल थे। इस दौरे का उद्देश्य अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन एप्रोच के अंतर्गत कार्यक्रमों के क्रियान्वयन एवं उनके जमीनी प्रभाव को समझना था।

प्रतिनिधिमंडल ने झारखण्ड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा द नज इंस्टीट्यूट के सहयोग से अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन एप्रोच के माध्यम से संचालित अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन एप्रोच एवं फूलो-झानो आशीर्वाद अभियान कार्यक्रमों का अवलोकन किया। दल ने अत्यंत कमजोर परिवारों, विशेषकर आदिम जनजातीय समूहों, तथा सामुदायिक परिवर्तनकर्ताओं के जीवन में आए सकारात्मक और स्थायी बदलावों को प्रत्यक्ष रूप से देखा और इस पहल की सराहना की।

शुक्रवार को प्रतिनिधिमंडल की जेएसएलपीएस के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी अनन्य मित्तल के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में सुश्री हाइडी मैकएनैली ने जेएसएलपीएस द्वारा अपनाई गई नवाचारपूर्ण रणनीतियों की प्रशंसा की और इन सफल अनुभवों को वैश्विक स्तर पर विस्तार देने की संभावना पर प्रसन्नता व्यक्त की।

इस अवसर पर सीईओ, जेएसएलपीएस ने कहा कि अल्ट्रा पुअर ग्रेजुएशन एप्रोच एवं समावेशी आजीविका योजना परियोजनाओं के अंतर्गत अपनाई गई साझेदारी आधारित एवं लक्षित कार्यप्रणालियों के माध्यम से राज्य के पीवीटीजी एवं अन्य कमजोर समुदायों के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन संभव हो पाया है। उन्होंने भविष्य में भी इस सहयोग को सुदृढ़ करते हुए कार्यक्रमों के विस्तार की प्रतिबद्धता दोहराई।

राउरकेला में इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान प्लेन क्रैश हो गया

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : दक्षिण राउरकेला के कंसार इलाके में शनिवार को एक छोटा विमान हादसा हुआ। राउरकेला रघुनाथपाली में प्लेन एक्सीडेंट। इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान कंसार इलाके में प्लेन क्रैश हो गया। पायलट समेत 6 लोग गंभीर रूप से घायल हैं। सभी गंभीर रूप से घायलों को बचा लिया गया है और अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रघुनाथपाली पुलिस स्टेशन एक्सीडेंट की जगह पर पहुंच गया है।इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान प्लेन क्रैश हो गया। इस वजह से प्लेन पूरी तरह से तबाह हो गया। बताया जा रहा है कि इस हादसे में पायलट समेत 6 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से गंभीर रूप से घायलों को बचाया गया और इलाज के लिए राउरकेला के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर विभूति भूषण जेना ने इस बारे में जानकारी दी है। प्लेन 9-सीटर था। यह राउरकेला से भुवनेश्वर आ रहा था। 10 km की उड़ान के बाद यह हादसा हुआ। मिनिस्टर ने कहा कि हादसे की वजह का पता लगाने के लिए जांच की जाएगी। हादसे में घायलों में कैप्टन नवीन खडेंगा और कैप्टन तुरान श्रीवास्तव हैं। चार यात्रियों में सुशांत बिस्वाल, अनीता साहू, सुनील अग्रवाल और सबिता अग्रवाल हैं। हालांकि, प्लेन किन हालात में क्रैश हुआ, इसका पता नहीं चल पाया है।

मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने एक्स-रे पोस्ट करके दुख जताया है। उन्होंने लिखा, राउरकेला में हुए प्लेन क्रैश के बारे में जानकर मुझे बहुत दुख हुआ। यह सुनकर सुकून मिला कि भगवान जगन्नाथ की कृपा से सभी यात्री सुरक्षित हैं। मैंने निर्देश दिया है कि इस घटना में घायल लोगों को तुरंत सबसे अच्छी मेडिकल केयर दी जाए। मैं खुद हालात पर नज़र रख रहा हूँ।

झारखंड का बजट निर्माण में जनभागिदारी, "आबुआ दिसुम बजट" नाम से ओनलाइन पोर्टल का होगा आरंभ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड सरकार ने आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए जनभागीदारी पर जोर दिया है. इसी क्रम में शुक्रवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड मंत्रालय में "अबुआ दिशोम बजट" के लिए विशेष रूप से तैयार ऑनलाइन पोर्टल और मोबाइल एप का औपचारिक शुभारंभ किया. इसके माध्यम से राज्य के नागरिक सीधे बजट से जुड़े अपने विचार और सुझाव सरकार तक पहुंचा सकेंगे

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि किसी भी राज्य को सशक्त बनाने में जनता की भागीदारी की भूमिका अहम होती है. सरकार की मंशा है कि बजट केवल कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि आम लोगों की जरूरतों और अपेक्षाओं को भी प्रतिबिंबित करे. इसी सोच के तहत समावेशी और जनोन्मुखी बजट तैयार करने की दिशा में यह पहल की गई है.

वित्त विभाग द्वारा विकसित इस पोर्टल और मोबाइल एप के अलावा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, फेसबुक और एक्स के जरिए भी लोग 17 जनवरी 2026 तक अपने सुझाव साझा कर सकते हैं. सरकार का मानना है कि नागरिकों से प्राप्त सुझाव राज्य की आर्थिक नीतियों को अधिक प्रभावी और मजबूत बनाने में सहायक होंगे. इस प्रक्रिया में बेहतर सुझाव देने वाले तीन लोगों को सम्मानित करने का भी निर्णय लिया गया है.कार्यक्रम के दौरान वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर भी मौजूद रहे. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि आने वाले वर्षों में बजट के लिए सुझाव लेने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी जाए. उन्होंने कहा कि अगले वित्तीय वर्ष से यह पहल 15 नवंबर से प्रारंभ की जाए, ताकि राज्य के दूर-दराज और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित हो सके और बजट निर्माण अधिक व्यापक व संतुलित रूप ले सके।

महम्मद मोकिम की बड़ी घोषणा, मार्च में एक नई राजनीतिक पार्टी का गठन करेंगे

मनोरंजन शासमल स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : नई पार्टी बनाने को लेकर महम्मद मोकिम का बड़ा ऐलान। मार्च के आखिर तक नई पार्टी। मोकिम ने कहा, नई पार्टी के लिए समीकरण बन रहे हैं, पूरे राज्य से राय ली जा रही है। बड़े इवेंट से पहले बहुत सलाह की ज़रूरत है। हम अलग-अलग स्टेज में आगे बढ़ रहे हैं, मार्च के आखिर तक इंतज़ाम हो जाने चाहिए।एक नई पॉलिटिकल पार्टी की नींव रखी जाएगी।

मोकिम ने आगे कहा, 12 तारीख को, कोस्टल ओडिशा के कई यंग लीडर एक यूथ कॉन्फ्रेंस में इकट्ठा होंगे। हम ओडिशा के भविष्य पर बात करेंगे। बाद में, एक विमेंस कॉन्फ्रेंस होगी, हम किसानों से मिलेंगे। हम एजेंडा तैयार करेंगे और हमारे क्या काम होने चाहिए, इस पर बात करेंगे और आगे आएंगे।हाल ही में जानकी बल्लभ पटनायक की जयंती पर मोहम्मद मोकिम ने एक नई रीजनल पार्टी की झलक दिखाई। राज्य में कई युवा नेताओं को एक बड़े मौके की ज़रूरत है। इसलिए, बुद्धिजीवियों से बातचीत चल रही है। कौन सी जगह किसके लिए कभी खाली नहीं होती। कोई न कोई किसी की कमी पूरी करता है। राज्य में कई उभरते हुए युवा हैं जिन्हें बस एक मौके की ज़रूरत है। मोकिम ने कहा कि राज्य में BJP सरकार और BJD की मौजूदा स्थिति को देखते हुए एक विकल्प की ज़रूरत है। कटक कांग्रेस और ज़िले समेत राज्य भर के कई माइनॉरिटी नेता मोकिम के पक्ष में हैं। वोट की राजनीति में माइनॉरिटी वोट कांग्रेस के लिए एक बड़ी संपत्ति हैं, लेकिन राजनीतिक जानकारों ने कहा है कि मोकिम को निकालने से पार्टी को नुकसान होगा। हालांकि, मोकिम के नई पार्टी बनाने के ऐलान के बाद राज्य की राजनीति में गरमागरम बहस छिड़ गई है। मोकिम ने कहा कि हालांकि उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया गया था, लेकिन उन्होंने कांग्रेस के सिद्धांतों और आदर्शों को अपनाकर अपना राजनीतिक करियर शुरू किया है और कांग्रेस को नहीं भूलेंगे। इसलिए चर्चा है कि मोकिम नई पार्टी का नाम ओडिशा, कांग्रेस, लोग और जन जैसे शब्दों को मिलाकर रख सकते हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सिंह ने कहा कि आजादी के बाद सैकड़ों राजनीतिक दल बने हैं। लेकिन वे कितने सफल होंगे, यह तो समय ही बताएगा। एक लोकतांत्रिक देश में कोई भी अपनी इच्छा अनुसार राजनीतिक दल बना सकता है। इच्छुक कोई भी व्यक्ति दल बना सकता है। कांग्रेस की आंतरिक संरचना अपवाद है। वे कांग्रेस के असंतुष्ट नेतृत्व के खिलाफ दल बना रहे हैं। इसका भाजपा पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

जैसलमेर, सांवरियां सेठ चितौड़गढ़, भवाल माताजी मेड़ता,उज्जैन महाकाल, बालोतरा, नाकोड़ा भेरूजी में विभिन्न धार्मिक स्थानों के दर्शन कर उपस्थित सीरवी समाज बालाजी नगर वडेर अध्यक्ष जयराम पंवार, घेवरचन्द्र चोयल, बाबूलाल मुलैवा, गेनाराम काग, रुघाराम सोलंकी, हेमाराम बर्फा व अन्य

रांची जिला मे इंस्पेक्टर श्याम नंदन 10 हजार रूपये घुस लेते एसीबी के जाल में फंसा

झारखंड में पुलिस - परिवहन बल्ले -बल्ले। राजधानी मे वर्ष का प्रथम मामला ।

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) रांची ने बेड़ो थाना के एक सब इंस्पेक्टर (एसआई) को 10 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है. एसीबी ने इस संबंध में एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर जानकारी दी.

एसीबी रांची को एक परिवादी ने पुलिस अधिकारी पर शिकायत दर्ज कराई थी. शिकायत के अनुसार, बेड़ो थाना के पुलिस अवर निरीक्षक श्याम नंदन पासवान ने परिवादी के टाटा एलपीटी 14 चक्का ट्रक की यांत्रिक जांच के लिए एमवीआई को प्रतिवेदन भेजने के बदले 50 हजार रुपए की मांग की थी.

परिवादी रिश्वत देकर काम नहीं करना चाहते थे, लेकिन अभियुक्त श्याम नंदन पासवान लगातार फोन करके उन्हें थाने बुलाते रहे और पैसे की मांग करते रहे. इससे तंग आकर परिवादी ने भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो रांची से संपर्क किया और उचित कार्रवाई का अनुरोध किया.

एसीबी की टीम ने सत्यापन के दौरान रिश्वत मांगने की बात सही पाई. इसके बाद, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो रांची ने थाना कांड संख्या 01/26 दर्ज किया.

इसी क्रम में, सहायक अवर निरीक्षक श्याम नंदन पासवान को 10 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया. एसीबी ने उन्हें गिरफ्तार कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है.

भारत से जिनेवा तक आदिवासीयों का आवाज उठाने वाले के.सी. हेंब्रम की पत्नी को पहुंचाई गयी सहायता राशि

कोल्हान रक्षा संघ का नेक पहल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा, सिंहभूम की माटी मे आदिवासी समुदाय के लिए भारत से जिनेवा तक मामले को लेकर लड़ने वाले कोल्हान रक्षा संघ के संस्थापक कृष्ण चंद्र हेंब्रम की धर्मपत्नी को अपने वायदे अनुसार डीबार जोंकों ने मासिक सहायता राशि प्रदान की । कोल्हान रक्षा संघ के मौजूदा अध्यक्ष डिबार जोंकों अपनी टीम के साथ मागे पर्व पहले उनके गांव टेंनसारा जा पहुंचे । पश्चिमी सिंहभूम के बीहड़ जंगल स्थित टेनसारा में उनकी पत्नी बेलमती देवी से कुशल क्षेम जाना ।

इस अवसर पर कोल्हान रक्षा संघ द्वारा पूर्व में किए गए वादे के अनुरूप मासिक आर्थिक सहायता प्रदान कर अपने सामाजिक दायित्व और संवेदनशीलता का संघ ने परिचय दिया गया। संघ ने स्पष्ट किया कि स्व. के.सी. हेंब्रम के योगदान को सदैव स्मरण रखते हुए उनके परिवार के साथ संगठन निरंतर खड़ा रहेगा। इस प्रतिनिधि मंडल में कोल्हान रक्षा संघ के माननीय अध्यक्ष डिबार जोंको, नुनाराम माझी, मानसिंह हेंब्रम, जय सिंह हेंब्रम, चंद्र मोहन मुर्मू, मनसुख कुजूर, धनपति सरदार, मंगल सिंह लगोरी, सुश्री सुमित्रा जोंको, कृष्ण सिंह, रुद्र प्रताप नायक एवं रविंद्र मंडल टेनसारा पहुंचे थे।

कोल्हान रक्षा संघ का यह कदम समाज में सहयोग, संवेदना और एकजुटता की भावना को और अधिक सशक्त करता है।जो पश्चिमी सिंहभूम जैसे पीछे इलाके में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता

मकर परव पूर्व खरसावां में 261 लीटर अवैध विदेशी शराब बरामद, नरेश मंडल गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, मादक पदार्थों का खेती व उत्पादन उम्दा इलाका के रूप में उभर रहा खरसावां के हाडीं भंजा में उत्पाद विभाग द्वारा छापामारी अभियान में करीब ढाई सौ लीटर अवैध विदेशी शराब बरामद की गयी ।

उपायुक्त नितिश कुमार सिंह के जरिए कराई गयी छापामारी के दौरान खरसावां थानाहांडीं भंजा गांव के नरेश कुमार मंडल के आवास से 29 कार्टून अवैध विदेशी शराब बरामद की गई ।जिसकी कुल मात्रा 261 लीटर आंकी गई है। उक्त अवैध शराब कारोबारी को घटनास्थल से गिरफ्तार कर लिया गया है तथा उसके विरुद्ध अग्रतर उत्पाद अधिनियम के अंतर्गत सुसंगत धाराओं के तहत कार्रवाई की जा रही है।

उत्पाद अधीक्षक सौरभ तिवारी ने द्वारा बताया गया कि जिले में अवैध शराब के निर्माण, भंडारण एवं बिक्री पर प्रभावी रोकथाम हेतु आगे भी होगा । वैसे खरसावां में अनेक बड़े बड़े भट्टियां संचालित है ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023